चीन की लोककथाएं
दास और
नाग-कुमारी

दास और नाग-कुमारी

—चीन की लोककथाएं (भाग ४)

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

कथाक्रम

शतपक्षी पलंग

(हान जाति)

बहुत समय पहले एक निपुण बढ़ई था। उसने 33 वर्ष और 3 महीने में 999 पलग बनाए, पर स्वयं उसे किसी अच्छे पलंग पर सोने का एक भी अवसर नहीं मिल पाया था।

एक दिन उसने दृढ़ संकल्प किया कि चाहे उसे भूखों ही मर जाना पड़े वह किसी भी तरह इस जीवन में अपने लिए एक बढ़िया पलंग अवश्य बनाएगा। उसने बुजुर्गों से सुना था कि दक्षिण पहाड़ के अमलतास उपवन के उस पार एक हजारों फुट ऊंची सीधी चट्टान है। उस चट्टान पर एक सदाबहार जादुई पेड़ उगता है जिस पर लाल रत्न जैसे फूल खिले रहते हैं। यदि इस पेड़ की लकड़ी से एक पलंग बनाया जाय, तो वह एक अत्यन्त सुखदायक जादुई पलंग सिद्ध होगा। लेकिन यह पेड़ केवल अति साहसी, ईमानदार और मेहनती व्यक्ति को ही मिल सकता है।

बढ़ई ने निर्णय किया कि वह इस पेड़ को खोजने जाएगा और इससे अपने लिए एक सुखदायक पलंग बनाएगा। वह अपने साथ कुल्हाड़ा, आरी और रसद लेकर बादलों और कोहरों से घिरे दक्षिण पहाड़ की ओर चला गया।

वह जैसे-जैसे ऊपर चढ़ता, रास्ता कठिन से कठिनतर होता जाता था। पर वह नित्य प्रति पैर घिसटाता ऊपर चढ़ता रहा और एक चोटी के बाद दूसरी चोटी पार करता रहा। उसके जूते फट गए तो वह नंगे पांवों ही चढ़ता रहा ; पांवों में कांटे चुभ जाते तो वह उन्हें उखाड़कर फिर आगे चढ़ने लगता। जब कोई खड़ी चट्टान उसका रास्ता रोक देती तो वह जंगली लताओं का सहारा लेकर उसे पार कर लेता ; जब जगली लताओं से उसके हाथों में घाव हो जाते तो वह तुरन्त खून पोंछकर आगे

चढ़ना जारी रखता। कोई भी कठिनाई उसके जादुई पेड़ खोजने के इरादे को हिला नहीं सकी। आखिरकार एक दिन उसका भोजन समाप्त होने ही वाला था।

भूखा और थका-मांदा वह बैठ गया और उसने खाने के लिए अपना अंतिम बचा थोड़ा सा भोजन निकाला। पर उसने अभी अपना मुंह खोला ही था कि अचानक एक काली छाया फड़फड़ाकर उसके सामने से गुजर कर उड़ गई। उसने सिर उठाकर देखा कि एक छतरी जैसा बड़ा गिद्ध एक छोटे अमरपक्षी का पीछा कर रहा है जो उसकी पकड़ से बचने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। बढ़ई ने तुरंत ही अपना कुल्हाड़ा उठाकर गिद्ध की तरफ फेंक दिया और कुल्हाड़ा ठीक उसके पैर पर लग गया। गिद्ध ने शीघ्रतापूर्वक एक उछाल मारकर कुल्हाड़ा झकझोरा और ऊंचे आकाश में बीस-तीस फुट ऊपर उड़ गया।

छोटा अमरपक्षी भी घायल हो गया था। वह धरती पर उतरा और बढ़ई से बोला, "धन्यवाद, बढ़ई दादा। मुझे मौत से बचाने के लिए आपको अनेक धन्यवाद।"

इतना कहकर उसने थकान के कारण अपनी आंखें मूंद लीं। बढ़ई ने अपना अंतिम बचा भोजन उसे खिला दिया, कुछ जड़ी-बूटियां खोजकर उसके घावों पर लगा दीं और अपने कपड़े से एक टुकड़ा फाड़कर बांध दिया। इसी समय, बांस के डले जैसी एक बड़ी माता अमरपक्षी उड़कर छोटे अमरपक्षी के पास उतरी और अपने पंख फड़फड़ाकर उसे अपने सीने से लगाकर बार-बार उसका चुंबन करने लगी।

माता अमरपक्षी ने बढ़ई से कहा, "आपको धन्यवाद, आदरणीय बढ़ई! मैं आपका यह अच्छा काम सभी पक्षियों को बताऊंगी, ताकि यदि आप किसी कठिनाई में पड़ें, तो वे सब आपकी सहायता कर सकें।"

थोड़ी देर बाद माता अमरपक्षी छोटे अमरपक्षी को अपने साथ लेकर उड़ गई।

बढ़ई बहुत थका और भूखा था, पर वह खाने के लिए कोई भी चीज नहीं खोज सका। वह एक बड़े पेड़ के सहारे बैठ गया और अपनी आंखें मूंदकर विश्राम करने लगा।

धीरे-धीरे अंधेरा हो गया। बढ़ई भी धीमे-धीमे स्वप्नलोक में प्रवेश कर मीठी नींद में सो गया।

अगली सुबह, जब सूर्य की किरणें पेड़ के पत्तों के बीच से होकर उसके चेहरे पर पड़ीं तो वह जाग उठा। अपनी भूख बुझाने के लिए उसने कुछ जंगली फल खोजने चाहे। वह एक खड़ी चट्टान के नीचे आ पहुंचा। यहां उसे बहुत से पके लाल फल नजर आए। वह फल तोड़ने ही वाला था कि अचानक मुट्ठी जितनी बड़ी एक डांस सीधे उसकी ओर लपक आई। सतर्क न होने के कारण वह मुसीबत में फस ही जाने वाला था कि

तभी आकाश से एक बड़ी अबाबील नीचे उतर आई और उसने एक ही निवाले में सांस को निगल लिया।

बढ़ई ने कहा, "दयालु अबाबील, आपको बहुत धन्यवाद !" अबाबील चहका, "चींचीं . . . चींचीं, आप स्वयं अपने को ही धन्यवाद दें ! आपने हमारे प्यारे छोटे से अमरपक्षी की जान बचा ली है और आप जादुई पलंग बनाने के लिए जादुई पेड़ की तलाश कर रहे हैं।" इतना कहकर वह उड़ गई।

फल खाने के बाद बढ़ई फिर आगे चलने लगा। चलते-चलते वह एक ऐसी जगह आ पहुंचा जहां क्षितिज तक फैले मनुष्य जितने लम्बे नरकट और झाड़-झंखाड़ उगे हुए थे और जहां चलने के लिए कोई मार्ग नहीं था। पर जादुई पेड़ खोजने के लिए उसने इस जगह को पार करने का पक्का इरादा कर लिया। नरकटों और झाड़-झंखाड़ में रास्ता बनाकर बड़ी कठिनाई से वह आगे बढ़ ही रहा था कि अचानक किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी, "सावधान, बाघ आ रहा है, बाघ आ रहा है, सतर्क रहो !"

वह अभी सांस भी नहीं ले पाया था कि उसे एक सफेद मस्तक वाला बाघ अपनी तरफ आता दिखाई दिया। भाग निकलने का समय न होने के कारण उसे पास की झाड़ियों में घुस कर छिप जाना पड़ा। वह मजबूती से अपना कुल्हाड़ा पकड़कर बाघ से लड़ने को तैयार हो गया। बाघ उसके अधिकाधिक नजदीक आता चला जा रहा था और शीघ्र ही उसके निकट पहुंचने ही वाला था, तभी अचानक उसके सामने एक पर्दा गिर गया, जिस कारण बाघ उसे देखे बिना ही वहां से गुजर गया।

यह "पर्दा" वास्तव में एक मोर का खुला पंख था ! जब बढ़ई ने मोर के प्रति अपना आभार प्रकट किया, तो मोर बोला, "माननीय बढ़ई, मुझे धन्यवाद मत दीजिए ! आपने हमारे प्यारे छोटे अमरपक्षी की जान बचाई है और जादुई पलंग बनाने के लिए आप जादुई पेड़ की खोज कर रहे हैं। इसलिए आपको तो स्वयं अपने को ही धन्यवाद देना चाहिए।"

बढ़ई के दिल में प्रसन्नता की लहरें उठने लगीं। वह बहुत खुश था क्योंकि इतने पक्षी उसकी मदद कर रहे थे। वह फिर आगे बढ़ चला। मार्ग में जब उसे भूख लगती, वह जंगली फल तोड़ लेता, प्यास लगती तो वह पहाड़ी सोतों का पानी पी लेता था।

एक दिन वह एक ऐसे घने वन में जा पहुंचा जहां सूर्य की किरणें भी प्रवेश नहीं कर सकती थीं और वह रास्ता भटक गया। इस संकट काल में उसे एक नीलकंठ पक्षी की चहक सुनाई पड़ी, "चींचीं . . . चींचीं . . . अमलतास खोजने के लिए छतरी-

नुमा चीड़ों के पार जाओ!"

उसके जवाब देने से पहले ही नीलकण्ठ उड़ गया।

उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई, पर उसे किसी भी छतरीनुमा चीड़ की छाया नहीं दिखाई दी। उसे तलाशने के लिए वह पास के एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया। आखिरकार उसे सामने की सीधी चट्टान पर एक गगनचुंबी और हरा छतरीनुमा चीड़ खड़ा नजर आया। वह ऊंचे पहाड़ और सीधी चट्टान पार कर अंततः छतरीनुमा चीड़ के नीचे आ गया। मंद हवा के झोंकों में फूलों की सुगंधि उसकी नाक में आई। ओह! यह अमलतास के फूलों की सुगंधि है! स्पष्टतः अमलतास उपवन यहां से अधिक दूर नहीं है।

किन्तु बार-बार ढूंढ़ने पर भी उसे किसी अमलतास की छाया भी दिखाई नहीं दी। उसने देर तक अपनी तलाश जारी रखी, पर वह असफल रहा। निराश होकर वह दूसरी जगह में ढूंढ़ने जाने को तैयार हुआ ही था तभी मधुमक्खियों का एक झुंड उसके सामने उड़ आया और उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगा। उसने सोचा, "शायद ये मधुमक्खियां मुझे अमलतास उपवन में ले जाएंगी।" वह मधुमक्खियों के उड़ने की दिशा में चलता गया। आखिर, एक पहाड़ के उस पार उसने वह अमलतास उपवन ढूंढ़ ही लिया।

यह तो मानो फूलों का समुद्र ही था। हवा के झोंके से इसमें हल्के पीले फूलों की लहरें उठ-गिर रही थीं। मधुमक्खियां भनभनाते हुए फूलों का मधु बटोरने में व्यस्त हो रही थीं।

अमलतास उपवन पार कर उसने सिर उठाकर देखा कि एक लाल प्रकाश ने उसकी आंखों को चकाचौंध कर दिया। आहा! यह तो अवश्य उस जादुई पेड़ के लाल फूल ही होंगे। उसके जेड जैसे हरे पत्ते सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे। पहली नजर में उसे लगा मानो जादुई पेड़ समतल जमीन से सीधा उग आया है। लेकिन जब उसने निकट जाकर देखा, तो उसे पता चला कि पहले उसने सिर्फ पेड़ का ऊपरी हिस्सा ही देखा था, वास्तव में वह चट्टान के पार्श्व से निकलकर आकाश की ओर उगा हुआ था। चट्टानें सफेद बादलों से घिरी हुई थीं मानो सागर में लहरें उठ रही हों। बादलों के सागर में अनेक धुंधले पहाड़ी शिखर समुद्र में अनेक द्वीप से खड़े थे।

बढ़ई ने पास में ही मुट्ठी के व्यास वाला एक मोटा बेंत ढूंढ़ लिया और इसके एक सिरे को चट्टान के कगार पर उगे बड़े पेड़ पर और दूसरे को अपनी कमर में बांध लिया। इसके बाद वह कुल्हाड़ा और आरी अपनी पीठ पर लादकर चट्टान के पार्श्व पर उतर गया। ऐसा लगा जैसे वह धरती और आकाश के बीच झूल रहा हो।

वह बड़ी मुश्किल से जादुई पेड़ के तले पर पहुंच सका। उसने कुल्हाड़ा उठाकर उस पर एक वार किया। "सटाक" की प्रतिध्वनि जोर से पहाड़ी घाटी में गूंज उठी। इसी समय वह गिद्ध, जिसने छोटे अमरपक्षी का पीछा किया था, आवाज सुनकर उड़ आया। बढ़ई को देखते ही वह उस पर झपटा। पर फुर्तीले बढ़ई ने झट से कुल्हाड़ा फेंककर उसकी छाती पर वार किया। गिद्ध कुल्हाड़े के साथ चट्टान के नीचे गिर गया।

गिद्ध से निबटने के बाद बढ़ई आरी चलाने लगा। लेकिन इसी समय उसे निगले हुए डांस के बेटे-पोतों के एक बड़े झुंड द्वारा घेर लिया गया।

सहसा सैंकड़ों पक्षियों के झुंड के झुंड उड़ कर वहां आ गए। उन्होंने हमलावर डांसों को तितर-बितर कर दिया।

डांसों से निबटने के बाद वे सैंकड़ों पक्षी जादुई पेड़ के चारों तरफ चक्कर काटते हुए अपनी चोंच से उसकी जड़ों की मिट्टी खोदने लगे। इन पक्षियों में कठफोड़वा सबसे दक्ष था। वह अपनी लम्बी और कड़ी चोंच से वैसे ही मिट्टी खोद देता था, जैसे हम मनुष्य गैंती से मिट्टी खोदते हैं।

पक्षीगण व्यस्तता से अपना काम करते रहे। थोड़ी देर बाद जादुई पेड़ तिरछा होकर हिलने लगा, मानों एक चूहा झंझावात में डोल रहा हो। यह देखकर बढ़ई बहुत खुश हुआ। उसने अपने दोनों मेहनती हाथों से पेड़ का तना पकड़कर उसे नीचे की ओर ऐसे खींच लिया कि जादुई पेड़ धमाके से गिर पड़ा। इसी समय बड़ा अमरपक्षी, मयूर, अबाबील, नीलकण्ठ, कोयल, सफेद सारस और अन्य पक्षी जादुई पेड़ को अपनी चोंचों में दबाकर एक साथ आकाश की ओर उड़ गए। छोटे अमरपक्षी ने ऊंची आवाज में बढ़ई से कहा, "जल्दी से जादुई पेड़ पर सवार हो जाओ और आंखें मूंद लो! जमीन की ओर मत देखना, अपनी आंखें मत खोलना!"

छोटे अमरपक्षी की बातों पर विश्वास रख कर बढ़ई जादुई पेड़ पर सवार हो गया और उसने अपनी आंखें मूंद लीं। क्षण भर में उसे अपनी कमर में बधे बेंत की रस्सी टूटने की आवाज सुनाई दी और उसने अपनी शरीर को हल्का महसूस किया। वह नहीं जान पाया कि वह हवा में कब तक उड़ता रहा था। उसे तो केवल यही महसूस हो रहा था कि हवा प्रचण्ड रूप से उसके चेहरे पर प्रहार करती रही थी।

वह हवा में बहुत लम्बे समय तक उड़ता रहा। उसे अधिकाधिक ठंड लगने लगी। इसी समय पक्षियों के प्रहार से बचकर बढ़ई के वस्त्र में घुसकर जा छिपे एक डांस ने जोर से उसे डंक मारा। पीड़ा सहन न कर पाने से असावधानी से बढ़ई ने अपनी आंखें खोल दीं। इससे काम बिगड़ गया! उसने अपने को इतना ऊंचा उड़ता पाया

जहां से धरती देखने में धुंधली और अस्पष्ट हो गई थी। मारे डर के उसके शरीर से ठंडा पसीना बह निकला, उसका सिर चकरा गया और वह उलटकर नीचे गिर पड़ा। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाया हुआ था। वह धड़ाम से एक बड़ी नदी में गिर गया।

नदी की द्रुतगामी धारा उसे बहा ले गई और वह डूबने से बचने की भरसक चेष्टा करता रहा। जब तीसरी बार डूबने से बचकर वह पानी के ऊपर आया, तब वह मजबूती से सैंकड़ों पक्षियों द्वारा छोड़े गए जादुई पेड़ को पकड़कर जल के बहाव के साथ तैरने लगा।

पता नहीं कितना समय बीत गया। वह और जादुई पेड़ जल के बहाव के साथ तैरते हुए एक गहरे सरोवर में गिर गए। सरोवर में एक बूढ़ा मछुआ मछली पकड़ रहा था। उसने बढ़ई को बचा लिया और जादुई पेड़ को नाव के किनारे पर रस्सी से बांधकर तट पर खींच दिया। बढ़ई उसी नाव पर कुछ दिन रुका। जादुई पलग बनाने के लिए उसने घर लौटने की जिद की। बूढ़े मछुए ने जादुई पेड़ को नदी के किनारे तक पहुंचाने में उसकी मदद की। पलक झपकते ही बूढ़ा मछुआ एक जलकौए के रूप में बदल कर उड़ गया, और नाव भी नरकट के एक बड़े पत्ते में बदल गई।

बढ़ई चौंक उठा, पर फौरन ही वह सारी बात समझ गया। वह बोला, "जलकौए, आपको धन्यवाद!"

जलकौआ उड़ते हुए कांव कांव करता रहा, "धन्यवाद तो स्वय आपको ही हैं, बढ़ई दादा! आपने हमारे छोटे अमरपक्षी को बचाया और अपने प्राणों की चिन्ता न करके जादुई पलग बनाने के लिए जादुई पेड़ की तलाश की।" जलकौआ उड़ गया। बढ़ई पूरी शक्ति लगाकर जादुई पेड़ को घसीटते हुए अपने घर लौट गया।

उसने जादुई पलंग बनाने की तैयारियां कीं। पर पलंग कैसा बनाना चाहिए, इस प्रश्न पर वह दिन-रात सोचता-विचारता रहा। जब उसे स्मरण आया कि सैंकड़ों पक्षियों ने किस प्रकार उसकी सहायता की थी, तो उसने एक ऐसा पलंग बनाने का निर्णय किया जिस पर उन सैंकड़ों पक्षियों की आकृतियों को खोदा जाएगा और उस पलंग का नाम "शतपक्षी पलंग" रखा जाएगा।

वह अपनी सम्पूर्ण श्रेष्ठ दक्षतापूर्वक बड़ी सूक्ष्मता से प्रत्येक पक्षी की आकृति खोदने लगा। जिस चोंच की खुदाई पूरी हो जाती, वह गतिशील हो जाती, जिन पंखों की खुदाई पूरी हो जाती, वे फड़फड़ाने लगते, जिस पक्षी की खुदाई की जाती वह तुरंत ही जीवित हो जाता। बढ़ई दिन-रात काम करता रहा। जब उसे भूख लगती तो कुछ

ठंडा खाना खा लेता, और नींद आती तो वह सिर पर एक कटोरा ठंडा पानी डाल देता। तथापि उसका खाद्यान्न दिन-पर-दिन कम होता गया और अंत में वह दिन भी आ गया जब घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं रहा। इसी समय एक कोयल उड़ आई। उसने उसके सामने एक रक्तवर्णी बीज धरती पर डाल दिया और "कूहू-कूहू" करती उड़ गई। बढ़ई ने बीज उठा लिया। इतना सुन्दर बीज उसने कभी नहीं देखा था। उसने बीज को मिट्टी में बो दिया। आश्चर्यजनक बात यह हुई कि सहसा मिट्टी में एक गहरा हरा पौधा उग आया। पल भर में इस पौधे पर एक फूल खिल गया और फूल शीघ्रता-

पूर्वक पककर बड़े सेव जैसा लाल फल बन गया। बढ़ई ने लाल फल खा लिया और तबसे उसे फिर कभी भूख नहीं लगी।

999 दिन बाद "शतपक्षी पलंग" बन कर पूरा हो गया। वह रंग-बिरंगी चमक देता था जिससे सारा कमरा आलोकित हो गया था। पक्षियों में कुछ गा रहे थे और कुछ पंख फड़फड़ा रहे थे मानो वे उड़ने ही वाले हों।

इसके बाद से बढ़ई के घर में यह अनोखा पलंग देखने आए गांववासियों की भीड़ लगने लगी। "शतपक्षी पलंग" न केवल देखने में सुन्दर था बल्कि उसमें एक जादुई शक्ति भी थी। यदि उस पर अंधे लोग एक बार सो लेते तो उनकी आंखों में पुन: रोशनी आ जाती, रोगी एक बार बैठने पर शीघ्र ही पुन: स्वस्थ हो जाते, एक बार उससे सट जाने पर भूखे लोगों को ऐसा आराम महसूस होता जैसे उन्होंने अभी-अभी भरपेट खाना खाया हो और ठंड न सह सकने वाले लोग जब उस पर एक बार लेट जाते तो उनके सारे शरीर में तुरंत ही गर्मी भर जाती थी। "शतपक्षी पलंग" ने बहुत से बीमारों को चंगा कर दिया और बहुत से गरीबों को सर्दी और भूख से मुक्ति दिलवा दी। इस पलंग की बदौलत बढ़ई और अन्य सभी निर्धन ग्रामवासी सुखमय जीवन बिताने लगे।

लेकिन शीघ्र ही इस अनोखे पलंग का समाचार गांव के पूर्वी छोर पर रहने वाले मालिक वाङ और पश्चिमी छोर पर रहने वाले मालिक ली के कानों में भी पहुंच गया। इन दोनों ने यह पलंग हथिया लेना चाहा। एक दिन मालिक वाङ ने आदमी भेजकर बढ़ई से कहलाया कि तीन दिन में उसे वह पलंग मालिक वाङ के घर में पहुंचा देना पड़ेगा। दूसरे दिन, मालिक ली ने भी एक आदमी भेजकर कहलाया कि दो दिन बाद मालिक ली के आदमी पलग उठा ले जाने आएंगे।

बढ़ई और गांववासी बहुत क्रुद्ध हो गए। उन्होंने सोचा कि गरीबों के लिए इतना सुख ले आने वाला यह पलंग भारी कठिनाई और कठोर परिश्रम से बनाया गया है। भला यह कैसे हो सकता है कि उसे व्यर्थ में ही इन दोनों बदमाशों को दे दिया जाए? बढ़ई ने कहा, "चाहे मुझे मार दिया जाय, मैं उन्हें यह पलग कदापि नहीं दूंगा!"

रात में बढ़ई बार-बार करवटें बदलते हुए सो नहीं पाया। वह उनका प्रतिरोध करने के लिए उपाय सोचता रहा। अततः उसने एक उपाय सोच ही निकाला। दूसरे दिन सुबह, वह मालिक वाङ के घर गया और बोला, "मालिक ली आज पलग लेने आएगा, बेहतर है कि आप उससे पहले ही पलंग ले जाएं।" फिर वह मालिक ली के घर गया और बोला, "मालिक वाङ आज पलग लेने आएगा, बेहतर है कि आप उससे पहले ही पलग लेने आ जाए।"

वाङ श्रौर ली दोनों ही बहुत क्रुद्ध हुए श्रौर उन्होंने तुरंत श्रपने श्रादमियों को श्रादेश दिया कि वे जाकर पहले पलंग हथिया लें। दोनों परिवारों के श्रादमी एक ही समय बढ़ई के घर जा पहुंचे। बहुत देर तक वे श्रापस में झगड़ते रहे। कोई पक्ष तनिक भी झुकने को तैयार नहीं था। श्रंत में बढ़ई को एक विचार सूझा। वह बोला, "सुनो, श्रभी श्रस्थाई रूप से पलंग को मेरे यहां रहने दें। मालिक वाङ के श्रादमी मालिक ली के घर में श्रौर मालिक ली के श्रादमी मालिक वाङ के घर में रहने जाएं। दोनों मालिकों की निगरानी में श्रगले दिन सुबह सूर्योदय के समय दोनों घरों के श्रादमियों को एक ही समय में रवाना होकर मेरे घर श्राना होगा। दोनों पक्षों में से जो भी पहले श्राएगा, पलंग उसका ही होगा।" दोनों मालिकों ने इस उपाय को श्रच्छा समझा श्रौर उसे श्रमल में लाया गया।

रात में बढ़ई श्रौर उसके पड़ोसी जादुई पलंग उठाकर पास ही के पक्षीशृंग की श्रोर चले गए। पक्षीशृंग बहुत ऊंचा है, उसकी तलहटी में एक नदी पूर्व की श्रोर द्रुत गति से बहती है। बहुत ऊंचे चट्टानी पार्श्व पर एक गुहा है। उन्होंने बड़ी कठिनाई से रस्से के सहारे जादुई पलंग को गुहा में उतार दिया श्रौर स्वयं बढ़ई भी उस गुहा के श्रंदर घुस गया। जब तक यह सब ठीक ठाक हो, तब तक सूर्य क्षितिज से निकल श्राया था।

थोड़ी देर बाद पक्षीशृंग के नीचे शोरगुल सुनाई पड़ा श्रौर नदी में बहुत सी नावें रुकी हुई नजर श्राईं। मालिक वाङ श्रौर मालिक ली के श्रादमियों ने पक्षीशृंग को घेर लिया था, पर उनमें से किसी को भी उस पर चढ़कर गुहा में घुसने का साहस नहीं हो रहा था।

दोनों मालिकों की श्रांखें क्रोध से लाल हो गई श्रौर उनका पेट मेंढ़क के पेट की तरह फूल गया। उन्होंने श्रपने श्रादमियों को श्रादेश दिया कि वे तीरों पर कपास बांधकर तेल में डुबा लें श्रौर उन्हें जलाकर गुहा में छोड़ दें ताकि बढ़ई को जलाकर मार दिया जाय श्रौर पलंग को जला कर राख कर दिया जाय। पर इसी समय वे शतपक्षी उड़कर गुहा से निकले श्रौर सीधे इन दोनों मालिकों पर झपट पड़े। इन्होंने इतनी जोर से चोंचें मारीं श्रौर खरोंचा कि एकाएक दोनों मालिक गिरकर मर गए श्रौर उनके पिछलग्गू भी डर के मारे सिर पांव पर रखकर भाग गए।

शतपक्षियों के गुहा में वापस लौटने के थोड़े समय बाद गुहा में सुनहरा प्रकाश झलकने लगा। वे पलंग पर बैठे बढ़ई के इर्द-गिर्द उड़ते हुए गुहा से निकले। जादुई पलंग धीरे-धीरे श्राकाश की श्रोर श्रधिकाधिक ऊंचा उड़ता गया श्रौर श्रंत में सुन्दर रंगीन बादलों में श्रोझल हो गया।

सुनहरी मछली

(उइगुर जाति)

बहुत पहले एक आदमी था जो मछली पकड़कर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। एक दिन, उसने नदी में जाल फेंककर एक सुनहरी मछली को पकड़ लिया। वह उसे पकड़ने के लिए खुशी से हाथ बढ़ा ही रहा था कि अचानक मछली एक उछाल मार कर नदी में वापस कूद गई। मछुआ उदास हो कर घर लौट गया और मन में उस सुनहरी मछली के बारे में सोचता रहा। उस दिन के बाद से वह हर रोज नदी में मछली पकड़ने जाता था और बड़ी तादाद में मछलियों को पकड़ भी लेता था। पर उसे फिर कभी उस सुनहरी मछली की छाया तक नहीं दीख पड़ी। तीन साल बीत गए। उसने बड़ी मात्रा में धन कमाया और वह निश्चिंतता से अपना जीवन बिताने लगा। बाद में उसने अपना व्यवसाय बदला और बड़े बाजार में एक कपड़े की दूकान खोल ली। लेकिन फिर भी वह उस सुनहरी मछली को भुला नहीं सका।

पहली पत्नी की मृत्यु होने के बाद उसने एक विधवा के साथ शादी की जो अपने बेटे को ले आई। शुरू में वह इस लड़के को प्यार करता था, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ वह उसे प्यार नहीं कर पाया क्योंकि एक तो यह लड़का उसका अपना नहीं था, और दूसरे, वह अपना अधिकतर समय परदेश में व्यापार करता था और घर कम लौट पाता था। इसलिए उसके और लड़के के बीच का संबंध धीरे-धीरे शिथिल होता गया।

एक दिन, उस लड़के ने किसी को नदी में मछली पकड़ते देखा और उसे याद आया कि उसके घर के कोने में भी एक जाल रखा हुआ था। वह घर वापिस लौटा और अपनी मां से बोला, "मां, मुझे जाल दे दो, मैं भी नदी में मछली पकड़ने जाऊंगा।"
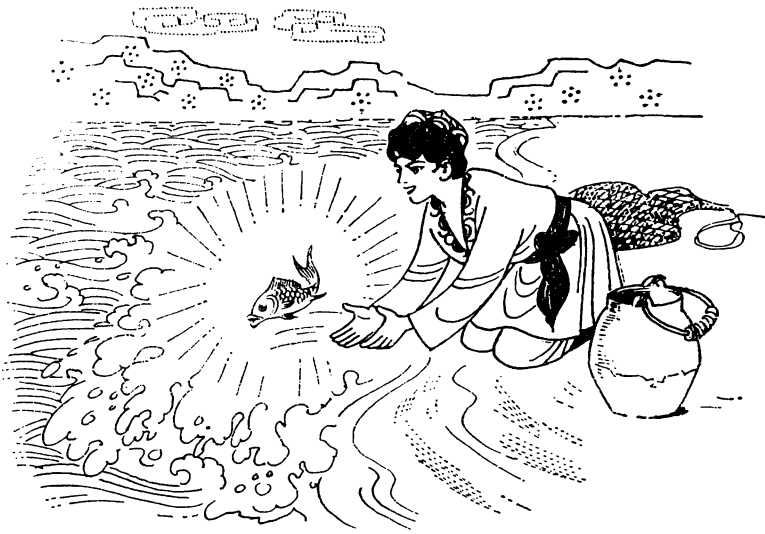
"बेटा, तू अभी उम्र में छोटा है," मां ने चिंतित होते हुए कहा, "यह एक खतरनाक काम है !" लेकिन लड़के ने बार-बार आग्रह किया और अंत में मां को वह जाल उसे देना पड़ा।

उसने जाल नदी में फेंका और थोड़ी ही देर बाद उसे जोर से खींच लिया। जब उसने एक सुनहरी मछली को जाल में फंसा देखा, उसने तुरंत ही उसे दोनों हाथों से दबाकर जा पकड़ा। अपने घर की ओर लगभग तीस कदम चलने पर उसके दिमाग में अचानक यह विचार आया : "मैं इसे बेच दूं अथवा इसे पकाकर खा जाऊं ?" सुनहरी मछली को गौर से देखने के बाद वह उसे मार डालने के लिए अपना दिल कड़ा नहीं कर सका। "इतनी सुंदर मछली कैसे खाई जा सकती है ! जाओ, वापस नदी में चली जाओ और वहां स्वतंत्रतापूर्वक खेलो !" उल्टे पांव लौटकर उसने सुनहरी मछली को नदी में छोड़ दिया और खाली हाथ घर लौट आया।

नदी के किनारे पर खेल रहे बच्चों ने उसे मछली को नदी में डालते देखा था। उन्होंने दौड़ कर दूकान जाकर उसके सौतेले पिता से कहा, "मालिक, आपके बेटे ने नदी में एक सुनहरी मछली पकड़ी, पर उसने फिर उसे नदी में वापस छोड़ दिया। उसने ऐसा क्यों किया ?"

यह बात सुनकर व्यापारी क्रोध से फट पड़ा। उसने मन में सोचा, "मैं तो उस सुनहरी मछली के लिए आठ साल तक कल्पना ही करता रहा, लेकिन इस दुष्ट लड़के ने उसे पा कर भी छोड़ दिया! यदि वह उसे घर में ले आता, मैं निश्चय ही धनी हो जाता!" रोष में भरकर उसने कमरे में प्रवेश किया और एक छोटी तलवार लेकर लड़के को पकड़कर पूछने लगा :

"तुमने मेरी सुनहरी मछली को क्यों छोड़ दिया?"

लड़का डर के मारे सिकुड़ गया और कुछ भी नहीं बोल सका। यह देखकर व्यापारी को और भी अधिक गुस्सा आया। तलवार को लड़के के सीने की ओर साध कर वह चिल्लाया :

"मेरे लिए एक सुनहरी मछली तुम जैसे बेटे से कहीं ज्यादा मूल्यवान है!" यह कहते हुए उसने उसे मारने के लिए तलवार उठाई। लड़के की मां ने रोते-चीखते हुए लड़के को अपनी दोनों बांहों में कस लिया। "एक मछली के लिए आप लड़के को कैसे मार सकते हैं!" वह देर तक रोती-गिड़गिड़ाती रही, पर उसके पति ने कुछ भी सुनना एकदम अस्वीकार कर दिया। अंत में उसने कहा, "आप इसे दिन में नहीं मार सकते। रात में मारने से दूसरे जान नहीं पाएंगे।" व्यापारी क्रोध से झुंझलाता हुआ वहां से चला गया।

मां और बेटा दोनों एक दूसरे से गले मिल कर रो पड़े। थोड़ी देर बाद मां ने कहा, "बेटे, तुम कहीं दूसरी जगह चले जाओ, अब तुम मेरे साथ नहीं रह सकते!" इसके बाद उसने बेटे के लिए सामान बांधा और उसे चेतावनी दी, "यदि तुम्हें रास्ते में कोई सहयात्री मिले तो पहले उसे परख लेना। उससे कहना कि तुम फारिग होने जाना चाहते हो। यदि वह तुम्हारी प्रतीक्षा करे तो तुम उसे अपना सहयात्री बना लेना अन्यथा उसका साथ छोड़ देना।" मां और बेटा एक दूसरे से गले मिलने के बाद जुदा हो गए।

कुछ दूर चलने पर लड़के को एक आदमी मिला। वह उस आदमी के साथ आधे दिन तक चलता रहा। फिर उसे अपनी मां की बात याद आ गई। उसने कहा, "आप थोड़े समय के लिए मेरा इन्तजार करें, मैं पेशाब करने जाऊंगा।" उस आदमी ने कुछ मिनट तक इन्तजार करने के बाद कहा, "अरे, मैं आगे चलता हूं!" यह कह कर वह चल दिया। लड़के ने मन में सोचा, "हां, मेरी मां ने सही कहा था।" वह फिर आगे बढ़ गया।

इसी तरह उसने रास्ते में एक दूसरे आदमी को भी परखा और वही नतीजा मिला।

तीसरे दिन झुटपुटे में एक हट्टा-कट्टा नौजवान मार्ग की दाईं ओर से उसके सामने अचानक आ गया और बोला, "छोटे भाई, हम दोनों एक साथ ही चलें।" उस नौजवान ने उससे पूछा कि वह अकेले क्यों चलता है।

लड़के ने ईमानदारी से जवाब दिया, "मेरे पिता ने एक सुनहरी मछली की वजह से मुझे मारना चाहा। मेरी मां ने मुझे भाग निकलने में मदद दी।मैं नहीं जानता कि मैं किधर जा रहा हूं?"

"तुम दुखी मत हो," उस नौजवान ने उसे सांत्वना दी, "हम सदा साथ रहेंगे। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" तब से वे एक दूसरे के साथ भाईचारे का बर्ताव करने लगे, और साथ-साथ आगे बढ़ गए।

दो दिन बाद वे एक नगर में आ पहुंचे। इस नगर में एक नियम था कि यदि कोई आदमी खाना खाकर पैसे न दे तो उसे मौत की सजा दी जाएगी। वे दोनों इस नियम के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। जब उन्होंने सड़क पर चलते हुए बहुत सी खाने की चीजें देखीं तो उन्हें असह्य भूख लग आई।

छोटे भाई ने कहा, "हमारे पास पैसे नहीं हैं। क्या हमें कुछ खाने को मिल सकता है?"

बड़े भाई ने जवाब दिया, "क्यों नहीं? हम काम करके उसका मूल्य चुका सकते हैं!"

इस तरह वे एक दूकान में प्रविष्ट हुए और उन्होंने बहुत सी कीमाभरी भाप की रो-टियों और ठंडे नूडल लाए जाने का आदेश दिया। उन्होंने खुशी से भरपेट खाया और मूल्य चुकाते समय मालिक से अनुरोध किया कि वह उन्हें खाने के बदले में कुछ काम दे। किन्तु, मालिक ने इनकार कर दिया और राजा के पास इसकी शिकायत कर दी।

राजा ने अपने मंत्री को आदेश दिया, "आज रात को इन दोनों आदमियों को पकड़ कर ले आएं!" उस रात में दोनों भाइयों को बांध लिया गया और राजा के सामने घसीट लाया गया।

राजा ने कहा, "तुम खाना खाकर पैसे क्यों नहीं देते?"

"हम भ्रमणकारी हैं। हमारे पैसे खर्च हो चुके हैं। लेकिन हम खाने के बदले काम करने को तैयार हैं।"

राजा चिल्लाया, "मैंने कानून बनाया है कि कोई आदमी अगर खाना खाकर पैसे न दे तो उसे मौत की सजा दी जाएगी। समझे? जाओ, इन दोनों को बाहर ले जाओ और फांसी पर चढ़ा दो!"

इस पर प्रधान मंत्री ने कहा, "महाराज, आपका दास एक सुझाव पेश करना चाहता है।

राजा ने अनुमति दी, "कहिए।"

"ये दोनों नौजवान हृष्ट-पुष्ट और साहसी मालूम पड़ते हैं। आपकी पुत्री सात साल पहले डाइन द्वारा अपहृत की गई थी और उसे ढूंढ़ने के लिए आपने जिन-जिन आदमियों को भेजा, उसने उन्हें भी खा डाला है। अब मेरी राय है कि आप इन दोनों को प्रयत्न करने का अवसर दें। यदि वे राजकुमारी को बचाने में सफल हो जाएं, तो आप उन्हें मंत्री बना लें और उनमें से एक के साथ राजकुमारी का विवाह कर दें। किन्तु यदि वे विफल हो जाएं, तो आप तब भी उन्हें प्राणदण्ड दे सकते हैं। क्या आपको मेरी योजना स्वीकार है?"

राजा ने यह राय मान ली और उन दोनों को वापस बुलवाया। "मेरी पुत्री एक डाइन द्वारा अपहृत कर ली गई है। यदि तुम दोनों उसे बचा सको, तो मैं तुम दोनों को भारी इनाम दूंगा।"

इन दोनों ने तुरन्त अपनी सहमति प्रगट कर दी।

राजा ने उन्हें अपनी एक-एक तलवार और गेरुआ घोड़े प्रदान किए और उन्हें कूच करने का आदेश दिया। इस तरह वे बड़ी शान से मुख्य मार्ग पर आगे बढ़ चले।

दो दिन के बाद एक दुर्गम ऊंचे पहाड़ ने उनका रास्ता रोक दिया। पहाड़ी ढलान पर सीधी चट्टानें और गोलाकार पत्थर फैले हुए थे। उन्होंने घोड़ों को पहाड़ की तलहटी में बांध दिया और शिखर पर चढ़ना शुरू किया। अचानक बड़े भाई ने कहा, "देखो, वह क्या है?"

छोटे भाई ने जवाब दिया, "अरे, वहां तो एक सुनहरा मकान है। उसके दाईं ओर एक नदी है और सामने एक बड़ा पुल है!"

वे टकटकी बांधे देख ही रहे थे कि उन्हें अचानक कुछ दूरी पर एक बूढ़ी डाइन खड़ी नजर आई।

उसने अकड़ कर पूछा, "तुम कौन हो? तुम्हें यहां आने की हिम्मत कैसे हुई? क्या तुम मरना चाहते हो?" उसने अपनी आंखों को कटोरे के मुंह जितना बड़ा कर लिया और उसके मुंह से तीन फुट लम्बी लार निकली। ऐसा लगा जैसे वह एक ही निवाले में उन्हें निगल लेगी।

निर्भय बने दोनों भाइयों ने तुरंत ही अपनी तलवारें निकाल लीं। बूढ़ी डाइन ने डींग मारते हुए कहा, "तुम संख्या में सिर्फ दो हो, यदि तुम जैसे एक हजार आदमी भी

आ जाएं तो भी वे राजकुमारी को वापस ले जाने में सफल नहीं हो सकते। राजा ने हर साल सैंकड़ों सिपाहियों को मेरा विरोध करने के लिए भेजा था, पर मैंने सिर्फ एक ही सांस खींचकर उनके मांस को सुखा कर उनकी हड्डियों को आकाश में उड़ा दिया। तुम्हारे पांवों के नीचे का यह पहाड़ उनकी हड्डियों से ही बना है। तुम जैसे दूध पीते बच्चों को तो मैं सिर्फ एक सांस खींच कर ही अपने लिए स्वादिष्ट भोजन में बदल दे सकती हूं!"

उसकी बात खत्म होने से पहले ही छोटे भाई ने क्रोध से तलवार उठाकर उस पर वार किया। लेकिन बूढ़ी डाइन ने उसकी दिशा में मुंह से फूंककर तलवार को आकाश में उड़ा दिया। स्थिति को नाजुक देखकर अधिक पुष्ट बड़े भाई ने तुरन्त पुकारा, "भाई, एक तरफ हटो!" मैं उससे निबटे लेता हूं!"

बूढ़ी डाइन ने तिरस्कार के साथ हंसकर कहा, "अच्छा, तो तुम्हीं पहले मरो!" तुरंत ही उसने पहले फूंकी हवा को बवंडर की तरह वापस खींच लिया। बड़ा भाई बवंडर के साथ उसके मुंह में जा पहुंचा जहां उसने अपनी पैनी तलवार को उसके गले में खोंप दिया। क्षण भर में डाइन का सिर दो भागों में कट गया और खून द्रुतगामी धाराओं की भांति बह निकला।

दोनों भाई विजयपूर्ण आनन्द से डग भरते हुए नदी के किनारे पर आ पहुंचे। वहां उन्होंने पानी से अपने शरीरों और तलवारों पर पड़े खून को साफ किया। इसी समय, एक खूबसूरत युवती हाथ में एक लम्बी गर्दन वाली सुनहरी केतली लिए उस सुनहरे मकान से निकल आई। उसने इन दोनों नौजवानों को देखा तो कमर झुकाकर उनका अभिवादन किया और पूछा, "बहादुर नौजवानो, आप कहां से आए हैं? आप जानते हैं कि यहां कोई भी मनुष्य नहीं आ सकता!"

उन्होंने जवाब दिया, "एक राजकुमारी डाइन द्वारा अपहृत कर ली गई है। हम उसे ढूंढ़ने आए हैं।"

"हाय-हाय, आप यहां से जल्दी ही चले जाओ! यदि डाइन ने आपको देख लिया, तो वह आपकी जान ले लेगी! मैं ही वह राजकुमारी हूं। मेरे पिता ने मुझे बचाने के लिए असंख्य सिपाहियों को भेजा था, पर वे सबके सब उस डाइन द्वारा निगल लिए गए!"

उन्होंने जवाब दिया, "राजकुमारीजी, आप पहाड़ के उस पार जाकर देख लें!"

राजकुमारी एक सांस में पहाड़ के उस पार दौड़ गई। वहां उसने डाइन का पथराया शव जमीन पर पड़ा देखा। वह प्रसन्नतापूर्वक दौड़ती हुई लौट आई और बोली, "आपने

डाइन को मार डाला ! आप सच्चे वीर हैं ! किंतु, इस डाइन के दो बेटे हैं जो 40 दिन पहले बाहर गए हुए हैं। वे आज ही लौट आएंगे।"

उन्होंने जवाब दिया, "राजकुमारी, डरिए मत। हम उनका भी निपटारा कर देंगे !"

राजकुमारी उन्हें सुनहरे मकान में ले गई और बढ़िया भोजन खिलाया। इसके बाद बड़े भाई ने छोटे भाई से मकान के दरवाजे पर खड़े रहकर राजकुमारी की रक्षा करने को कहा और स्वयं पुल के नीचे जाकर घात में बैठ गया।

थोड़ी देर बाद डाइन के दो बेटे, काला पिशाच और सफेद पिशाच, लौट आए। उन्होंने दूर से मनुष्य की गंध सूंघ ली। वे चिल्लाए, "कौन है यहां ? बाहर निकलो !"

"पिशाच, राजा की पुत्री हमें लौटाओ।" कहते हुए नौजवान पुल के नीचे से छलांग मारकर निकला, "यदि नहीं लौटाई तो मैं तुम्हारे पेट फाड़ डालूंगा और तुम्हारे सिर काट दूंगा !"

सफेद पिशाच ने कहा, "हुं, तुम एक नवजात शिशु जैसी ही शेखी बघारते हो ! क्या तुम मरना चाहते हो ?" और अपना 80 फुट लम्बा बल्लम उठाकर नौजवान के हृदय की ओर फेंका।

निर्भीक नौजवान ने फुर्ती से उसका बल्लम पकड़ लिया और उसके दो टुकड़े कर डाले। यह देखकर काला पिशाच सकते में आ गया। उसने मन में सोचा, "मेरे भाई का बल्लम खुनलुन पर्वत को ऊंचा उठाते समय भी नहीं टूट सकता। यह कोई मामूली व्यक्ति नहीं है ! चलूं, मैं इससे निबटूं !" काला पिशाच पागल भालू की तरह उसकी ओर लपका और हजार से ज्यादा किलोग्राम वजन वाला लौह-हथौड़ा उठाकर चिल्लाया, "लो, अब मेरी मार खाओ !" लेकिन नौजवान ने बिना घबराए अपनी तलवार से लोहे के हथौड़े का हल्का सा ही स्पर्श किया, तो लौह-हथौड़ा झट से दो टुकड़ों में जमीन पर गिर पड़ा। अंत में उसने दोनों पिशाचों को उठाकर जमीन पर पटक दिया और अपनी तलवार से उन्हें मार डाला। इसके बाद उसने उनके सिरों को काटकर पुल के प्रवेश-द्वार पर लटका दिया।

छोटा भाई बड़े उत्साह से अपने बहादुर भाई से गले मिला। फिर दोनों भाई राजकुमारी को साथ लेकर घोड़ों पर सवार हो शीघ्रातिशीघ्र नगर की ओर वापस लौट गए। वे अनगिनत रेगिस्तानों और बंजरों से गुजरे। अब नगर तक सिर्फ एक दिन की यात्रा रह गई थी। जब उन्होंने एक गांव में पड़ाव डाला, तो सभी गांववासी उनका स्वागत करने निकल आए।

एक सफेद बालों वाले बुजुर्ग ने फौरन यह खुशखबरी राजा को दे दी। सुनकर राजा

ग्राश्चर्य से कह उठा, "मैं जाग रहा हूं या स्वप्न देख रहा हूं ?"

"यदि यह खबर झूठी हो तो ग्राप मेरा सिर काट सकते हैं!" बुजुर्ग ने ग्रपनी दाढ़ी सहलाकर बात की पुष्टि की। राजा ने उसे इनाम के रूप में एक रकाबी भर सोने के सिक्के दिए ग्रौर उसी रात, खुद ही ग्रपने मंत्रियों ग्रौर चार सौ सिपाहियों को लेकर शहनाइयों ग्रौर ढोलों के नाद में उस गांव में पहुंचा। लोगों ने दोनों नौजवानों को कंधों पर बिठाकर धूमधाम से राजप्रासाद में पहुंचाया।

सात दिन के बाद राजा ने बिचौलिये से कहा, "यदि उनमें से कोई एक नौजवान मेरी पुत्री से विवाह करना चाहता हो, तो मैं उससे ग्रपनी पुत्री का विवाह करने को तैयार हूं।" जब बिचौलिए ने यह बात दोनों भाइयों को बताई, तो उन्होंने एक दूसरे पर टाल दिया। ग्रंत में बड़े भाई ने कहा, "छोटे भाई, तुम उससे शादी कर लो। मैं शादी नहीं कर सकता, इसका कारण तुम धीरे-धीरे समझ जाग्रोगे।" इस पर छोटा भाई सहमत हो गया, ग्रौर यह निर्णय राजा को बता दिया गया। बाद में राजा के ग्रादेशानुसार उनके लिए शानदार विवाहोत्सव का ग्रायोजन किया गया।

फिर सात दिन बीत गए। ग्राठवें दिन बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा, "भाई, मैं ग्रपने पुराने घर लौटना चाहता हूं। तुम यहीं रहो!"

"नहीं। यदि ग्राप जा रहे हैं तो मैं भी साथ चलूंगा। मैं ग्राप से ग्रलग नहीं होना चाहता!"

यह बात जान कर राजा ने उन्हें ग्रपने यहां ठहरने को समझाना चाहा, किन्तु उन्होंने दृढ़तापूर्वक ग्रसहमति प्रगट की। ग्रंत में राजा को ग्रपनी इच्छा के विरुद्ध पुत्री ग्रौर जामाता से जुदा होने पर सहमत होना पड़ा। उनके कूच करने से पहले राजा ने उन्हें बहुत सी रसद ग्रौर सोना-चांदी दिया।

उन्होंने काफी लम्बा रास्ता पार किया। एक दिन, जब वे एक बड़ी नदी पार कर रहे थे, बड़े भाई ने सब लोगों से रुकने को कहा ग्रौर छोटे भाई से बोला, "तुमने ग्रपनी पन्द्रह वर्ष की उम्र इस नदी में जाल फेंका था, ठीक है न? उस दिन तुमने क्या पकड़ा था?"

"एक सुनहरी मछली", छोटे भाई ने जवाब दिया।

"तुमने उस मछली के साथ क्या किया था?"

"मैंने उसे नदी में वापस जाने छोड़ दिया था।"

"भाई, तुम बहुत दयालु हो! मैं वही सुनहरी मछली हूं। तुमने मेरे साथ ग्रच्छा बर्ताव किया ग्रौर मुझे जाने दिया। मेरे लिए तुमने बहुत से कष्ट उठाए, इसलिए मैं

तुम्हारे उपकार का बदला देने आया हूं। अच्छा, हम फिर मिलेंगे!" यह कहने के बाद वह छलांग लगा कर नदी में कूद गया। थोड़ी ही देर बाद एक चमकदार सुनहरी मछली पानी में तैरती और पुल पर खड़े नौजवान की ओर बार-बार सिर हिलाती दिखाई पड़ी।

चतुर स्त्री

(उइगुर जाति)

बहुत पहले एक बड़े शहर के उपनगर में एक गरीब लड़का रहता था। उसके पास तनिक सी भी जमीन नहीं थी। केवल तीन कमरों वाली एक टूटी-फूटी झोंपड़ी थी। वह मिठाई बेचकर अपने दिन काट रहा था।

समय पानी की तरह दिन-दिन, महीने-महीने और साल-साल बीतता चला गया। कहावत है : समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। अनजाने ही यह गरीब लड़का 19 वर्ष का हो गया। उसने सोचा : "मेरी उम्र दिन-दिन बढ़ती जाती है। लेकिन इन संकटग्रस्त दिनों में मुझ जैसे गरीब आदमी की शादी कोई आसान काम नहीं है।"

किंतु, कौन कल्पना कर सकता था कि कुछ समय बाद ही इस गरीब लड़के ने मिठाई बेचकर कुछ धन संचित कर लिया और शादी कर ली।

उसकी दुल्हन बहुत सुन्दर थी। उसकी दोनों काली आंखें चंद्रमा से भी अधिक सुन्दर थीं और उसका सौम्य छोटा मुखड़ा सूर्य भी से अधिक मनोहर था। लोग कहते कि यदि उन्हें संसार की दो सुन्दरियों में किसी एक को चुनना हो तो उनमें से एक निश्चित ही वही होती और यदि एक का ही चुनाव करना हो तो वह यही महिला होगी।

उनकी शादी होने के बाद भी पति मिठाई बेचता रहा। यद्यपि उनका जीवन कष्टमय था, किन्तु पत्नी उससे असंतुष्ट होने के बजाए प्रेम करती थी और उनका ख्याल रखती रहती थी। सारे पड़ोसी उनके सुख-चैन से ईर्ष्या करते थे।

एक दिन, एक उच्च शाही अफसर बादशाह की आज्ञा लेकर शहर से आया। उसने इस गरीब नौजवान के घर में विश्राम किया और उसकी सुन्दर पत्नी को देखा।

वह उसकी पत्नी के पद्मराग जैसे लाल होठों और मधुर आवाज से मुग्ध हो गया और दरबार में लौटने के बाद उसने यह बात बादशाह को बताई। "महामहिम, मैंने एक गरीब युवक की इतनी सुन्दर पत्नी को देखा है कि मैं कोई विशेषण नहीं ढूंढ़ पाता। महामहिम, केवल आप ही उसके योग्य हैं! कितनी खेदजनक बात है कि इतना रस भरा निवाला एक गरीब नौजवान के मुंह में पड़ गया है!"

बादशाह ने तुरन्त अपने आरक्षियों को आदेश दिया कि वे गरीब नौजवान की पत्नी को छीनकर राजप्रासाद में ले आएं। गरीब नौजवान की पत्नी को सचमुच बहुत खूबसूरत पाकर उसने उससे चिकनी-चुपड़ी बातें कीं और तरह-तरह के वायदे किए। फिर भी वह त्योरियां चढ़ाए रही और उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

उसने देखा कि बादशाह की दाढ़ी रेगिस्तान में उगे ऊंटकटारों की तरह पूरे चेहरे पर फैली हुई है। उसके सिर पर थोड़े से सफेद बाल देखने में गंजे से भी अधिक भद्दे लग रहे थे। उसकी दो आंखें बालू पर पड़े पदचिन्हों जैसी कुत्सित दीख रही थीं। बचे-खुचे दो दांत भी हिलते-डुलते गिरने ही वाले थे। बादशाह को देखते ही उसे क़ै होने

लगती थी।

लेकिन फिर भी बादशाह ने दुष्ट विचारों से उसका हृदय जीतने का दृढ़ निश्चय किया। उसने खुशामदी मुस्कान से उसे फुसलाना चाहा, "स्वर्ग में आ कर भी तुम संतुष्ट क्यों नहीं हो? क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हें किस बात की चिंता है?"

उस स्त्री ने ठंडे स्वर में उत्तर दिया, "हां, मैं संतुष्ट नहीं हूं।"

उसके चेहरे पर तनिक सी भी मुस्कान नहीं थी, मानो समूचे आकाश पर काला बादल छाया हुआ हो।

बादशाह समझ नहीं पा रहा था कि उससे कैसे निबटे। अंत में उसने कहा, "अच्छा, यदि तुम्हें किसी बात की चिंता है, तो उस पर विचार करने के लिए तुम अकेली ही एक कमरे में रह सकती हो। नौकरानियां तुम्हारी सेवा-टहल करेंगी।" यह कह कर उसने कुछ नौकरानियों को आदेश दिया कि वे उसे एक दूसरे कमरे में ले जाएं।

एक कमरे में अकेले रहते हुए उसे रात-दिन अपने पति की याद आती रहती थी और वह दु:ख के आंसू बहाती रहती थी।

इधर यह गरीब नौजवान भी अपनी पत्नी को देखने के लिए व्यग्र हो रहा था। उसने एक कठौते में कुछ मिठाइयां भरीं और सीधे राजप्रासाद की ओर चला गया। उसने ऊंची आवाज में पुकरा, "मिठाई खरीदो! मिठाई खरीदो!"

उसकी पत्नी ने जब यह सुपरिचित आवाज सुनी, तो खिड़की के बाहर झांककर देखा और उसे अपना पति दिखाई दे गया। उसका जी खिल उठा और वह मारे प्रसन्नता के हंस पड़ी।

उसकी सेवा करने वाली नौकरानियों ने तुरन्त यह बात बादशाह को जा बताई।

बादशाह ने फौरन अपने रक्षकों को इस गरीब नौजवान को राजप्रासाद में ले आने के लिए कहा। उसने गरीब नौजवान को कपड़े उतारने का आदेश दिया और स्वयं उसने भी अपने वस्त्र और मुकुट उतार डाले। फिर उसने अपने वस्त्र और मुकुट गरीब नौजवान को पहनने के लिए दे दिए और स्वयं उसके कपड़े पहन लिए और उस नौजवान का रूप बनाकर मुंह से "मिठाई खरीदो, मिठाई खरीदो" चिल्लाते हुए सीधे गरीब नौजवान की पत्नी के कमरे में प्रविष्ट हो गया।

गरीब नौजवान की पत्नी ने उसकी ओर सिर्फ एक ही नजर डालकर उसके छद्म रूप को पहचान लिया। इस नाजुक घड़ी में उसने निर्भीक होकर आदेश दिया, "रक्षको, शीघ्र ही इस निर्लज्ज कंगाल की हत्या कर दो जो बिना मेरी अनुमति लिए मेरे कमरे में घुस आया है!"

तब बादशाह को महसूस हुआ कि काम बिगड़ गया है। किन्तु अपनी वास्तविकता बताने से पहले ही वह मार डाला गया।

गरीब नौजवान की पत्नी ने राजप्रासाद में अपने पति को ढूंढ़ लिया और उसे बादशाह घोषित कर दिया।

प्रारम्भ में तो उसका यह छद्म रूप कोई नहीं पहचान सका। बाद में सब लोग धीरे-धीरे सच्चाई जान गए। फिर भी जब उन्होंने देखा कि नया बादशाह आम जनता के साथ कितना न्यायोचित व्यवहार करता है, तो उन्होंने स्वेच्छा से उसका शासन स्वीकार कर लिया।

इल्ली के रूप में सांप

(उइगुर जाति)

बहुत पहले पातुर नामक एक बूढ़ा था। उसका एक पोता था जिसका नाम तुरसन था। तुरसन बचपन में ही अनाथ हो गया था और उसके दादा द्वारा ही पाला पोसा गया था। वह मूर्ख था, इसलिए लोग उसे "छोटा बुद्धू" कहते थे। वह बहुधा बेहूदा बातें और बुद्धिहीन कार्रवाइयां करता रहता था! यहां तक कि वह जंगली फल तोड़ने के लिए अपने दादा के मनपसंद बाजे, रवाब, का उपयोग करता था। इस सबसे दादा बहुधा झुंझला उठता था। अपने पौत्र को बखेड़ा खड़ा करने से रोकने के हेतु वह उसे चेतावनी दिया करता था, "छोटे बुद्धू, याद रखना, ऐसी कोई बात मत कहना जो अचानक तुम्हारे विचार में आई हो, ऐसी कोई चीज मत ले लेना जिसे तुमने रास्ते में पड़े देखा हो, और ऐसे किसी मार्ग पर मत चलना जो तुम चलते-चलते मिल गया हो।"

एक दिन, तुरसन को बाजार से लौटने में थोड़ी देर हुई, इसलिए उसने जल्दी ही घर लौटने के लिए एक कम फासले वाला छोटा रास्ता पकड़ लिया। वह अपने गधे पर सवार होकर चलता जा रहा था कि अचानक उसे एक छोटा संदूक मार्ग के मध्य पड़ा नजर आया। संदूक को एक तरफ हटाने के विचार से वह गधे से नीचे उतरा। "ओह, यह कितना सुंदर संदूक है! इस पर नक्काशीदार सोना-चांदी भी चढ़ाई हुई है! यद्यपि इसका ताला बंद है, मगर चाभी इसके किनारे पर ही लटकी हुई है।" उसने संदूक को गधे पर लाद दिया और फिर आगे बढ़ता गया। अचानक उसे दादा की बात याद आई, "ऐसे मार्ग पर मत चलो जो तुम्हें राह चलते मिल गया हो।" वह फिर से मुख्य मार्ग पर चलने लगा।

थोड़ी देर चलने के बाद उसके गधे को मार्ग के किनारे पर उगा एक शहतूत का

पेड़ दिखाई पड़ा और वह शहतूत खाने के लिए रुक गया। जब तुरसन गधे को आगे हांकने का कोई उपाय नहीं सोच पाया तो वह नीचे उतर कर इन्तजार करने पर बाध्य हो गया। उसने संदूक को गौर से देखा और मन में सोचा, "इतने सुंदर संदूक में अवश्य ही कोई न कोई मूल्यवान चीज रखी होगी। इसे खोलकर क्यों न देख लूं?" उसने संदूक खोला। लेकिन, इसमें सुई की नोंक जितनी छोटी सुनहरी इल्ली के अलावा अन्य कोई वस्तु नहीं थी। उसने दयाभाव से इल्ली से कहा, "छोटे प्राणी, मैं तुम्हें मुक्त किए देता हूं।" यह कहते हुए उसने इल्ली को संदूक से निाकल कर फेंक दिया।

इल्ली धीरे-धीरे रेंगती हुई मार्ग के बीच में जा पहुंची। उसने सिर उठाकर पहले दाईं ओर और फिर बाईं ओर चार-चार चक्कर लगाए। फिर वह अचानक ही एक बहुत लम्बे सांप के रूप में बदल गई। उसकी आंखों में भयावह प्रकाश भरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह तुरसन को निगलने ही वाला हो। घबराकर तुरसन चिल्लाया: "नमकहराम, जब तुम इल्ली मात्र ही थे, मैंने तुम पर दया की और तुम्हें सूर्य देखने और ताजा हवा में सांस लेने दिया। किन्तु अब तुम एक पिशाच का रूप धारण कर मुझे खाना चाहते हो!"

सांप बोला, "बुद्धू, मैं हमेशा ही मुझ पर दया करने वालों को खा लेता हूं! तुमने मुझ पर दया की थी? ठीक है, अब मैं भूखा हूं और मैं तुम्हें खा लूंगा!"

तुरसन ने भयभीत होकर कहा, "क्या? तुम ऐसी बात कैसे कह सकते हो? चलो, हम किसी को न्याय करने के लिए ढूंढ़ लें जो यह निर्णय कर दे कि तुम सही हो या मैं। अगर तुम सही हो, तो तुम मुझे खा लेना!"

लेकिन इस अंधेरे सुनसान मार्ग पर वह किसी आदमी को कहां से ढूंढ़ पाता?

सांप ने रूखे स्वर में कहा, "बुद्धू, यहां न्याय करने के लिए कोई आदमी नहीं है! जो भी हो, मैं तो तुम्हें खा ही लूंगा। अच्छा हो कि तुम जल्दी से मेरे पास चले आओ! नहीं तो, तुम्हें और ज्यादा दुःख भोगना पड़ेगा।"

तुरसन ने उदासी भरे स्वर में कहा, "तो हम इस शहतूत के पेड़ से न्याय करा लें?"

सांप ने जवाब दिया, "अच्छा। आखिरकार तो मैं तुम्हें खा ही लूंगा। इसलिए मैं तुम्हारी यह अंतिम मांग माने लेता हूं।"

तुरसन शहतूत के पेड़ के पास चला आया। उसने श्रद्धा के साथ उसे प्रणाम किया और चिरौरी भरे लहजे में कहा, "शहतूत पेड़ चाचा, आप ही न्याय कीजिए। यह दुष्टात्मा पहले एक छोटी इल्ली थी। मैंने उस पर दया की और उसे मुक्त किया। अब वह एक बड़े सांप के रूप में बदल गई है और मुझे खाना चाहती है। यह कृतघ्नता

नहीं तो और क्या है?"

शहतूत के पेड़ ने जवाब दिया, "छोटे बुद्धू, तुम हार गए! कहावत है: 'अच्छा आदमी दीर्घजीवी नहीं हो पाता है।' मुझे ही देखो, मैं हर साल लोगों को रेशम के कीड़े पालने के लिए बहुत से पत्ते और खाने के लिए बहुत से मीठे फल दिया करता हूं। फिर भी लोग लाठी से मुझे पीटते रहते हैं। हाय, दुनिया में न्याय तो है ही नहीं! तुमने

सांप को मुक्त किया है न ? तो तुम बिना ऐतराज किए उसे तुम्हें खा लेने दो !"

यह सुनकर सांप और अधिक प्रसन्न हो गया। "हा-हा-हा ...तुम हार गए !" उसने रक्त जैसी लाल आंखें घुमाते हुए, तसले जैसा बड़ा मुंह खोलकर क्रूरतापूर्वक कहा, "बुद्धू, तुमने मिस्टर शहतूत की बातें सुनी न ? तुमने मुझे मुक्त किया, इसलिए मैं तुम्हें खा लूंगा।..."

तुरसन घबरा कर पीछे हटता गया और कांपती आवाज में बोला, "ठहरो, ठहरो। वह तो केवल एक पेड़ मात्र ही है, मनुष्य नहीं है ! हम ... हम न्याय करने के लिए एक मनुष्य को ढूंढ़ें... ।"

शहतूत के पेड़ ने फिर कहा, "अच्छा, अच्छा। तुमने एक बार तो प्रयास कर लिया। तुम एक बार फिर प्रयास कर सकते हो।" उसने मुड़कर सांप से कहा, "सांप भाई, जल्दी मत करो। जो भी हो, आपको वह खाने को मिलेगा ही। आप उसे एक और मौका क्यों नहीं देते ?"

सांप ने अभिमान भरे स्वर में कहा, "तो ठीक है, मैं उसे एक मौका और देता हूं। जो भी हो, यहां उसके समान मूर्ख नहीं मिल सकेगा।"

इसी समय दादा पातुर छड़ी टेकते हुए कंधे पर रवाब लटकाए वहां चले आए। उन्होंने दूर से अपने पोते को देखा और खुशी से पुकारा, "नासमझ लड़के, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करते-करते थक गया हूं ! अंधेरा होने ही वाला है, तुम घर क्यों नहीं लौटते ?"

तुरसन को अपने दादा को देखते ही हिम्मत हुई। वह ऊंची आवाज में चिल्लाया, "दादा, दादा, जल्दी आओ ! आकर मुझे बचाओ !"

"मेरे बच्चे, क्या हुआ ? क्या बात है ?" दादा हड़बड़ाकर उसकी ओर लपक

गए। तुरसन ने अपनी आपबीती दादा को कह सुनाई। दादा ने सांप को एक नजर देखा और कहा, "तुम दोनों ने जो बातें कहीं वे सब झूठी हैं!"

"दादा, आप भी मेरी बात पर विश्वास नहीं करते?" तुरसन को आश्चर्य हुआ।

"बच्चे, तुम मूर्ख हो! सुई की नोंक जितनी छोटी इल्ली इतने बड़े सांप के रूप में कैसे बदल सकती है?" फिर उन्होंने सांप की ओर मुड़कर कहा, "सांप भाई, अच्छा हो यदि तुम स्वयं मुझे बताओ कि तुम किस प्रकार इतने बड़े सांप के रूप में बदले।"

सांप ने कहा, "मैं पहले एक छोटी इल्ली था। मुझे उस संदूक में काफी लम्बे समय तक बन्द कर दिया गया था। इसने मुझे पर दया की और मुझे संदूक से बाहर निकाला। जब मैंने सूर्य की किरणें देखीं और ताजा हवा में सांस ली, तो मैं एक बड़े सांप में बदल गया। इसने मुझे जीवित रहने दिया, मगर मैं भूख से मरता हुआ कैसे जी सकता हूं? मुझे खाने की कोई भी चीज नहीं मिली, इसलिए मैं इसे खा जाऊंगा, हालांकि वह एक दयालु आदमी है।"

दादा ने क्रोध से कहा, "तुम झूठ बोलते हो! मैं जानना चाहता हूं कि तुम किस प्रकार एक बड़े सांप के रूप में बदले। यह कदापि संभव नहीं हो सकता! अन्यथा, तुम पुनः उसी संदूक में घुसो और फिर एक बार बदल कर मुझे दिखाओ! जब तक मैं अपनी आंखों से तुम्हें सचमुच बदला हुआ नहीं देख लेता, तब तक मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकता!"

इसके पश्चात, बड़े सांप ने फिर एक बार सिर उठाकर, पहले दाईं ओर और फिर बाईं ओर चार चक्कर लगाकर स्वयं को सुई की नोंक जैसी छोटी इल्ली के रूप में बदल लिया और संदूक में जा घुसा। दादा पातुर ने अपनी छड़ी से जमीन पर पड़े ताले की ओर इशारा किया, तो तुरसन को शीघ्र ही उनका मतलब समझ में आ गया। उसने तुरंत ही ताला उठाकर उसे संदूक पर लगा दिया।
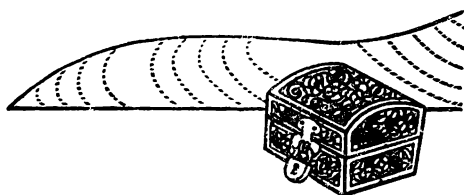
इस बार तुरसन ने अपने दादा का उपदेश याद किया। वह गधे को खींचते हुए दादा के पास आया और उन्हें सहारा देकर गधे पर चढ़ा दिया। इसके बाद वह स्वयं गधे के पीछे पीछे चलता जा रहा था। दादा ने अपने पोते में नई बुद्धि आ जाने के कारण प्रसन्नतापूर्वक अपना मनपसंद रवाब बजाना शुरू किया, और तुरसन भी उनके पीछे चलते हुए खुशी से गा रहा था :

"दुनिया में सबसे अधिक मूल्यवान वस्तुएं क्या हैं?
नमदा बूट, पपड़ीदार मालपुए, भेड़ के फरवाला जाकेट।
इनसे भी अधिक मूल्यवान और क्या-क्या हैं?
मनुष्य की कृपा होती कहीं अधिक मूल्यवान।
सस्ते दामों पर कभी बिकती नहीं दयालुता,
अर्पित की जाती नहीं कभी अंधाधुंध यह।
दैत्य और दानवों पर दिखलाओ मत दया,
चाहे वे दिखने में बेहद मृदु, सौम्य हों।"

पाएरिन पहलवान

(मंगोल जाति)

बहुत पहले पाएरिन बैनर (भीतरी मंगोलिया का जिला) में दूध दोहने वाली बुढ़िया रहती थी। उसका इकलौता बेटा था जो बचपन से ही कुश्ती लड़ना पसंद करता था। उसने बेटे के लिए चमड़े की एक छोटी थैली सी दी, ताकि वह घास के मैदान में भेड़ चराते समय उससे खेल सके।

यह बच्चा घास के मैदान में पहुंचते ही थैली में बालू भर कर पटकने लग गया। पलक मारते ही कुछ साल बीत गए और वह बड़ा हो गया।

अब चमड़े की थैली उसके लिए बहुत हल्की हो गई थी, इसलिए उसने चमड़े का एक नया बड़ा बोरा सिलवाया और पहले की ही तरह उसमें बालू भर-भरकर पटकता रहा। कई सालों बाद वह और भी अधिक तगड़ा हो गया। वह बालू से भरे बोरे को आसानी से अपने सिर से ऊंचा उठा सकता था और उसे बहुत दूर तक फेंक सकता था, अथवा दौड़ते हुए आकर खड़े हुए बोरे को जांघ से छूकर ही गिरा दे सकता था। हर बार, ऐसा कर वह आनन्द से सराबोर हो जाता था।

पाएरिन बैनर का वार्षिक "देवता-पूजा" पर्व आ गया। उसने अपनी माता से पर्व के अवसर पर आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेने की चिरौरी की। माता ने उसकी मांग मान ली और इसके लिए राजा के पास अनुमति लेने गई। फलत: राजा ने उसे कुश्ती दल का सदस्य होने की स्वीकृति दे दी और उसे उसके वयस्क अवस्था में प्रवेश होने के उपहार स्वरूप चमड़े का एक टूटा-फूटा पुराना कवच और एक जोड़ा पुराने जूते भी प्रदान किए।

उसने कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लिया और सभी पहलवानों को जीतकर सर्वश्रेष्ठ

पहलवान की उपाधि प्राप्त की। यह देखकर पाएरिन राजा ने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए इस नौजवान की ओर इशारा करते हुए लोगों से कहा, "यह मेरा गड़रिया है।" उस दिन से राजा ने उसे भेड़ चराने के काम से हटा लिया और उसे अपना पेशेवर पहलवान बना दिया।

तब से लगातार तीन सालों तक उसने "देवता-पूजा" पर्व की कुश्ती प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उसकी ख्याति दूर और निकट के बैनरों में फैल गई, सब लोग उसे "पाएरिन पहलवान" के नाम से पुकारने लगे।

उस वर्ष, ऊच्मूछिन बैनर के राजा का 50वां जन्मदिवस था। उसने अपना जन्मदिन मनाने के लिए अन्य बैनरों के राजाओं को निमंत्रण दिया। पाएरिन बैनर के राजा ने उसके जन्मदिन पर बधाई देने के लिए बहुत से उपहार तैयार किए। साथ ही जन्म-दिवस-समारोह में अपने पाएरिन बैनर का रोब दिखाने के लिए उसने अपने उस पेशेवर पहलवान को बुलवाया और उससे कहा :

"मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि तुम मेरे प्रतिनिधियों के साथ ऊच्मूछिन राजा के जन्म-दिवस-समारोह में भाग लेने जाओ। तुम्हें कुश्ती प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिलना ही चाहिए, अन्यथा मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा!" उसने उसे एक लगाम दी जिसका अर्थ था कि उसे प्रथम पुरस्कार के रूप में एक अच्छे घोड़े को खींच कर ले आना होगा।

उसे मालूम था कि अगर वह हार गया, तो राजा उसका सिर काट देगा। वह राज-महल से उदास बना निकला और अपने घर लौट आया। उसने यह बात अपनी माता को बताई। माता ने उसे आशीर्वाद दिया। इसके बाद वह दुःखी मन से माता से विदा ले, राजा के अन्य प्रतिनिधियों के साथ जन्मस्थान छोड़कर ऊच्मूछिन के लिए रवाना हो गया।

ऊच्मूछिन पहुंचकर वह प्रतिनिधियों के साथ राजा से भेंट करने गया। उसी दिन, ऊच्मूछिन राजा ने सभी बैनरों के राजाओं द्वारा उसके जन्मदिन पर बधाई देने के लिए भेजे गए प्रतिनिधियों के स्वागत-सत्कार में एक शानदार भोज का आयोजन किया था। मेहमानों का अभिनंदन स्वीकार करने के बाद ऊच्मूछिन राजा ने उससे पूछा :

"ओह, तुम ही मशहूर 'पाएरिन पहलवान' हो न?"

"जी हां, महाराज।" उसने सिर झुकाकर जवाब दिया।

"हमारे यहां आते समय तुम्हारे राजा ने तुमसे क्या कहा था?" ऊच्मूछिन राजा ने फिर पूछा।

"महाराज की मेहरबानी से," उसने कहा, "मेरे राजा ने मुझे कुश्ती प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने का प्रयास करने को कहा था।"

"तो तुम ने क्या योजना बनाई है ?" ऊचूमूछिन राजा ने पूछा।

"मैं महाराज द्वारा पुरस्कृत किए जाने वाले घोड़े पर सवार होना चाहता हूं।" उसने बिना हिचकिचाए कहा।

यह जवाब सुनकर ऊचूमूछिन राजा बहुत क्रुद्ध हो गया। उसने सोचा, "हुं, कमीने, तुझे ऊचूमूछिन राजा को तुच्छ समझने का साहस कैसे हुआ ?" उसने उसकी शक्ति की थाह लेने के लिए भोज की मेज पर से बैल की एक बड़ी रीढ़ की हड्डी उठाकर उसकी ओर फेंक दी और उसे हड्डी के अन्दर का रस चूसने का आदेश दिया। उसने तुरंत हड्डी को थाम लिया और राजा के प्रति शीश नवा कर आभार प्रकट किया। वह दोनों हाथों से हड्डी तोड़ ही रहा था कि अचानक ऊचूमूछिन राजा के सेवक ठहाका मारकर हंस पड़े। उन्होंने उसकी हंसी उड़ाते हुए कहा :

"छि:, तुम्हें चाकू चाहिए या कुल्हाड़ी ?!"

"यह भी क्या कोई मुश्किल काम है ? मुझे न तो चाकू की आवश्यकता है, और न कुल्हाड़ी की।" यह कहते हुए उसने केवल छ: उंगलियों से ही उस बड़ी हड्डी के, बीच से दो टुकड़े कर दिए। ऊचूमूछिन राजा भौंचक्का रह गया। उसने मन ही मन सोचा कि "पाएरिन पहलवान" सचमुच ही बलवान है, यथा नाम तथा गुण।

ऊचूमूछिन राजा ने उसे प्रथम पुरस्कार न मिलने देने के उद्देश्य से जानबूझकर कुश्ती प्रतियोगिता को एक महीने के लिए स्थगित कर दिया और अपने आदमियों को भेजकर जगह-जगह जाकर मशहूर पहलवानों की तलाश कराई। 570 जोड़े पहलवानों के जमा होने के बाद उसने कुश्ती प्रतियोगिता का उद्घाटन घोषित किया।

कुश्ती प्रतियोगिता आरंभ हुई। "पाएरिन पहलवान" ने प्रचंड बवंडर और आग की तरह थोड़े ही समय में अनेक प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ दिया। ऊचूमूछिन राजा ने स्थिति को नाजुक देखकर हड़बड़ा कर एक-एक जोड़े की प्रतियोगिता को बन्द करने का आदेश दिया। उसने अपने सभी पहलवानों को एकत्रित किया और उनसे बारी-बारी से एकाकी "पाएनिर पहलवान" से भिड़ाया, ताकि "पाएरिन पहलवान" को थकाकर हराया जा सके। ऊचूमूछिन राजा का यह उपाय कुश्ती के नियमों का उल्लंघन था। इससे बहुत से लोगों को असंतोष हुआ। किन्तु लोगों के पास गुस्सा पी जाने के अतिरिक्त कोई चारा न था।

यद्यपि ऊचूमूछिन राजा ने "पाएरिन पहलवान" को हराने के लिए तरह-तरह

के उपाय सोच निकाले, फिर भी उसके पहलवानों में ऐसा एक भी नहीं था जो "पाए-रिन पहलवान" का मुकाबला कर सकता।

प्रतियोगिता के प्रारंभिक दिनों में "पाएरिन पहलवान" अपने मूल स्थान पर ही खड़ा होकर प्रतिद्वंद्वी को गिरा देता था, लेकिन आगे चलकर बलशाली प्रतिद्वंद्वी अधिक से अधिक होते जाने के कारण उसे उनसे लड़ने में ज्यादा समय लगाना पड़ा। अंतिम प्रतिद्वंद्वी ऊचूमूछिन राजा का कृपापात्र था। यह स्वर्ण कवच पहने हुए था। ये दोनों पहलवान लगातार तीन दिन तक लड़ते रहे। उनके जूते और कवच फट गए किन्तु हार-जीत का निर्णय नहीं किया जा सका। ऊचूमूछिन राजा के पहलवान ने "पाएरिन पहलवान" की असावधानता का लाभ उठा कर अचानक उसे जमीन पर पटकने की कोशिश की, लेकिन "पाएरिन पहलवान" टस से मस न हुआ, मानो उसकी जड़ें जमीन में जमी हों। अंत में उसने पूरी शक्ति लगाकर दोनों हाथों से स्वर्ण कवच पहने प्रतिद्वंद्वी को ऊंचा उठा कर जमीन पर पटक दिया।

ऊचूमूछिन राजा को मजबूरन प्रथम पुरस्कार के रूप में घोड़े को "पाएरिन पहलवान" को देना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसने बदनीयती से उसे एक ठेलागाड़ी भर कर स्वर्ण सिक्के भी दिए और कहा :

"यहां से दस मील दूर मेरा लाल सांड़ पलता है। तुम स्वर्ण सिक्कों से भरी ठेलेगाड़ी को वहां ढकेलते हुए ले जाओ, और वहां पहुंचने के बाद तुम सांड़ जोतकर गाड़ी हांकते हुए घर लौट जाओ। अगर तुम स्वर्ण सिक्कों से भरी ठेलेगाड़ी को सांड़ पालने की जगह तक नहीं ढकेल पाए, तो मैं राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने के अपराध में तुम्हारा सिर काट दूंगा!"

"पाएरिन पहलवान" ने राजा के प्रति शीश नवा कर कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद वह स्वर्ण सिक्कों से भरे ठेले को ढकेलते हुए जमे पांवों से राजा के निर्दिष्ट स्थान की ओर चल पड़ा।

उसने सांड़ के बाड़े के नजदीक आ कर देखा कि विस्तृत बाड़े में सचमुच एक लाल सांड़ खड़ा था जो देखने में साधारण सांड़ों से कहीं अधिक हिंस्र लग रहा था। उस सांड़ की आंखें आग जैसी लाल थीं और उसके दोनों सींग मनुष्य के लहू से सने हुए थे। उस समय यह सांड़ श्वासोच्छ्वास लेकर व्यग्रतापूर्वक बाड़े में चक्कर लगाता हुआ प्रतीक्षा कर रहा था कि किसी मनुष्य को उसके खाने के लिए पहुंचाया जाय।

इस समय "पाएरिन पहलवान" ने सोचा, "यदि मैं सांड़ से हार कर घर लौट गया, तो पाएरिन राजा मेरा सिर काट देगा। यदि मैंने बाजी जीत ली, तो ऊचूमूछिन राजा

मुझे मारने का षड़यंत्र रचेगा। स्पष्टत:, ये निष्ठुर राजा मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे. . ."
उसने आगे सोचा, "यदि मैंने ऊचूमूछिन राजा के मौजूदा षड़यंत्र को निष्फल कर दिया, तो कदाचित मेरे प्राण बच जाएंगे।" उसने अपना दिल कड़ा कर सांड़ के बाड़े का दरवाजा खोला और उसके अन्दर प्रवेश किया।

उस लाल सांड़ को मनुष्य का मांस खाने की आदत थी। जब उसने मनुष्य को अन्दर प्रवेश करते देखा तो वह पहले तो तनिक पीछे की ओर हटा और फिर सिर झुका-कर चारों खुर उठाकर जोर से आगे की ओर झपटा। "पाएरिन पहलवान" हड़बड़ा कर बगल में हटा और फिर उसने तेजी से आगे बढ़ कर उसकी पूंछ पकड़ी और भरपूर शक्ति से उसे पीछे की ओर खींचा। लाल सांड़ भी उसके हाथों से छूटने के लिए जी

जान से आगे की ओर भागा। इस तरह दोनों पक्ष आपस में काफी समय तक उलझे रहे। खींचते-खींचते "पाएरिन पहलवान" के मन में एक विचार आया। उसने अचानक सांड़ की पूंछ को छोड़ दिया। सांड़ एकाएक सिर के बल गिर गया। मौका पाकर "पाएरिन पहलवान" एक उछाल में सांड़ की पीठ पर जा चढ़ा और उसका एक सींग उखाड़कर मुक्का घुमा कर उसे जोर से पीटने लगा। हिंस्र सांड़ आखिरकार उसके द्वारा वश में कर लिया गया।

इसके बाद वह उसे जोत कर गाड़ी हांकते हुए अपने घर की ओर लौट गया।

किन्तु निष्ठुर ऊचूमूछिन राजा उसे जीवित नहीं छोड़ सकता था! उसने कामोन्मत्त

दो ऊंटों को खोल कर उसका पीछा कराया।

इन दो ऊंटों में एक "हाङ काए" था और दूसरा "मोकोइ"। "हाङ काए" का स्वभाव था कि वह प्रत्येक वस्तु से सिर ऊंचा करता हुआ जी जान लगा कर जा टकराता था, जबकि "मोकोइ" प्रत्येक मिलने वाली वस्तु से सिर को जमीन से सटा कर तेजी से उसकी ओर लपक जाता था और उसे निगल लेता था।

"पाएरिन पहलवान" हर्षोल्लास से भरा लाल सांड़ को हांकते हुए चला जा रहा था और सोच रहा था कि वह शीघ्र ही पुन: अपनी माता से मिलेगा! तभी उसे अचानक दो पागल ऊंट पीछे से हुंकार करते दौड़ आते दिखाई दिए। वह हड़बड़ा कर गाड़ी से नीचे उतरा और दुश्मनों से लड़ने के लिए एक लौह-दंड लेकर रास्ते के किनारे जा खड़ा हुआ। जब "हाङ काए" सिर ऊंचा करता हुआ उस पर झपटा, तो वह तेजी से बगल में हटा और फिर उसने आगे की ओर लपक कर उसकी पीठ को तोड़ दिया। इसके फौरन बाद उसने उससे टकराने दौड़ आए "मोकोइ" के मुंह को भी चूर-चूर कर दिया। इस तरह दोनों ऊंट आखिरकार जमीन पर गिरकर मर गए।

वह फिर आगे बढ़ गया। उसने सोचा कि अब वह निश्चिततापूर्वक घर लौट सकता है। पर किसे पता था कि ऊचूमूछिन राजा ने पहले ही एक सौ बंदूकचियों को ऊचूमूछिन और पाएरिन बैनरों के सीमांत क्षेत्र पर घात में बैठा दिया था। जब वह अंधेरी रात में सीमा से गुजर रहा था, उन दुष्टों ने उसे मार डाला।

अपने पहलवान की हत्या का समाचार सुन कर भी पाएरिन राजा पर कोई प्रभाव न पड़ा। उसने सोचा कि जो हुआ सो तो हो गया। एक साधारण गड़रिये के लिए ऊचूमूछिन राजा से दुश्मनी रखने से कोई लाभ नहीं होगा।

किन्तु "पाएरिन पहलवान" सदा के लिए चरवाहों के हृदय में जीवित रहता है। कोटि कोटि चरवाहे पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसकी याद करते रहते हैं। उसकी वीरतापूर्ण कहानी आज तक समस्त चरवाहों की जबान पर रहती है।

ऊलानकालू

(मंगोल जाति)

बहुत पहले मंगोलियाई घास के मैदान पर एक बहुत ऊंचा पर्वत था जिसका नाम मङ्शी पर्वत था। वह कोहरे और बादलों से घिरा रहता था और उसका शिखर साल भर दिखाई नहीं देता था। उस पर सदाबहार देवदार और चीड़ उगते थे, और प्रपात की धारा एक बड़ी नदी में गिर जाती थी। उसकी तलहटी में प्रपात के निकट एक गुफा में चार्काल नामक लकड़हारा रहता था।

चार्काल एक निपुण और हृष्ट-पुष्ट आदमी था। वह एक घोड़े को खरगोश की ही भांति अपने वश में कर ले सकता था! किसी भी बड़े पेड़ को एक ही हाथ से झटका देकर हिला सकता था। इसके अतिरिक्त वह इतनी कुशलता से मंगोलियाई वीणा भी बजा सकता था जो हरेक को बहुत मर्मस्पर्शी लगती थी।

जब वह पर्वत पर हर रोज जलावन काटने जाता, तो वह अपनी वीणा अवश्य साथ ले जाता था। जब वह थक जाता, तब वह वीणा बजाने लग जाता था और संगीत से प्रेरित हो, उत्साहपूर्वक जलावन काटना जारी रखता था। समय बीतता गया और उसके एकाकी जीवन में यह बाजा ही उसका एकमात्र साथी बन गया।

एक गहरी रात में उसकी गुफा से वीणा की आवाज आई और समची घाटी में गूंज उठी। इस आवाज से पक्षी अपनी थकान और जंगली जानवर अपने शिकार की खोज भूल गए। यह सुरीली आवाज पर्वतीय गुफा में रहने वाली सर्पात्मा की बेटी ऊलान-कालू के कान में भी पड़ी। इससे मंत्रमुग्ध हो, ऊलानकालू ने स्वयं को एक खूबसूरत युवती के रूप में बदल लिया और वह अपनी गुफा छोड़कर चार्काल की गुफा में आ गई। वह चार्काल की बगल में चुपचाप खड़ी हो गई। चार्काल पूरे जी से वीणा बजा

रहा था, अतएव उसे कोई अन्दर आता दिखाई नहीं पड़ा।

जब चार्काल ने अपना वादन समाप्त किया, वह उसके सामने आई और बोली, "आपने बहुत अच्छी तरह से बजाया है। मैं आपकी वीणा को और आपको पसद करती हूं। क्या आप मुझे अपने पास हमेशा के लिए ठहरने और खुशी भोगने की अनुमति दे सकते हैं?"

चार्काल ने आश्चर्य में उसे नीचे से ऊपर तक देखा और जल्द ही उसकी सच्ची मनोकामना समझ ली। उसने मुस्कराकर प्रगट कर दिया कि उसने उसका प्रेम स्वीकार कर लिया है। तब से चार्काल जलावन काटने में अकेला नहीं रह गया, एक खूबसूरत युवती भी उस की बगल में खड़ी-खड़ी उसकी सहायता किया करती थी। वे दोनों एक साथ वीणा के संगीत का भी आनन्द लिया करते थे।

किन्तु सुख तो कष्टों की उफनती लहरों पर विजय पाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। उन दोनों के संबंध की बात ऊलानकालू के पिता को शीघ्र ही पता चल गई। ऊलानकालू का पिता क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने अपनी बेटी को चार्काल से कोई संपर्क न रखने का आदेश दिया और निर्दयतापूर्वक उसे चार्काल से मिलने से रोक दिया गया।

ऊलानकालू अपने प्रेमी को न देख सकने के कारण दिन-पर-दिन दुबली होती गई और अंत में बीमार पड़ गई। उसके पिता ने उसकी बीमारी का कारण समझा और एक उपाय सोच निकाला। उसने कहा, "बेटी, यदि तुमने चार्काल से सगाई कर ली है, तो मैं तुम्हारी मनोकामना पूरी करने को तैयार हूं, बशर्ते कि तुम ठीक हो जाओ।"

यह सुनने के कुछ दिन बाद से ही ऊलानकालू सचमुच ठीक होने लगी। इस समय, उसके पिता ने बदनीयती से कहा, "अब तो तुम ठीक हो गई हो। तुम चार्काल को हमारे घर क्यों नहीं ले आतीं? हम तुम दोनों की शादी के लिए एक मुहूर्त चुनेंगे!"

यह सुन कर ऊलानकालू बेहद खुश हो गई। कुछ दिनों के बाद चार्काल उसकी पर्वतीय गुफा में आ गया। लेकिन दूसरे दिन ऊलानकालू के पिता ने फिर बदनीयती से कहा, "जमाईजी, तुम मेरे पूर्वी कमरे में ही सो जाओ!"

"क्या? पूर्वी कमरा?" ऊलानकालू को डर के मारे पसीना आ गया, क्योंकि वह जानती थी कि पूर्वी कमरे में एक विशाल सांप पलता है जो गहरी रात में मनुष्य का खून चूस लेता है। असंख्य लोगों की जान इस सांप द्वारा ले ली गई थी। उसने सोचा कि वह यह कदापि चुपचाप खड़ी नहीं देख सकती कि चार्काल की हत्या हो जाने दे। चार्काल उसी के लिए तो यहां आया था।

पिता की असावधानी का लाभ उठाकर वह चोरी-छिपे चार्काल के पास आई और उसे एक तलवार और तेल से भरा "चूला" (मंगोल भाषा में बौद्ध दीपक) दिया।

उसने कहा, "आप मेरे पिता से सतर्क रहें। वे आपकी हत्या करवा देना चाहते हैं। आज रात को आप सोते समय 'चूला' जलाकर उसे अपने पैरों के बीच रजाई के नीचे रख लें। तलवार को अपने हाथ के पास ही रखें। 'चूला' बुझाने के बाद आप तीन गहरी सांसें लें, एक पैर से रजाई को एक तरफ हटाएं और आंखें मूंदकर तलवार से छत की ओर तीन बार मारें। याद रखें, किसी भी हालत में अपनी आंखें न खोलें!"

रात में जब चार्काल ने "चूला" बुझाने के बाद तीन गहरी सांसें लीं और एक पैर से रजाई को हटाया, सहसा "चूला" ने पूरे कमरे को प्रकाशमान कर दिया। उसने सहज प्रेरणा से आंखें खोलकर छत की ओर देखा कि एक विशाल सांप अपना रक्तवर्ण

मुंह खोले, फेन उगलता ग्रौर पूंछ पटकता नजर ग्राया। वह घबरा कर "हाय" चीखा ग्रौर तलवार का प्रयोग भूल कर पहले ही बेहोश हो गया। चूंकि कमरा प्रकाशमान था, सांप को हिंसा करने का साहस नहीं हुग्रा। वह खिसक गया।

दूसरे दिन सुबह, ऊलानकालू का पिता यह सोच कर कि चार्काल पहले ही सांप द्वारा निगल लिया गया होगा, बड़ी प्रसन्नतापूर्वक कमरे में घुसा। किंतु जब उसने चार्काल को जीवित देखा, वह स्तंभित रह गया। थोड़ी देर बाद उसने एक ग्रौर योजना बना ली ग्रौर कहा, "दामाद बेटे, तुम उत्तर पर्वत के जंगल में जाकर मेरे लिए कुछ जलावन काटकर ले ग्राग्रो।"

चार्काल के जाने से पहले ऊलानकालू फिर एक बार चोरी-चोरी उसके पास ग्राई ग्रौर उसे लाल धागों से बंधे तीन लोहे के छल्ले दिए। वह बोली, "उस जंगल में सारे पेड़ एकदम सीधे खड़े हैं। वहां पहुंचने के बाद ग्राप इन तीन लौह छल्लों से तीन पेड़ों को बांध लें ग्रौर उन पर तीन बार कुल्हाड़ी मारें। इसके बाद ग्राप फौरन ही घर की ग्रोर भाग ग्राएं। सौ कदम भागने के बाद ग्राप काटे गए तीनों पेड़ों को लादने वापस जाएं।"

इस बार चार्काल ने ऊलानकालू की बातों को भली भांति याद रखा। वहां पहुंचने के बाद उसने वैसा ही किया जैसे कि ऊलानकालू ने उससे कहा था। सौ कदम भागने के बाद उसने मुड़ कर जंगल की तरफ देखा तो उसे सभी पेड़ लम्बे सांपों के रूप में बदले नजर ग्राए। लम्बे सांप उसके द्वारा मारे गए तीन सांपों को लाद कर उसका पीछा कर रहे थे। लेकिन, जब इन सांपों ने उसे वापस लौटता देखा, वे सब तीन मरे सांपों को छोड़कर वापस भाग गए। चार्काल मारे गए तीन सांपों को कंधे पर लाद कर बड़ी मुश्किल से घर लौटा। ऊलानकालू के पिता को विश्वास था कि इस बार चार्काल निश्चय ही मर गया होगा। किन्तु जब उसने चार्काल को ग्रपना बोझ लादे लौटते देखा तो वह फिर एक बार ग्राश्चर्य में पड़ गया। किंतु, पलक मारते ही उसने एक ग्रौर दुष्ट उपाय सोच निकाला।

उसने कहा, "तुम सचमुच एक योग्य दामाद हो। मैं तुम्हें पसंद करता हूं। मैं तुम दोनों की मनोकामना पूरी करने को तैयार हूं। कल तुम पश्चिम पर्वत पर मेरे एक रिश्तेदार को निमंत्रण करने जाग्रो ताकि वह विवाह की तैयारियों में हमारी मदद कर सके।"

यह कथित "रिश्तेदार" वास्तव में एक राक्षसराज था। ऊलानकालू के पिता ने पहले ही ग्रपनी बेटी की इस राक्षसराज से सगाई कर दी थी। इस बार उसने राक्षस-

राज को चार्काल की हत्या करने के लिए क्रोधित कर देना चाहा। लेकिन उसकी बात ऊलानकालू द्वारा सुन ली गई। ऊलानकालू ने राक्षसराज से अपनी सगाई करने की सारी प्रक्रिया चार्काल को सुनाई और उसे तीन अंडे दिए। वह बोली, "पश्चिम पर्वत जाने के रास्ते में आप प्रत्येक सौ कदम चलने पर एक अंडे को जमीन में गाड़ दें। राक्षसराज के घर में पहुंचने के बाद आप निमंत्रणपत्र को उसकी ओर फेंक कर तुरन्त ही उल्टे पांव घर की तरफ भाग आएं।"

चार्काल पश्चिम पर्वत पहुंचा। रात गहरी हो गई थी। वह अंडों को जमीन में गाड़ने के बाद चोटी पर स्थित लाल घर की ओर बढ़ता गया। लाल घर में लाल और हरे प्रकाशों की तरंगें उठ रही थीं। एक सांवला राक्षस अपने दोनों कानों को पकड़कर बारी-बारी से दो लाल और हरी गेंदों को अपने मुंह में खींचता और बाहर फूंकता दिखाई पड़ा। चार्काल कमरे में प्रविष्ट हुआ और उसने निमंत्रणपत्र को जमीन पर फेंक दिया। वह चिल्लाया, "पूर्व पर्वत के महाराज आपको अपनी पुत्री के विवाहोत्सव में भाग लेने का निमंत्रण करते हैं!" यह कहकर वह उल्टे पांव बाहर चला आया। सांवला राक्षस फौरन उसका पीछा करने लगा। राक्षस उसके निकट पहुंच कर एक हाथ बढ़ाकर उसकी गर्दन पकड़ने ही वाला था कि उस जगह में जहां एक अंडा गाड़ा गया था और जहां चार्काल अभी-अभी आ पहुंचा था, मुर्गे ने तीन बांगें दीं। राक्षस-राज में पीछा जारी रखने का साहस नहीं हुआ और उसे वापस पर्वत पर लौट आना पड़ा। इस तरह चार्काल खतरे से बच कर पश्चिम पर्वत से भाग निकला।

चार्काल के लौटने के मार्ग में ऊलानकालू उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे आता देख कर उसने कहा, "अब आप वापस घर नहीं लौट सकते। घर लौटने पर आपकी हत्या कर दी जाएगी। मेरे पिता आप को जिंदा नहीं छोड़ेंगे, बल्कि वे मुझे भी राक्षसराज से शादी करने के लिए पश्चिम पर्वत पर भेज देंगे। अपने सुख के लिए हमें शीघ्रतापूर्वक इस जघन्य कारागार से निकल जाना चाहिए और घर बसाने के लिए एक दूसरी जगह ढूंढ़नी चाहिए।" यह कहती हुई उसने अपने वस्त्र से एक छोटी लाल मंजूषा निकाली और उसे चार्काल के हाथ में थमा कर कहा, "एक पुरुष और एक महिला का एक साथ यात्रा करना असुविधाजनक होता है। इसलिए मैं अपने बदन को छोटा बना लूंगी और उस मंजूषा में घुस जाऊंगी। जब आप रहने की उचित जगह ढूंढ़ कर मंजूषा को खोलेंगे, मैं इसमें से बाहर निकल आऊंगी।"

ऊलानकालू की बात अभी खत्म ही हुई थी कि काले धुंए का एक टुकड़ा उस पर छा गया। धुआं छंटने के बाद वह अदृश्य हो गई। चार्काल मंजूषा लिए पूरी रात चलता

रहा। दूसरे दिन, उसे संदेह हुआ कि ऊलानकालू मंजूषा में है भी या नहीं। थोड़ी देर आगा-पीछा करने के बाद उसने मजूषा खोल ली।

मंजूषा में लाल रेशमी कपड़े वाली छोटी सी पोटली रखी थी। उसने पोटली की पहली परत खोली तो उसे ऊलानकालू के जूते दिखाई दिए। फिर दूसरी परत खोली तो ऊलानकालू का सारा शरीर दिखा।

इस बार ऊलानकालू चार्काल को देखकर पहले जितनी खुश नहीं नजर आ रही थी। उसने रोते हुए चार्काल से कहा, "गजब हो गया! हम दोनों को जुदा होना पड़ेगा। मेरे पिता जान गए हैं कि मैं जीवित हूं। वे मुझे पकड़ने आएंगे।" थोड़ी देर रुकने के बाद उसने फिर कहा, "यदि आप मुझे बचाना चाहते हैं, तो आज से तीसरे दिन सुबह आप उसी गुफा में मुझे ढूंढ़ने वापस लौटें जहां हम रहते हैं। इसके लिए आपको केवल दो चीजों की आवश्यकता पड़ेगी। पहली चीज है एक साहसी वीर हृदय। गुफा में पहुंचने के बाद आप चाहे कुछ भी देखें, आप कदापि न डरें। राक्षसों के सामने आप तनिक भी संकोच या कायरता हर्गिज न दिखाएं। तब वे आप से डरेंगे। दूसरी चीज है, दो चूज़े। मेरे पिता की गुफा के नीचे और कई गुफाएं हैं। मुझे सबसे भीतरी गुफा में बन्द किया जाएगा। जब आप गुफा के गलियारे से गुजर कर नीचे की ओर चलने लगेंगे, तो दो तलवारें आपकी तरफ उड़कर आएंगी। ये दोनों तलवारें बिना किसी का खून किए जमीन पर नहीं पड़तीं। इसलिए आपको उन दो चूजों को अपने सिर के ऊपर उठा लेना होगा, और इस तरह तलवारें चूजों की हत्या कर जमीन पर गिर जाएंगी। इसके बाद आप तलवारों को उठा कर फिर आगे बढ़ें। वहां की हर चीज इन तलवारों से डरती है, यहां तक कि उस जजीर को भी, जिससे मुझे बांधा जाएगा, सिर्फ इनसे ही तोड़ा जा सकता है।"

उसकी बात खत्म होते ही आकाश में काला बादल छा गया और बिजली चमकने लगी। बिजली का अंतिम प्रकाश गायब होने के बाद आकाश खुल गया और ऊलानकालू भी ओझल हो गई।

इसके पश्चात चार्काल अपनी मंगेतर को बचाने के लिए रवाना हो गया। तीसरे दिन सूर्योदय से पहले वह उस गुफा में आ पहुंचा जहां वे पहले रहते थे। उस समय वहां अनेक प्रकाशमान दीपक जल रहे थे, शोर मच रहा था। प्रत्येक वस्तु शराब की तीखी गंध से सनी थी। नशे में चूर राक्षस लड़खड़ाते हुए आ-जा रहे थे। किसी को तनिक भी पता चले बिना ही चार्काल गुफा में प्रविष्ट हुआ और भीतर की तरफ चला आया जहां ऊलानकालू का पिता और राक्षसराज दोनों नशे में चूर हो कर जमीन पर गिरे हुए

थे। ये राक्षस शराब क्यों पी रहे थे? वास्तव में ऊलानकालू का पिता अपनी बेटी और राक्षसराज के विवाह-संस्कार का आयोजन कर रहा था।

चार्काल भूमिगत गुफा के मुंह तक आ पहुंचा। यह गुफा छोटी और काफी अंधेरी थी। उसे ऊलानकालू की बात याद आई : "आप एक साहसी हृदय के साथ वहां जाएं।" वह साहस बटोर कर गुफा के अन्दर घुस गया। वह गुफा में कुछ कदम आगे बढ़ा ही था, तभी तेज हवा का झोंका बालू लिए उसकी तरफ चला आया और दो चमकदार तलवारें भी साथ ही साथ उड़ आईं। उसने शीघ्रतापूर्वक दोनों चूजों को अपने सिर के ऊपर उठाया। कड़कड़ की आवाज के साथ दोनों चूजों के सिर जमीन पर गिर गए और हवा भी रुक गई। वह दोनों तलवारें उठा कर फिर आगे बढ़ा। एक दूसरी गुफा के मुंह पर दो लम्बे सांप अपने रक्तवर्ण मुंह खोले और फेन उगलते दिखाई दिए। उसने एक तलवार घुमाकर जोर से उन पर वार किया और उनका अंत कर दिया। इसके फौरन बाद वह अंतिम गुफा की ओर दौड़ गया। उस गुफा में ऊलानकालू को बन्द किया गया था। जब ऊलानकालू ने उसे तलवारें ले कर साहस के साथ अपनी तरफ आता देखा, तो वह खुशी से हाथ हिलाने लगी और उसकी आंखों में प्रसन्नता के आंसू भर आए।

चार्काल ने तलवार से जंजीर काट दी और ऊलानकालू को बचा लिया। इसी समय ऊलानकालू का पिता और राक्षसराज दिखाई दिए। उन्होंने चार्काल और ऊलानकालू को गालियां दीं। चार्काल और ऊलानकालू अलग-अलग तलवारें उठाकर उनकी तरफ झपटे। ये दोनों राक्षस आत्मरक्षा के लिए तलवारें ढूंढ़ने दौड़े, किन्तु वे कैसे जान सकते थे कि वे दोनों तलवारें पहले ही चार्काल और ऊलानकालू के हाथों में पड़ चुकी थीं। स्थिति को नाजुक देख कर उन्होंने भाग जाने की कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो गई थी। चार्काल और ऊलानकालू ने आगे बढ़ कर उन्हें पकड़ा और उनका अंत कर दिया।

इसके पश्चात, चार्काल और ऊलानकालू गुफा से बाहर निकल आए। वे एक साथ पर्वत के नीचे उतरे और प्रसन्नता में भरे सुखमय मानवलोक में आ गए।

दास और नाग-कुमारी

(तिब्बती जाति)

बहुत पहले सिथू नामक स्थान में एक दंपति थूसि* के दास थे। वे न सिर्फ थूसि के लिए खेती, ढुलाई, सेवा आदि के काम करते थे बल्कि निर्जन ऊंचे पर्वत पर जाकर उसके बैल और भेड़ भी चराते थे। उनका जीवन बहुत कठिन था।

अपनी जीवनसंध्या में उनके एक बच्चा हुआ। उसका नाम राङगे रखा गया। अन्य दासों की तरह उन्हें भी अपनी उपेक्षा, तिरस्कार और अत्याचार किए जाने की वजह से सिर्फ अपने बच्चे से ही आशा की एक किरण मिल सकी थी और जिन्दगी का थोड़ा सा आनन्द आया था। इसलिए वे अपने बच्चे को बहुत प्यार करते थे।

लेकिन राङगे की तीन वर्ष की आयु में ही उसके पिता का जी तोड़ मेहनत के कारण देहांत हो गया। तब से उसकी माता को अपने पति के बदले में प्रति दस दिन के बाद थूसि के घर में सामान ढोने, पानी लाने, खेती और अन्य कमरतोड़ काम करने के लिए जाना पड़ता था।

बच्चे की छः वर्ष की आयु होते-न-होते परिवार का जीवन और भी अधिक कठिन हो गया। इसलिए उसकी माता ने उसे एक दूसरे मालिक के यहां भेड़ चराने के लिए भेजा। किंतु, यह बात थूसि को पता लग गई। उसने नाराज होकर कहा, "मेरा दास दूसरे के लिए भेड़ कैसे चरा सकता है? यह विधि-विरुद्ध है। उसे मेरी भेड़ें चराने के लिए बुलवाओ!" मजबूरन उसे थूसि के यहां जाकर भेड़ चरानी पड़ीं। उसकी माता स्वयं भूख झेल कुछ मोटे कूटू के आटे की बचत करके बेटे को ऊंचे पर्वत पर भेड़

---

* तिब्बती जाति का पुश्तैनी मुखिया और क्षेत्र का सर्वोच्च शासक।

चराने जाने के लिए एक-दो टिकियां बना दिया करती थी।

बारह वर्ष की आयु में यह बच्चा आसपास के विषय में थोड़ा-बहुत समझने लग गया था। जब उसने माता को थूसि के लिए इतनी कठोर मेहनत करते देखा, तो उसे बहुत दु:ख हुआ। एक दिन, उसने अपनी मां से कहा, "मां, आप दिन पर दिन बूढ़ी हो रही हैं। पानी लाने, खेती जोतने और ऊंचे पर्वत पर जलावन काटने में अशक्त हो गई हैं। अब आप मुझे अपनी जगह लेने दीजिए!" उस दिन से वह माता की जगह थूसि के घर में काम करने जाने लगा।

जब वह अठारह वर्ष का हुआ, तब तक उसकी माता और भी अधिक कमजोर हो गई थी। उसने सोचा, "बेचारी मां, आप दिन पर दिन बूढ़ी होती जाती हैं। कौन जाने आप संसार में कितने समय तक जीवित रह सकेंगी। अब मैं बड़ा हो गया हूं, मुझे किसी भी हालत में आपका अच्छी तरह से भरण-पोषण करना चाहिए।" थूसि के लिए काम करने के अतिरिक्त उसने पर्वत पर शिकार करना भी शुरू कर दिया। अपने पकड़े गए जानवरों के बदले में कुछ खाद्य, तेल, नमक और अनाज ले कर वह अपनी माता का भरण-पोषण किया करता था।

अपनी प्रखर बुद्धि के कारण राङ्गे शीघ्र ही इस इलाके का प्रसिद्ध शिकारी बन गया। उसने शिकार के जरिए अपना और माता का जीवन सुधारा। आखिर में उसने अपने लिए एक चांदी जड़ी सुन्दर बन्दूक भी खरीद ली। वह बहुधा साल भर एक हिमाच्छादित निकटवर्ती ऊंचे पर्वत पर शिकार करने जाता था। पर्वत की चोटी पर एक बड़ी झील थी, जिसके चारों तरफ अनेक बर्फीले शिखर खड़े थे और जानवरों की मांदों से भरे घने जंगल थे। यह स्थान शिकार के लिए अत्यन्त लाभदायक था, इसलिए वह यथासंभव अधिक जानवरों का शिकार करने के लिए यहां रातें बिताया करता था।

एक दिन, राङ्गे हमेशा की तरह यहां शिकार करने आया। अचानक उसे नजर आया कि झील के तटवर्ती क्षेत्र का दृश्य वैसा नहीं रह गया था जैसा उसने पहले देखा था। तटों पर पड़ी स्फटिकीय सफेद बर्फ की मोटी परत टुकड़े-टुकड़े हो गई थी। लग रहा था मानों वह किसी के पैरों द्वारा रौंदी गई हो।

इस सबसे उसे बहुत आश्चर्य हुआ। अतएव उसने अपनी शिकारी की पैनी दृष्टि से सूक्ष्मतापूर्वक चारों तरफ देखा-भाला। उसे अनगिनत सफेद, काले और भूरे आदि रंगों के पर तथा कुछ छोटी मछलियों के शव बिखरे दिखाई दिए। उसी समय लम्बी गर्दनों वाले भूरे जलपक्षियों का एक विशाल झुण्ड वहां उड़ आया। उनकी संख्या

इतनी अधिक थी कि पूरी सुविस्तृत झील उनसे करीब-करीब ढक गई थी। उनके पंख फड़फड़ाने की आवाज इतनी अधिक हो रही थी मानों एक डरावना बवंडर उठ रहा हो। उन्होंने लहरों में गोता लगाया और जलजतुओं का शिकार किया। जलजंतु भी मानों उनकी चुनौती का सामना करने को तैयार बैठे थे।

विस्मय में भरा राङगे यह सब देखता रहा था। उसने सोचा, "वे युद्ध करते लगते हैं। किन्तु ये हिंस्र पक्षी बर्फीले पर्वतों से यहां आकर इन बेचारी मछलियों से क्यों लड़ रहे हैं? स्पष्टतया, छोटी मछलियां हारती जा रही हैं।" इस अन्याय से क्रोधित होकर उसने शीघ्रतापूर्वक अपनी बन्दूक उठाकर झील में हिंसा कर रहे पक्षियों पर तीन गोलियां चलाईं।

गोली की आवाज बहुत तेज थी। चारों तरफ के बर्फीले पर्वतों से टकराकर उसकी प्रतिध्वनि और भी अधिक तीखी हो गई। क्षण भर में सभी पक्षी चकित होकर पानी से ऊपर निकले और एक दूसरे को आवाज देकर घबरा कर बर्फीले शिखरों के उस पार उड़ गए।

झील वापस अपनी शांत स्थिति में आ गई। केवल कुछ मछलियां पानी में इधर-उधर तैर रही थीं मानों वे किसी को तलाश रही हों।

अंधेरा हो चला था। राङगे ने सदैव की भांति एक निकटवर्ती गुफा में अलाव लगाया और चाय व खाने की चीजें पकाईं ताकि वहां रात बिताई जा सके। उस दिन वह बहुत थका हुआ था, इसलिए लेटकर जल्दी ही सो गया।

वह स्वप्न देखने लग गया। सपने में एक बूढ़ा उसके सामने आ खड़ा हुआ और उससे बोला, "नौजवान, मैं यहां का पर्वत-देवता हूं। मैं तुम्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं क्योंकि आज तुमने एक न्यायसंगत काम किया है जिससे हमें शांति प्राप्त हुई है। तुमने इतना अच्छा काम किया है, इसलिए तुम्हें एक अच्छा इनाम मिलेगा।"

राङगे ने आश्चर्य में भरकर उत्तर दिया, "ताऊजी, मैंने तो कुछ भी नहीं किया! सचमुच मुझे याद ही नहीं आ रहा कि मैंने कहां क्या काम किया था!?"

बूढ़े ने उसे असमंजस में पड़ा देखकर कहा, "मैं तुम्हारा आश्चर्य समझ रहा हूं। आज झील में जो लड़ाई हुई वह बर्फ-थूसि और झील-राजा की सेनाओं के बीच चली थी। बर्फ-थूसि ने झील-राजा की बेटी से प्रेम किया था और उससे विवाह करना चाहा था, किन्तु झील-राजा ने इनकार कर दिया था। अतएव वे आपस में लड़ने लगे। यह लड़ाई कई दिन तक चली थी। जलजंतु या तो मारे गए या घायल हो गए। सौभाग्यवश तुमने तीन गोलियां चला दीं और उससे भयभीत होकर बर्फ-थूसि की सेना भाग खड़ी

हुई। आज की घटना के कारण अब मेरे ख्याल से उन्हें फिर से यहां आने का साहस नहीं होगा। इन सबका श्रेय तुमको मिलना चाहिए। तुम सहृदय व्यक्ति हो, क्योंकि तुम न सिर्फ हर रोज शिकार करके अपनी माता का भरण-पोषण करते हो बल्कि दूसरे अन्याय-पीड़ितों की भी मदद करते हो। किन्तु नौजवान, मेरी बात सुनो! जब झील-राजा तुम्हारे प्रति आभार प्रकट करे तब तुम उसका सोना, चांदी या मोती मत लेना। तुम केवल उसके मुख्य हॉल में रखा तीसरा फूलदान और उसमें लगा फूल मांगना। वह सोना और चांदी से कहीं अधिक मूल्यवान है। किंतु, तुम कदापि यह मत बताना कि यह मैंने तुम्हें बताया था।" अपनी बात खत्म करते ही बूढ़ा ओझल हो गया।

राङ्गे को जागने के बाद पता चला कि उसने स्वप्न देखा था। इससे उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अपनी आंखें मलते हुए गुफा के बाहर झांककर देखा। उसने यह जानना चाहा कि आखिरकार हो क्या गया था।

अब दिन चढ़ आया था। सूर्य की सुनहरी किरणें धरती पर पड़ रही थीं। झील पर कोहरे की पतली परत छाई हुई थी। अचानक उसे कुछ लोगों का दल कोहरे से ऊपर उठता दिखाई पड़ा। वे झील की सतह पर चलते हुए उसकी ओर आ रहे थे।

उसके सामने आकर उन्होंने उसे प्रणाम कर कहा, "कल आपने हम जलजंतुओं

को बचाया था। झील-राजा ने स्वयं आपको धन्यवाद देने के विचार से हमें आपको निमंत्रित करने के लिए यहां भेजा है।"

राङगे ने सिर हिलाकर कहा, "मैं झील में कैसे जा सकता हूं? मेरी माता घर में मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं कि मैं उनके लिए कुछ खाने की चीजें ढूंढ़कर ले जाऊं। मुझे नियत समय पर थूसि के घर में काम करने भी जाना है। कल मेरी वहां जाने की बारी है। एक और बात यह है कि मैं एक साधारण आदमी हूं, आप लोगों के साथ पानी में कैसे जा सकता हूं?"

दल के नेता ने कहा, "आप चिन्ता न करें, झील-राजा द्वारा पहले ही ये समस्त प्रबंध कर लिए गए हैं। जहां तक झील में जाने का प्रश्न है, आप निश्चिंत होकर हमारे पीछे-पीछे चलते चलें।"

राङगे को महसूस हुआ कि वह उनके निश्छल निमंत्रण को टाल नहीं सकता था। इसलिए वह उनके साथ गुफा से निकल आया।

झील के किनारे पर पहुंचने के बाद दल के नेता ने ज्यों ही एक अंगुली से पानी में संकेत किया, त्यों ही पानी ने दो भागों में विभाजित होकर एक रास्ता बना दिया। पानी रास्ते के दोनों तरफ ऐसा सीधा खड़ा हो गया, मानों दो अति विशाल स्फटिकीय पर्दे लटके हुए हों। दल के नेता के नेतृत्व में, इन दोनों पर्दों के बीच से गुजर कर वह झील की गहराई की ओर चला गया।

वे शीघ्र ही झील-राजा के महल में आ पहुंचे। यह राजमहल बहुत से भवनों व मण्डपों से गठित था। उसके सोपानों के किनारों पर चमकदार मोती तथा उसके गोल खम्भों पर कुण्डलाकार जेड-ड्रैगन जड़े हुए थे। इस उत्कृष्ट शिल्प से उसकी आंखें चौंधिया गईं। झील-राजा ने उसका उत्साहपूर्ण स्वागत किया। वह नित्यप्रति सुन्दर महल में उसे शानदार भोज देता तथा उसके साथ उद्यान में सैर करता। उद्यान में बहुत से अकीक छितरे पड़े थे तथा विभिन्न आकारों वाले कोरल वृक्ष और अन्य जलज फूल अथवा घास उग रही थी। यद्यपि झील-राजा ने उसे बहलाने की भरसक चेष्टा की, फिर भी तीन दिन के बाद उसने झील-राजा से घर लौटने की मांग की, क्योंकि उसे भय था कि उसकी माता घर में भूखी न हो।

झील-राजा ने कहा, "आप अपनी माता के विषय में इतनी चिंता करते हैं, इससे स्पष्ट होता है कि आप एक सहृदय व्यक्ति हैं। यदि आप घर लौटने का आग्रह करते हैं, तो मैं आपको नहीं रोकूंगा।"

उसने राङगे को भेंट देने के विचार से अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे एक

बोरा भर सोना, एक बोरा भर मोती और बहुत सी चांदी ले आएं। उसने राङ्गे से अनुरोध भी किया कि वह उतनी चांदी ले जाए जितनी वह ढो सकता हो। इसी समय राङ्गे को सपने में प्रगट हुए उस बूढ़े की वह बात याद आ गई : तुम झील-राजा का सोना, चांदी या मोती मत लेना। जब झील-राजा ने आग्रह किया, तो उसने कहा, "मैं ये अत्यन्त मूल्यवान वस्तुएं नहीं चाहता। मैं तो एक दास हूं। ये चीजें मुझे मुसीबत में डाल देंगी। यदि आप आग्रहपूर्वक मुझे कुछ देना ही चाहते हैं, तो आप मुख्य हॉल में रखा तीसरा फूलदान और फूल मुझे दे दीजिए। यद्यपि मैं गरीब हूं, फिर भी मैंने कभी दूसरों का सोना चांदी नहीं लिया है। ये चीजें हम अपनी मेहनत से भी कमा सकते हैं।"

झील-राजा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "तुम मूर्ख हो! सोना और चांदी बहुत उपयोगी होते हैं। ये तुम्हें धनी बना सकते हैं, तुम्हें समृद्ध जीवन प्रदान कर सकते हैं। उस फूल से तुम्हें क्या लाभ होगा? तुम उसे छोड़ दो!"

राङ्गे ने उत्तर दिया, "महाराज, वास्तव में मैं तो कोई भी चीज नहीं लेना चाहता। आपने मुझे कुछ देने का आग्रह किया, इसलिए मैंने फूलदान और फूल की मांग की। वास्तव में यही बेहतर होगा कि मैं कोई भी चीज न लूं। दूसरे की मदद करना मुझ जैसे शिकारी का कर्तव्य है, इसके लिए मैं कोई प्रतिफल नहीं चाहता।"

झील-राजा थोड़ी देर हिचकिचाया और फिर अनिच्छापूर्वक बोला, "नौजवान, यदि तुम सचमुच फूलदान और फूल ही चाहते हो, तो वे मैं तुम्हें दे सकता हूं। किन्तु, यदि तुमने उस फूल की सही ढग से देखभाल नहीं की, तो वह तुम्हें तकलीफ पहुंचाएगा। तुम उसे लेकर घर लौटने के बाद ऊंची मंजिल स्थित 'पंचान्न टब'* में रख देना। हर रोज तुम नदी के पानी से उसे सींचना। एक दिन भी बिना सींचे मत रहना। यदि तुम इस तरह सौ दिन तक सींचते रहे और फूल नहीं मुरझाया, तो इसका अर्थ होगा कि उसे मानवलोक में जीने की आदत पड़ गई है, और वह तुमको सौभाग्य पहुंचाएगा।" यह कहकर उसने स्वयं ही फूलदान और फूल राङ्गे के हाथों में थमा दिए।

झील-राजा के दूत उसे झील के किनारे पर छोड़ आए। वह सावधानी से इनाम

---

* अनाज नापने का लकड़ी वाला चौकोर उपकरण। हर साल फसल की कटाई के बाद और नया अनाज चखने से पहले विभिन्न अनाजों को उसमें रखा जाता है और उसमें कांस्य आईने सहित पंख लगे तीर और पांच रंगों वाला हाता (स्कार्फ) लगाए जाते हैं। इसके बाद उसे अगले साल की अच्छी फसल की प्रार्थना करने के प्रतीक के रूप में मुख्य हॉल में रखा जाता है।

लेकर अपने घर रवाना हो गया। घर में पहुंचने के बाद उसे अपनी माता पहले से और भी अधिक बूढ़ी दिखाई दी। यद्यपि वह झील में केवल तीन दिन ही ठहरा था, पर मानव-लोक में तीन साल बीत गए थे। उसे देखते ही माता खुशी से आंसू बहाने लगीं। उन्होंने बताया कि उसके जाने के बाद हर रोज एक आदमी उन्हें खाने की चीज पहुंचा जाया करता था। थूसि ने भी उन्हें काम करने के लिए नहीं बुलवाया, और उन्होंने स्वयं शांति से जीवन बिताया। उनकी एकमात्र चिन्ता यही थी कि उन्हें पता नहीं था कि वह कहां चला गया था। राङ्गे ने अपनी सारी कहानी उन्हें कह सुनाई। उन्हें भी आश्चर्य हुआ। मां-बेटे दोनों ने उस सुन्दर फूल की ओर ताका। उन्हें वह फूल साधारण फूलों से भिन्न लगा। वे उस फूल को बहुत पसंद करते थे। झील-राजा के निर्देश के अनुसार राङ्गे ने उस फूलदान और फूल को "पंचान्न टब" में रख दिया और उस दिन से उसने दूर नदी में से पानी लाकर उसे नित्य सींचना शुरू कर दिया, चाहे वर्षा हो रही हो या बर्फ गिर रही हो।

संयोगवश, दूसरा दिन उसके थूसि के घर में जाने का निर्धारित दिन ही था। वह बहुत सबेरे ही शंकित भाव से घर से निकला। जब वह थूसि के घर पहुंचा, वहां काम करने आए दूसरों ने उसका इतनी आत्मीयता से स्वागत किया जैसे वे उससे बहुत परिचित हों। दासों की देखरेख करने वाले निरीक्षक ने भी उसकी ओर संतोष से सिर हिलाया। इससे विस्मित होकर वह उत्तर में केवल हलके से मुस्कराया।

उसके जीवन की सामान्य स्थिति बहाल हो गई। खेत में काम करने के अतिरिक्त वह फिर भी अपनी बूढ़ी माता का भरण-पोषण करने के लिए शिकार करने जाता रहता था। अनजाने ही तीन महीने बीत गए। एक दिन, वह और उसकी माता अभी खेत से घर में लौटे ही थे कि अचानक मेज पर गर्म भोजन और सुगंधित शराब सजे हुए दिखाई पड़े। उन्हें मालूम नहीं था कि ये चीजें कहां से आई थीं। बुढ़िया ने हाथ जोड़कर कहा, "ये चीजें निश्चय ही थूसि द्वारा भिजवाई गई हैं! हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसके लिए काम किया करते हैं। उसने मुझे बूढ़ी देखकर मुझ पर दया की और शायद इसीलिए ये चीजें भिजवा दी हैं!" लेकिन राङ्गे ने जवाब दिया, "नहीं, मां, थूसि हमारे साथ इतनी दयालुता कभी नहीं बरतता। ये चीजें संभवतया झील-राजा ने भिजवाई हैं, क्योंकि मैंने लड़ाई लड़ने में उसकी मदद की थी।" माता ने इस पर सहमति प्रकट की। फिर मां-बेटे दोनों भोजन करने बैठ गए। उस दिन से उन्हें हर रोज ऐसा ही परोसा खाना मिलता रहा, और उन्हें फिर कभी खाने के अभाव की चिन्ता नहीं हुई।

कुछ दिन बाद पड़ोसियों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे मां-बेटे दोनों अच्छी तरह से जीवन बिता रहे थे और उन्होंने कभी दूसरों से कोई चीज उधार नहीं ली और खाद्य सामग्री भी नहीं खरीदी। उन्होंने बुढ़िया से पूछा, "आपने हम से कोई चीज उधार नहीं ली और अनाज, तेल या नमक भी नहीं खरीदा। लेकिन आप अक्सर भाप से बनी रोटी, बैल का गोश्त, सूअर की चर्बी और अन्य स्वादिष्ट सब्जियां खाते रहते हैं। ये सब चीजें आपको कहां से मिल जाती हैं?"

बुढ़िया एकाएक संकोच में पड़ गई। उसने हकलाते हुए जवाब दिया, "हम भी दूसरों की तरह जंगली तरकारियां और जंगली फल खाते हैं। कभी-कभी मेरा बेटा कुछ शिकार घर में ले आता है। इनके अलावा हमें खाने को और क्या मिल सकता है?" पड़ोसियों ने अविश्वास प्रकट किया, पर बुढ़िया ने जिद नहीं की और झूठ भी बोलना नहीं चाहा। वह हड़बड़ा कर घर लौट गई।

घर पहुंचने के बाद उसने सोचा कि "पड़ोसियों ने सही कहा। हमने कोई चीज नहीं खरीदी, पर हमें हर रोज इतनी अच्छी चीजें खाने को कैसे मिलीं? यह बात हमें मालूम कर लेनी चाहिए ताकि दूसरों के प्रश्नों का उत्तर दिया जा सके। यदि ये झील-राजा ने भिजवाई हों, तो भी हमें यह पता लगाना चाहिए कि उसने किस तरह भिजवाईं। अन्यथा, यदि लोगों ने इन चीजों को चोरी से लाया हुआ कहा तो काम बिगड़ जाएगा!" उसने निर्णय किया कि बिना बेटे को बताए वह खुद ही इस मामले की जांच करेगी।

दूसरे दिन, वह बेटे के साथ खेत के लिए रवाना हो गई। चलते-चलते वह एक जगह रुकी और फिर चुपके से वापिस घर लौट आई। वह किवाड़ के पीछे छिप कर चुपचाप ताकने लगी।

मध्याह्न-भोजन बनाने के समय उसने देखा कि फूलदान में लगा वह फूल अचानक एक बार कांप कर जमीन पर गिर गया और फौरन ही एक अनुपम सुन्दरी युवती के रूप में बदल गया। युवती ने झट से अपनी आस्तीनें चढ़ा कर कमरे को ठीक करना शुरू किया। उसने फूलदान से एक टोकरी निकाली और उसमें से तरह-तरह की सब्जियां और भोजन निकाल कर उन्हें मेज पर सजा दिया। यह सब काम पूरा करने के बाद उसने फिर से टोकरी को फूलदान में वापस रख दिया और स्वयं भी फूलदान में कूद कर गायब हो गई। फूलदान में पहले की तरह ही एक फूल लगा रहा।

इस सबसे बुढ़िया को बड़ी हैरानी हुई। वह एक आज्ञाकारिणी महिला थी। जिन्दगी भर उसने गुलामी और उत्पीड़न सहन किया था तथापि उसे शासन के विरुद्ध कोई

काम करने का साहस कभी नहीं हुआ था। इस समय वह इतनी डरी हुई थी कि वह अपनी भूख तक भूल गई। जब उसका बेटा लौटा, उसने चिल्लाते हुए कहा, "बेटा, तुम दुःसाहसी हो! तुमने किस युवती को फूलदान में छिपा रखा है? तुमने मुझे धोखा दे कर कहा कि यह एक फूल है जिसे झील-राजा ने तुम्हें दे दिया था। यदि यह बात थूसि जान गया, तो वह हमारी हत्या करा देगा, हमारे मांस के टुकड़े-टुकड़े कर कुत्तों को खिला देगा और हमारा घर भी तीन फुट गहराई तक खोद दिया जाएगा। क्या तुम थूसि की निरंकुशता नहीं जानते? इससे भी ज्यादा बड़ी बात यह है कि वह युवती देखने में कम से कम किसी बड़े सरकारी अफसर की बेटी जैसी है। हाय, अब हम पर मुसीबत टूटेगी!" कहकर वह दुःख से रोने लगी।

माता को रोते देख कर राङगे बेचैन हो उठा। "मां, आप गुस्सा पी जाए। मैं सचमुच नहीं जानता कि वह कोई युवती है। मैं तो सिर्फ यह जानता हूं कि वह झील-राजा द्वारा इनाम के तौर पर मुझे दिया गया एक फूल है। आप मुझे पहले खुद ही देख लेने दें, उसके बाद हम निर्णय करेंगे कि क्या किया जाए।"

माता ने उसकी ईमानदारी पर विश्वास कर उत्तर दिया, "मुझे निश्चय ही कोई गलतफहमी नहीं हुई। पर अच्छा हो यदि तुम स्वयं ही देख लो। इस तरह हमें पता चल जाएगा कि वास्तव में बात क्या है। वर्ना, पड़ोसियों को आश्चर्य होता रहेगा और वे समय-समय पर हमसे अनुपयुक्त प्रश्न पूछने रहेंगे।"

राङगे के मन में संदेह और बेचैनी पैदा हुई। उसने पक्का इरादा कर लिया कि वह मामले की असलियत जान कर ही रहेगा।

दूसरे दिन, माता की भांति वह भी किवाड़ के पीछे छिप कर देखने लगा। जब मध्याह्न का भोजन बनाने का समय आ गया, तब सचमुच उसने देखा कि फूलदान में लगा वह फूल एक बार कांप कर जमीन पर गिरा और तुरंत एक सुंदर युवती के रूप में बदल गया। उस युवती ने फूलदान से एक बांस की टोकरी निकाली और उसमें से तरह तरह की सब्जियां और भोजन निकाल कर उन्हें मेज पर सजा दिया। अब राङगे को पता चला कि पिछले कुछ महीनों में उसे और उसकी माता को जो स्वादिष्ट सब्जियां और खाना मिलता था वह मूलतः इस युवती द्वारा तैयार किया जाता था। वह आश्चर्य-चकित हुआ और एहसानमंद भी। अचानक उसे स्वप्न में प्रगट हुए उस बूढ़े की बात याद आ गई कि यदि तुम्हें झील-राजा का तीसरा फूलदान और फूल मिले, तो इसका अर्थ होगा कि तुम्हें सोना, चांदी और मोतियों से भी कहीं अधिक मूल्यवान चीज मिली है। क्या बूढ़े का संकेत इसी युवती की ओर तो नहीं था? जब उसने युवती को इतनी
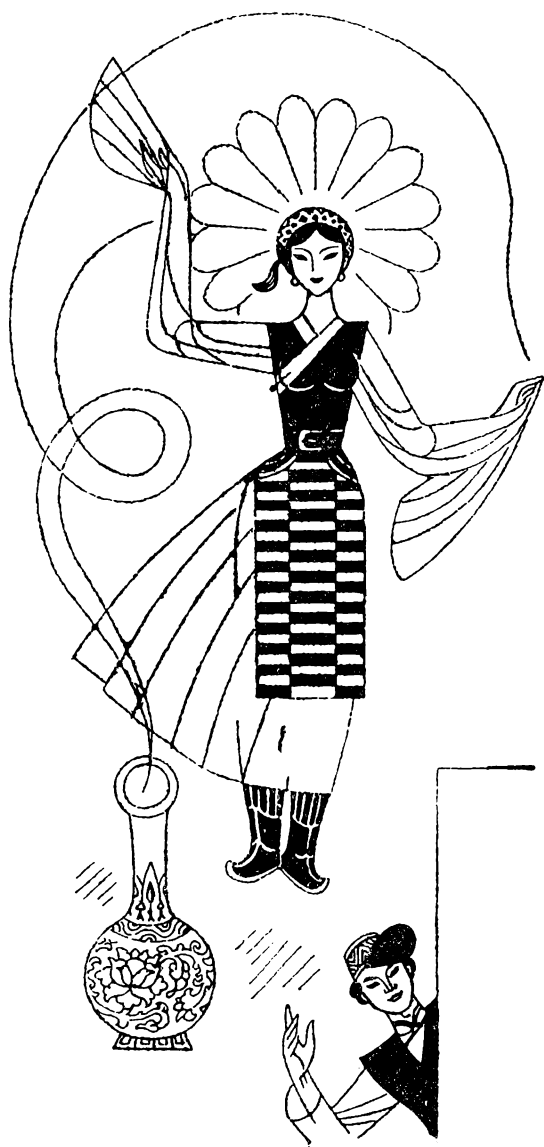
सुन्दर पाया और उसे ध्यान आया कि वह सूक्ष्मतापूर्वक कमरे को ठीक कर रही थी और मेज पर सब्जी और भोजन सजा रही थी, तब उसके मन में इस अजनबी युवती के प्रति हार्दिक कृतज्ञता भर गई। उसे महसूस हुआ कि उसकी दयालुता सचमुच धन-दौलत से कहीं अधिक मूल्यवान है। उसका हृदय तेजी से धड़क उठा। उसे भय हुआ कि वह युवती फूलदान में कूदकर सदा के लिए लुप्त न हो जाए। वह आवेश में किवाड़ के पीछे से निकल कर उसकी ओर भागा और पीछे से उसे अपनी बांहों में कस लिया।

युवती चौंक पड़ी। उसने मुड़ कर उससे विनती की कि उसे छोड़ दे। "हम दोनों का विवाह होना निश्चित है," उसने कहा, "किन्तु अभी समय नहीं आया, वर्ना हमें अनेक कष्ट सहने पड़ जाएंगे। किन्तु, यदि आपमें साहस हो तो हम सभी मुश्किलों को सामना कर सकेंगे। आप यह बात अपने परिवार के बाहर के अन्य किसी दूसरे को कदापि मत बताइएगा, अन्यथा हमें बहुत तकलीफें उठानी पड़ेंगी। अब से यदि आप अच्छी तरह खेती करना जारी रखें, तो हमारा जीवन अवश्य ही अच्छे से अच्छा हो जाएगा।"

युवती ने उसकी माता को बुलवाया और बुढ़िया से कहा, "मैं झील-राजा की तीसरी बेटी हूं। आपके बेटे ने हमें मदद दी थी, इसलिए मेरे पिता ने मुझे आदेश दिया था कि मैं आपके घर में आ जाऊं और आपकी बहू बनूं। माताजी, आप बूढ़ी हैं, खेत में काम करना आपके लिए अनावश्यक है। आप घर में ही रहें और मेरे द्वारा आपकी सेवा स्वीकार करें।" यह कहते हुए उसने टोकरी से बहुत से वस्त्र और अन्य चीजें निकालीं। उसी रात युवक-युवती की इस जोड़ी ने विवाह कर लिया।

तीन दिन के बाद युवती ने टोकरी से बढ़ई और राजगीरों को मकान की मरम्मत करने के लिए निकाला। एक दिन से कम समय में ही उनका छोटा और पुराना मकान एक लम्बे चौड़े और आरामदेह मकान में बदल गया। तब से उनका पूरा परिवार, राङ्गे और उसकी माता के गुनगान और दरिद्र जीवन के एकदम विपरीत, हर्षोल्लास और सुख से भरा जीवन बिताने लगा।

तीन साल बाद राङ्गे की माता का देहान्त हो गया। रिवाज के मुताबिक माता की आत्मा की शांति के लिए सूत्रों का जाप कराया जाना आवश्यक था। कुछ लोगों ने, जो राङ्गे के परिवार के आनन्दपूर्ण जीवन से ईर्ष्या करते थे, उससे संबंध कायम करने के उद्देश्य से इस अवसर का लाभ उठाना चाहा। उन्होंने गम्भीर मुद्रा में उससे पूछा, "राङ्गे, क्या आपको अपनी माता के लिए सूत्रों का जाप कराने के लिए हमारी सहायता की आवश्यकता है?"

राङ्गे अपनी पत्नी से पूछने गया। पत्नी ने इन अपरिचितों को देख कर कष्टों से बचने के हेतु उसे समझाया, "आप उन्हें उनकी सद्भावना के लिए धन्यवाद दें तथा उनसे कहें कि हमारे पास सभी चीजें मौजूद हैं, हमें उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

राङ्गे का उत्तर सुन कर उन लोगों को आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा कि यह दम्पति कैसे इतना अच्छा जीवन बिता सकता है कि उन्हें किसी भी चीज की कमी नहीं है।

सूत्रों के जाप के दिन, सभी पड़ोसी "मानेइ"* झण्डे फहराने आए। उन्होंने देखा कि उसके घर में चालीस लामा सूत्रों का पाठ कर रहे हैं और मुख्य हॉल में स्वर्ण तथा चांदी की बुद्ध मूर्तियां, कुछ चित्रित बुद्ध मूर्तियां, घी के दीए और अन्य चमकीली चीजें सजी हुई हैं। उस युवती को देखते ही वे उसकी सुन्दरता के विषय में कानाफूसी करने लगे और साथ ही उसकी भूरि भूरि प्रशंसा भी।

राङ्गे के परिवार की स्थिति संबंधी समाचार तेजी से प्रसारित हो गया। यह खबर सर्वप्रथम छोटे सरदारों के कान में आई, फिर बड़े सरदारों के और अंत में थूसि के। थूसि क्रोध से आगबबूला हो गया। "ओह, एक दास को ऐसी बड़ी बात कहने का साहस कैसे हुआ? वह क्या समस्त विधि-नियमों के विरुद्ध उठ खड़ा हो जाएगा? मेरे घर में हर प्रकार की धन-दौलत मौजूद है – पर्याप्त खाद्य पदार्थ हैं, पहनने के लिए पर्याप्त कपड़े हैं। इसके बावजूद मैं जोताई-बोआई के समय गरीबों से 'तीनाक्वान-पेइपू'** उधार लेता हूं। कौन कह सकता है कि उसके पास 'सभी चीज मौजूद हैं और उसे किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता नहीं है'? इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह मेरा दास है। उसे मेरे आदेश का पालन करना चाहिए। मेरे यहां अनेक काम हैं जो उसे व्यस्त रख सकते हैं। वह कैसे कह सकता है कि 'उसे किसी दूसरे की मदद की आवश्यकता नहीं है'?" उसने तुरंत ही अपने मातहत को आदेश दिया कि राङ्गे को उससे भेंट करने के लिए बुलाए।

जब राङ्गे उसके सामने आया तो उसने पूछा, "सुना है कि तुम्हारा घर एक दास का घर जैसा नहीं लगता। तुम्हारे घर में हर प्रकार की चीजें मौजूद हैं। तुम समृद्ध

---

* कपड़े वाला झण्डा जिस पर सूत्र-पाठ छपा रहता था।

** तिब्बती लोग जोताई-बोवाई के समय हल के दोनों डंडों को बैल के सींगों पर बांध लेते हैं, इसलिए उन्हें कपड़े लत्तों को गद्दी के तौर पर बैल के सींगों पर लगाने की आवश्यकता होती है। यह गद्दी लत्ता "तीनाक्वानपेइपू" कहलाता है।

जीवन बिताते हो। स्वयं तुमने भी कहा था कि तुम्हारे पास सभी चीजें मौजूद हैं, तुम्हें किसी दूसरे की मदद की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी ये चीजें कहां से आईं ?"

राङगे सीधा-सादा आदमी था। उसने ज्यादा बातें नहीं कहना चाहा, इसलिए केवल यही उत्तर दे दिया, "यह सच है कि मैं अपेक्षाकृत समृद्ध जीवन बिताता हूं। इसका पहला कारण यह है कि मैंने बहुत से जानवरों का शिकार कर लिया है, और दूसरा कारण यह है कि मैंने एक धनी घराने की कुमारी से शादी की है और वह अपने मायके से बहुत सी चीजें ले आई है। इसीलिए मेरे पास किसी भी चीज की कमी नहीं है।"

थूसि को आश्चर्य हुआ। उसने राङगे को आदेश दिया कि वह अगले दिन अपनी पत्नी को उससे भेंट करने के लिए ले आए।

उसे मजबूरन अपनी पत्नी के साथ थूसि से भेंट करना पड़ा। थूसि ने उसकी पत्नी से पूछा, "मैंने सुना है कि तुम लोग समृद्ध जीवन बिताते हो और तुम्हारे घर में किसी भी चीज की कमी नहीं है। तुम्हारा घर एक साधारण दास के घर जैसा कदापि नहीं है। तुम्हारी ये चीजें कहां से आईं ?"

युवती ने उत्तर दिया, "मैं पर्वत पर रहती थी। राङगे पर्वत पर शिकार करने आया तो मैं उससे मिली। इसके बाद मैंने उससे विवाह कर लिया। हमारी ये चीजें हमने पर्वत-देवता से उधार ली हैं, क्योंकि हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसकी पूजा करते रहे हैं।" थूसि उसकी सुन्दरता और उसकी धाराप्रवाह बातों से प्रभावित हुआ। उसे आश्चर्य हुआ कि एक दास इतनी सुन्दर पत्नी कैसे प्राप्त कर सका। जब युवती बोल रही थी, उसने उसे गौर से देखा और वह उसे असाधारण महसूस हुई। उसका जी चाहा कि फौरन ही उसे छीन ले। उसने मन में सोचा कि "इतनी सुन्दर और बुद्धिमान महिला को तो मेरे यहां मेरे साथ रहना चाहिए। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि वह अन्य दासों की तरह मिट्टी खोदे, खाद फैलाए और सूअरों व भेड़ों के साथ सोए।"

जिस दिन युवा दंपति अपने घर लौटे उसी दिन से थूसि दिन-रात सोचता रहा कि राङगे की पत्नी को किस प्रकार हथिया ले। उसने सोचा कि कोई ऐसा उपाय किया जाए जिससे वह उस महिला को प्राप्त कर सके और जनता में उपद्रव भी न हो। अंत में उसने एक निर्णय लिया और आदमी भेज कर राङगे को बुलवाया। उसने राङगे से कहा, "तुम्हारी पत्नी ने कहा था कि तुम्हारे घर में जो चीजें मौजूद हैं वे सब पर्वत-देवता से उधार ली हुई हैं। किन्तु मेरा विचार है कि उसने मुझे धोखा देने की कोशिश की है। अब मेरे अस्तबल में दो सौ श्रेष्ठतम घोड़े हैं। तुम जा कर अपनी पत्नी से कहो

कि यदि उसने पर्वत-देवता से सारी चीजें उधार ली हैं तो वह उससे दो सौ घोड़े भी उधार मांग ले। वे घोड़े अवश्य ही श्रेष्ठ होंगे। कल सुबह मेरे घोड़ों और उसके घोड़ों की दौड़ होगी। यदि उसके घोड़ों ने विजय प्राप्त कर ली, तो मैं तुम्हारी बातों का विश्वास कर लूंगा। किन्तु यदि उसके घोड़े हार गए, तो इससे सिद्ध होगा कि तुम लोगों ने मुझे धोखा देने की कोशिश की है। तब मैं तुम्हारी पत्नी को अपने पास रख लूंगा और तुम्हें जेल में डाल दूंगा। तुम घर लौट कर मेरी बातें अपनी पत्नी को बता दो!"

थूसि का आदेश मानों निरभ्र आकाश से वज्रपात सा हुआ। उसने राङगे को हक्का-बक्का कर दिया। राङगे ने सोचा, "गजब हो गया! अब मैं क्या करूं? देखते-देखते मेरी पत्नी को हथिया लिया जाएगा और मुझे भी जेल में बन्द कर दिया जाएगा! गत दिनों में मैंने उसे केवल भोजन और वस्त्र बनाते देखा है। मैंने उसे कभी घोड़े उधार लेते नहीं देखा!" वह आह भरते हुए अपने घोड़े को दौड़ा कर घर लौट गया। उसका चेहरा परेशानी से भरा हुआ था।

पत्नी ने उसे भोजन परोसा और उसे न खाते देख उससे पूछा कि वह इतना परेशान क्यों हो रहा था। उसने थूसि की बातें उसे बताईं और कहा, "यह स्पष्ट है कि उसने तुम्हें हथियाने का षड़यंत्र रचा है। एक दास को सताना एक थूसि के लिए कोई मुश्किल काम नहीं है! वह हमें जुदा करना चाहता है, पर अब हम क्या करें?"

युवती ने हंसकर कहा, "आपसे मैंने कहा था न कि हमें तकलीफों का सामना करना पड़ेगा। अब देखिए, मेरी बात सही सिद्ध हुई। किन्तु कोई बात नहीं, आप हिम्मत करें, तो हम उसे दूर कर सकेंगे। यदि उसने घुड़दौड़ का आयोजन किया, तो हम उसमें भाग लेंगे! कल आप घोड़ों को हांकते हुए जाएंगे। इसमें इतना परेशान होने की क्या जरूरत है?"

"लेकिन हमारे पास घोड़े तो हैं ही नहीं!" उसने उदासी भरे स्वर में कहा।

"आप निश्चिंत रहें, कल आपको घोड़े अवश्य ही मिल जाएंगे।" पत्नी ने उसे भोजन कराते हुए सांत्वना दी। वह फिर भी चिंतित बना रहा। उसे भय था कि कहीं घोड़े प्राप्त ही न हों अथवा घुड़दौड़ में जीत हासिल न हो।

दूसरे दिन युवती सबेरे ही उठी। उसने नाश्ता तैयार किया और टोकरी से कागज का घोड़ा और कागज का पैकेट निकाला। उसने कागज का पैकेट पति को दिया और कागज के घोड़े की ओर मुंह से फूंक मारी। तुरंत ही कागज का घोड़ा एक जीवित घोड़े में बदल गया। उसने पति से कहा, "जब तक आप इस घोड़े पर सवार होकर थूसि के गांव तक पहुंचेंगे, तब तक वे निश्चय ही जागे नहीं होंगे। वहां पहुंचकर आप कागज

का पैकेट खोलें और उसे आकाश की ओर बिखेरें, तो आपको दो सौ घोड़े मिल जाएंगे जो थूसि के घोड़ों से कहीं ज्यादा अच्छे होंगे।"

राङ्गे ने उसका विश्वास भी किया और संदेह भी। उसे भय था कि घुड़दौड़ में भाग लेने में विलंब न हो जाए, इसलिए वह हड़बड़ा कर घोड़े पर सवार हो थूसि के गांव की ओर रवाना हो गया। यह घोड़ा सचमुच अन्य साधारण घोड़ों से भिन्न था। चलते हुए मानो वह आकाश में उड़ रहा था। थोड़ी ही देर में वह थूसि के गांव पहुंच गया।

सचमुच, वहां एक भी आदमी नहीं जागा था। राङ्गे ने राहत की सांस ली। उसने फौरन कागज का पैकेट खोल कर देखा कि उसमें चींटियों जैसे छोटे कागज के घोड़े भरे हुए थे। अपनी पत्नी के कहे अनुसार उसने उन्हें आकाश की ओर बिखेर दिया। ये कागज के घोड़े जमीन पर गिरते ही दो सौ सुन्दर जीवित घोड़ों में बदल गए। उनमें कुछ सफेद और काले थे, जबकि अन्य कुछ भूरे, चितकबरे और गहरे लाल थे। वे सब पिछाड़ी मारने या हिनहिनाने लगे। उसके द्वारा देखरेख किए बिना ही वे सरपट दौड़ते हुए घास भरे पर्वतों पर पहुंच गए और वहां चरने लगे। यह देख कर राङ्गे बहुत खुश हो गया। वह पास ही बैठ गया और घुड़दौड़ की शुरुआत के लिए थूसि के आगमन का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी देर के बाद थूसि आ गया। वह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि विभिन्न रंगों वाले सुन्दर घोड़े, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था और जिनमें से प्रत्येक उसके घोड़ों से ज्यादा बड़ा और पुष्ट था, पर्वतों पर चारों तरफ दौड़ रहे थे। वह जान गया कि इस घुड़दौड़ में उसे जीत हासिल नहीं होगी, इसलिए उसने घुड़दौड़ बन्द करने का ऐलान कर दिया।

लेकिन फिर भी उसके मन में क्रोध भरा रहा। उसने सोचा कि "यदि मैं एक दास तक को वश में नहीं कर सकता, लोग मुझे थूसि कैसे मानेंगे? मुझे एक और अच्छा उपाय सोच निकालना है!" उसने बहुत दिमाग खपाया, पर सफलता नहीं मिली। अचानक उसकी दृष्टि गांव के बाहर उस जगल पर पड़ी जहां सफेद परों, लाल चोंच और लाल पैरों वाले अनगिनत पक्षी पेड़ों पर बैठे हुए थे। दूर से ये पक्षी खिल रहे सफेद फूलों जैसे ही लग रहे थे। उसने सोचा कि "घोड़ा चल सकता है, इसलिए उसको आसानी से उधार लिया जा सकता है। किन्तु वन्य पक्षियों और पेड़ों की स्थिति उससे भिन्न है: पक्षी जगली होते हैं और पेड़ एक रात में ही बढ़कर जगल नहीं हो सकते। हां, यह उस युवती को लाचारी में डलालने का अत्यन्त श्रेष्ठ उपाय है।"

अतएव उसने राङ्गे से कहा, "तुम्हारी पत्नी कहती है कि उसने घोड़ों को उधार लिया है, पर मैं अब तक भी विश्वास नहीं कर सकता कि ये घोड़े पर्वत-देवता से उधार लिए गए हैं। मेरे गांव के बाहर पर्वत का दक्षिणी छोर वृक्षशून्य है। तुम अपनी पत्नी से कहो कि कल सूर्यास्त से पहले वह पर्वत-देवता से एक जंगल उधार ले आए और उसे वहां पर लगा दे। इसके साथ-साथ जंगल के पेड़ों पर बहुत से वन्य पक्षी भी बैठे हों। यदि इसमें तुम्हें सफलता मिली तो मैं तुम्हें इनाम के रूप में एक सौ औंस चांदी दूंगा और विश्वास कर लूंगा कि तुम्हारी सारी चीजें पर्वत-देवता से ही उधार ली गई हैं। किन्तु यदि तुम हार गए, तो मैं धोखेबाजी के अपराध में तुम्हारी पत्नी को अपने पास रख लूंगा और तुम्हें जेल में डाल दूंगा।"

राङ्गे परेशानी में घोड़ों को हांकते हुए घर की ओर लौटा। रास्ते में उसने अपनी पत्नी की सलाह के अनुसार समस्त घोड़ों को एकत्रित कर कागज के पैकेट में वापस रख दिया तथा आह भरते हुए घर के लिए चल दिया।

घर पहुंचने के बाद उसकी पत्नी ने उसे परेशान देखा, तो उसने चिन्तित हो उससे पूछा कि "क्या थूसि ने आपको कोई और आदेश दिया है?"

राङ्गे ने थूसि की बातें उसे बताईं और आह भर कर कहा, "इस बार हमें निश्चय ही जुदा कर दिया जाएगा। घोड़ों को उधार लिया जा सकता है। लेकिन यह किसने सुना है कि पेड़ों और वन्य पक्षियों को भी उधार लिया जा सकता है? मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं, पर अब मुझे भय है कि हम लम्बे समय के लिए एक साथ नहीं रह सकेंगे।"

पत्नी ने उसे सांत्वना दी, "राङ्गे, यह भी क्या कोई मुश्किल काम है? कल झुटपुटा होने के पहले ही हम उसे जंगल और वन्य पक्षी दिखा देंगे!"

दूसरे दिन सबेरे उसकी पत्नी ने टोकरी से पेड़ों के बीजों और पक्षियों के परों के दो पैकेट निकाले। उसने पैकेट अपने पति को देते हुए कहा, "आप घोड़े पर सवार होकर थूसि के गांव जाएं। उसके उठने से पहले ही आप इन बीजों को यथासंभव दूर-दूर तक नंगे पर्वत पर बिखेर दें। इसके तुरन्त बाद आप इन परों को भी वहां पर बिखेर दें। संध्याकाल में आप थूसि को पर्वत देखने के लिए गांव के बाहर बुलाएं। उस समय उसे वहां अपनी मांगी हुई सब वस्तुएं देखने को मिल जाएंगी।"

राङ्गे ने अपनी पत्नी की योग्यता पर विश्वास रखा और थूसि को पराजित करने के अपने आत्मविश्वास को भी सुदृढ़ बनाया। वह तुरंत ही घोड़े पर सवार हो कर थूसि के गांव की ओर रवाना हो गया। वहां पहुंचने पर उसने देखा कि तब तक एक भी

आदमी नहीं उठा था। उसने अपनी पत्नी के कहे अनुसार आचरण किया।

संध्या का झुटपुटा होने पर उसने थूसि को गांव से बाहर निकल कर देखने का आमंत्रण दिया। थूसि को नजर आया कि पहले के नंगे पर्वत पर अब अंतहीन जंगल आच्छादित हो रहा था। जंगल में न सिर्फ उसके मांगे समस्त पक्षी थे बल्कि अन्य अनेक सुन्दर और दुर्लभ पक्षी भी पेड़ों पर बैठे हुए थे जैसे सुनहरे मुर्गे, पीरू, चकोर, बाम्कार, तोते और मोर। ये पक्षी सूर्यास्त की किरणों में जोर से चहक रहे थे अथवा गा रहे थे।

थूसि को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि "यह युवती न केवल सुन्दर ही है, बल्कि असाधारण योग्य भी है। उसे एक दास की पत्नी बनाया गया, यह एक खेदजनक बात है! मैं किसी भी तरह उसे अपने हाथ में ले लूंगा!" पर अपना वचन याद कर वह कुछ भी नहीं कह पाया। उसे राङ्गे को एक सौ औंस चांदी देनी पड़ी।

दूसरे दिन, उसने एक और उपाय स्थिर किया। उसने फिर एक बार राङ्गे को बुलवाया और उससे कहा, "मैं जानता हूं कि तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों सुयोग्य हैं। इसलिए मैं तुम दोनों को एक दूसरा काम देना चाहता हूं। यदि तुमने इसे पूरा कर दिया, तो फिर मैं तुम पर कोई संदेह कभी नहीं करूंगा। मेरे यहां एक तालाब है जिसमें चार हजार बाल्टी का पानी भर सकता है। कल तुम मेरे लिए उतना पानी ले आओ। तुम्हें पानी लाने के लिए बाल्टी के प्रयोग की इजाजत नहीं होगी और तालाब को भरने के लिए तुम्हें केवल एक बार नदी पर जाने की इजाजत दी जाएगी। यदि तुम्हें सफलता मिली, तो यह मामला यहीं समाप्त समझा जाएगा। किन्तु यदि तुम हार गए, तो मैं तुम्हारी पत्नी को अपने साथ ले जाऊंगा।"

थूसि द्वारा उत्पन्न की गई अंतहीन बाधाओं से राङ्गे को बहुत क्रोध आया। वह पहले भी उस तालाब के लिए पानी लाया था। इसलिए वह भली भांति जानता था कि एक ही बार में उसे भर पाना असंभव है। किन्तु उसने यथाशक्ति अपने को नियंत्रित किया और इस प्रश्न पर अपनी पत्नी से परामर्श करने घर लौट गया।

घर पहुच कर उसने थूसि की बातें अपनी पत्नी को बताईं और कहा, "थूसि ने लगातार दो बार हमें कठिन काम दिए, पर वह अब भी असंतुष्ट है। यह झंझट कब समाप्त हो सकेगा? इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह थूसि है और मैं एक दास मात्र ही हूं, मैं उससे लड़कर कैसे जीत सकता हूं? मेरा ख्याल है कि शायद कुछ समय के बाद हमें जुदा कर दिया जाएगा।"

पत्नी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "राङ्गे, आप परेशान न हों। हम दो कठिन

काम पूरे कर चुके हैं। यह तीसरा काम भी, मेरे विचार से, अधिक कठिन नहीं हो सकता। आप चिंता न करें, कल हम उसके लिए पानी लाने जाएंगे। मैं भी आपके साथ चलूंगी।"

फिर भी राङ्गे बहुत क्रुद्ध हो रहा था। वह पूरी रात सो नहीं पाया। यद्यपि वह जानता था कि उसकी पत्नी उसे मदद करेगी, फिर भी उसे चिंता हो रही थी कि न जाने थूसि अगली बार क्या नई चाल चलेगा।

दूसरे दिन सुबह, पत्नी ने "पंचाम्र टब" से फूलदान निकालकर उसे अपने वस्त्र में रख लिया। इसके बाद वह राङ्गे के साथ थूसि के गांव के लिए रवाना हो गई।

वहां पहुंचने के बाद उसने राङ्गे से थूसि को पानी लाने का निरीक्षण करने के लिए बुलाने को कहा। थूसि आ गया। वह इस स्त्री को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मन में सोचा कि "आज रात को यह स्त्री मेरे साथ सोएगी।"

युवती नदी के किनारे गई और अपने वस्त्र से फूलदान निकाल कर उसने उसमें पानी भरा। उसने फूलदान राङ्गे को थमा दिया और उससे कहा कि थूसि की आंखों के सामने तालाब में पानी उंडेले। ज्यों ही राङ्गे ने फूलदान को तनिक सा ही तिरछा किया, पानी की एक छोटी धारा फूलदान से तालाब में गिरने लगी। यह धारा अधिकाधिक तेज होती गई और इतनी अधिक द्रुतगामी हो गई मानों कोई फव्वारा छूट रहा हो। पल भर में न सिर्फ तालाब में पानी भरा हुआ था बल्कि तालाब के चारों तरफ भी पानी ही पानी दिखाई पड़ रहा था। पानी लगातार ऊंचा उठ रहा था। वह उस जगह तक जा पहुंचा जहां थूसि और उसके पिछलग्गू खड़े थे। वे घबरा कर गांव की ओर भाग खड़े हुए। लेकिन पानी तेजी से ऊंचा उठता हुआ गांव तक जा पहुंचा और सारा गांव बाढ़ में डूब गया। थूसि और उसके आदमी तथा सभी मकान उफनती बाढ़ के साथ बहा ले जाए गए।

जहां तक राङ्गे और उसकी पत्नी का संबंध है, पानी उनके पैरों तक बहते ही हट गया। जब उन्होंने थूसि और उसके आदमियों को वहशी लहरों में छटपटाते और तुरन्त आंख से ओझल होते हुए देखा, राङ्गे के मन में छिपा क्रोध और घृणा अचानक निकलकर एक ऊंची चिल्लाहट में बदल गए, "ओ पानी, इन दुष्टों को बहा ले जाओ! बहा ले जाओ! इनके मिट जाने पर ही हम शांति से रह सकेंगे!" वह खुशी से नाचने लगा, क्योंकि वह जानता था कि अब थूसि उसे कठिन काम नहीं दे सकेगा और उसकी प्यारी पत्नी को हथिया नहीं सकेगा।

लोग राङ्गे और उसकी पत्नी की योग्यता के कायल हो गए। उन्होंने मिल कर

इस युवा दम्पति से अनुरोध किया कि वे उस क्षेत्र का प्रशासन करें। पहले तो राङगे और उसकी पत्नी ने उनकी मांग स्वीकार नहीं की, किन्तु अंत में उन्होंने उसे मान लिया। एक दास होने के नाते राङगे गरीब लोगों को भली भांति जानता था। उनके सुखमय जीवन के लिए उसने भरसक कोशिश की। इस काम में उसे अपनी पत्नी की भी मदद मिली। अल्पकाल में ही वह क्षेत्र समृद्ध हो गया। आम लोग खुशी और मेहनत से जोताई-बोवाई और चराई के कामों में जुटे हुए उतना सुखमय जीवन बिताने लगे जितना उन्होंने पहले कभी नहीं बिताया था।

जादुई कटोरा

(नाशी जाति)

बहुत समय पहले ईकूनात्वेइ नामक स्थान में एक गरीब पिता और उसका बेटा रहा करते थे। पिता का नाम नारुग्रोच्योल्वो था और बेटे का नाम नारुग्रोशिङ्कन। एक दिन, बेटे ने अपने पिता से पूछा, "बापू, हम इतने गरीब क्यों हैं?" पिता ने आह भरकर कहा, "हमें हर साल प्राकृतिक प्रकोप सहने पड़ते हैं। कभी फाफर के फूल नहीं खिलते, कभी गेहूं की बालियां नहीं निकलतीं। कभी गाय बछड़ा पैदा नहीं करती और कभी घोड़ी बछेड़ा नहीं ब्याती। इस सबका मूल कारण है कि कोई हमारा पुश्तैनी जादुई कटोरा छीन ले गया है।"

"जादुई कटोरा? कैसा जादुई कटोरा?" बेटे ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"वह कटोरा हमारे घराने की पुश्तैनी निधि थी," पिता ने गम्भीर मुद्रा में कहा, "अगर पानी की एक बूंद उसमें उंडेली जाती, तो वह तुरन्त ही लबालब भर जाता था। इसी प्रकार, यदि अनाज के चन्द दाने उसमें डाले जाते, तो वह तुरंत ही भर जाया करता था। खाली करने पर वह फिर से भर जाता था। इसीलिए हमें खाने पीने की कभी भी कमी नहीं रहा करती थी।"

नारुग्रोशिङ्कन भावावेश में बोला, "तो हमारे उस दुर्लभ जादुई कटोरे को किसने छीन लिया?"

"हाय, खङचिताएयग्रो ने धोखे से हमें लूटा था!"

नारुग्रोशिङ्कन ने उत्सुकता और दृढ़ता के साथ कहा, "हुंः, मैं जाकर उसे अवश्य वापस ले आऊंगा!"

अपने बेटे की आंखों की चमक और दृढ़ता देखकर पिता बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु

उदासीनतापूर्वक कहने लगा, "बेटे, यह एक बहुत कठिन काम है। खङचिताएयश्रो एक अत्यन्त दुष्ट आदमी है। एक बार तुम्हारी बड़ी बहन उसके घर गई थी और उसने जादुई कटोरे को ले भी लिया था, पर वापस लौटते समय रास्ते में वह उसे पकड़कर ले गया और अब वह उसके घर की नौकरानी बना ली गई है।..."

नारुप्रोशिङकन ने पूछा, "बापू, खङचिताएयश्रो आखिर इतना अजेय क्यों है?"

पिता ने लम्बा निःश्वास भरकर जवाब दिया, "खङचिताएयश्रो देखने में बहुत विचित्र है। उसका मनुष्य जैसा शरीर, हाथ और पैर तो हैं, किन्तु उसका सिर और पूंछ कुत्ते जैसा है। वह कुत्ते से भी अधिक तेज दौड़ सकता है। सबसे अधिक भयानक बात यह है कि उसके पास एक शकुन-विद्या की पुस्तक है। जब भी वह उस किताब को खोलकर देखता है, तो वह भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सभी बातों को साफ-साफ जान जाता है।"

नारुप्रोशिङकन ने भौंह सिकोड़े काफी देर तक सोचा। फिर उसने पूछा, "बापू, खङचिताएयश्रो का चरित्र कैसा है?"

थोड़ी देर सोचने के बाद पिता ने जवाब दिया, "एक तो उसे अपनी धन-दौलत का प्रदर्शन करना बहुत पसंद है। जब भी कोई मेहमान उसके घर में आता है, तो वह उस जादुई कटोरे को निकालकर उसे अवश्य दिखाता है। दूसरे, वह अपनी निजी चीजों का काफी ध्यान रखता है। वह एक चॉपस्टिक तक नहीं खोने देता। तीसरे, वह दूसरों के द्वारा अपनी हंसी उड़ाए जाने से घृणा करता है। दूसरे की पहली हंसी पर ही उसे प्रचंड क्रोध हो आता है, और दूसरी हंसी पर वह अपनी तलवार निकालकर उसकी हत्या कर देता है।"

नारुप्रोशिङकन ने ध्यानपूर्वक पिता की बातें सुनीं और उन पर काफी देर तक सोच-विचार किया। वह एक बुद्धिमान लड़का था। उसने पिता द्वारा वर्णित तीनों विशेषताओं का लाभ उठाने के सम्बन्ध में एक उपाय सोच निकाला और उसे अपने पिता को बता दिया।

इसके बाद उसने पिता से विदा ली और घर से निकल पड़ा। जाते समय पिता ने फिर एक बार जोर देकर उसे याद दिलाया, "बेटा, याद रखो, खङचिताएयश्रो के सामने कदापि मत हंसना।"

नारुप्रोशिङकन निन्यानबे पहाड़ों और सतहत्तर घाटियों को पार कर खङचिताएयश्रो के घर में आ पहुंचा। खङचिताएयश्रो ने उसे मंहगे कपड़े पहने देखा, तो बड़े सौजन्य-पूर्वक उसका स्वागत-सत्कार किया। उसने उसके सम्मान में अपनी कुत्ते की सी रोयें-

दार भूरी पूंछ घसीटते हुए फर्श साफ करना शुरू किया। यह देखकर नारुग्रोशिङ्कन हंसने ही वाला था, पर उसने जबरन ग्रपने को नियंत्रित किया, क्योंकि वह जानता था कि हंसने से उसकी योजना चौपट हो जाएगी। इसके बाद खङ्चिताएयग्रो ने सावधानीपूर्वक एक चमकदार स्वर्ण-कटोरे को निकालकर उसे नारुग्रोशिङ्कन के सामने रख दिया। फिर उसने मदिरापात्र उठाकर कटोरे में शराब की एक बूंद उंडेली ही थी कि कटोरा तुरंत लबालब भर गया।

नारुग्रोशिङ्कन ने सोचा, "यही हमारा जादुई कटोरा है!" उसका जी हुग्रा कि वह उसे शीघ्र उठा कर भाग जाय। किन्तु, वह ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि खङ्चिताए-यग्रो कुत्ते से ज्यादा तेज दौड़ सकता था ग्रौर वह उससे पीछा नहीं छुड़ा सकेगा। उसने जानबूझ कर शराब पीना शुरू किया ग्रौर कमरे के ग्रन्दर चारों तरफ नजर दौड़ाई। जब उसकी नजर खङ्चिताएयग्रो की चॉपस्टिकों से भरी ताक पर पड़ी, तो उसके दिमाग में एक विचार ग्राया। उसने फौरन एक योजना बना ली। ज्यों ही खङ्चिताए-यग्रो ने ताक से एक जोड़ा चॉपस्टिक निकाली ग्रौर ग्रपनी कुत्ते की सी जीभ से उन्हें साफ कर मेज पर रख दिया, त्यों ही उसने जानबूझ कर ग्रट्टहास किया। खङ्चिताए-यग्रो का चेहरा तुरंत ही उतर गया ग्रौर वह मेहमान की ग्रोर ग्रांख तरेरने लगा। जब नारुग्रोशिङ्कन फिर एक बार जोर से हंसा, तो खङ्चिताएयग्रो क्रोध से ग्रागबबूला हो गया। वह ग्रपने ग्रन्दर के कमरे में तलवार लाने चला गया।

नारुग्रोशिङ्कन ने मौका पा कर शीघ्रतापूर्वक कटोरे में भरी शराब को फेंक दिया ग्रौर कटोरे को ग्रपने वस्त्र में ठूंस लिया। फिर वह ताक पर से सभी चॉपस्टिकें ले कर शीघ्रातिशीघ्र भाग निकला। थोड़ी देर के बाद उसने मुड़ कर देखा कि खङ्चिताएयग्रो
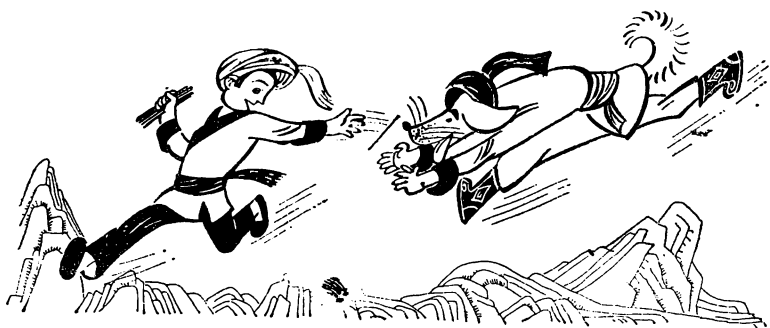
हाथ में एक चमकदार तलवार लिए हवा की तरह उसका पीछा करता चला आ रहा है। उसने एक चॉपस्टिक को अपने पीछे की जमीन पर गिरा दिया। खड्चिताएयओ ने अपनी चॉपस्टिक देखते ही उसे उठा लिया और पलट कर पहले उसे अपने घर ले गया तथा फिर वापिस उसका पीछा करने आ गया।

नारुओशिङ्कन प्रत्येक पहाड़ को पार करते समय एक चॉपस्टिक जमीन पर डालता गया और खड्चिताएयओ उसे उठा कर घर में पहुंचाता गया और फिर से उसका पीछा करने आता गया। इस तरह बारबार भागने से खड्चिताएयओ इतना थक गया कि वह अपनी कुत्ते सी जीभ को लम्बा कर हांफने लगा। नारुओशिङ्कन अपने घर पहुंचने ही वाला था कि उसने मुड़ कर देखा कि खड्चिताएयओ तब भी उसकी ओर तीर की भांति दौड़ता चला आ रहा है। अब वह क्या करे? उसने सारे चॉपस्टिक पहले ही जमीन पर गिरा दिए थे। क्या अपने छिपने के लिए एक जगह ढूंढ़े? यह असंभव था, क्योंकि खड्चिताएयओ के पास शकुन-विद्या की पुस्तक थी जिससे वह उसका पता लगा लेगा।

इस नाजुक घड़ी में उसे एक उपाय सूझा। उसने झट से खड्चिताएयओ की आंखों से परे एक छायादार पोखर में घुस कर जल्दी-जल्दी तट पर से घास का एक बड़ा ढेला खोद कर उसे अपने सिर पर रख लिया। फिर उसने जादुई कटोरे में पानी भर कर उसे घास के ढेले पर रख दिया और स्वयं शीघ्रतापूर्वक एक ऊंचे ड्रैगन-स्प्रूस पेड़ पर जा चढ़ा। खड्चिताएयओ पेड़ के नीचे दौड़ आया। उसने पेड़ को गौर से देखा और पागलों की भांति थोड़ी देर तक भौंका। फिर उसने अपने वस्त्र से शकुन-विद्या की पुस्तक निकाली और बार-बार आगे-पीछे सिर हिलाते उसे पढ़ने लगा। "आहा," वह बुदबुदाया, "यह तो ताज्जुब की बात है, सचमुच बहुत अधिक ताज्जुब की बात है! इस पुस्तक के अनुसार यह आदमी जिसकी हत्या मैं करना चाह रहा हूं, आसमान (पेड़) पर खड़ा है, और वह धरती (घास के ढेले) के नीचे भी है; फिर यह पुस्तक बता रही है कि जमीन के नीचे होने पर भी वह समुद्र के तल में (पानी भरे कटोरे के तल में) बैठा प्रतीत होता है। हुं: यह शकुन-विद्या की किताब बेकार है, एकदम बेकार है! ऐसी बेकार चीज को सुरक्षित रखने की क्या जरूरत है! . . ."

उसने जेब से चकमक पत्थर निकाल कर आग जलाई और शकुन-विद्या की पुस्तक को भस्म कर दिया।

इसके बाद वह क्रोध और झुंझलाहट में भरा घर लौट गया। नारुओशिङ्कन शीघ्रतापूर्वक पेड़ से उतरा। उसने जल रही किताब की आग बुझाई और किताब के

अवशेष को अपने साथ लेकर घर लौट आया।

इस तरह जादुई कटोरा अपने पहले मालिक के हाथ में वापस आ गया। तब से ईकूनात्वेइ में फिर से अच्छा मौसम और समयोचित वर्षा होने लगी, भरपूर फ़स्लें प्राप्त हुईं और लोगों के जीवन में काफी सुधार हुआ। कमी सिर्फ यह रही कि उस शकुन-विद्या की पुस्तक का अधिकांश भाग जल कर भस्म हो गया, और भविष्य में लोग इस पुस्तक से बहुधा सही शकुन प्राप्त न कर सके।

नाग-कुमारी पेड़

(नाशी जाति)

पहले जेड ड्रैगन झील के मध्य में एक पुराना जंगली सेव का पेड़ उगा हुआ था। वह एक विशाल छतरी की भांति झील को ढंके हुए था। लोग उसे नाग-कुमारी पेड़ कहते थे। उसके सम्बन्ध में एक मर्मस्पर्शी कहानी आज तक प्रचलित है।

बहुत समय पहले लीच्याङ का शासक राजा मूथ्येन अत्यन्त लोभी और महात्वांकाक्षी था। उसने अकेले ही सारे क्षेत्र पर प्रभुत्व जमाने के अपने सुन्दर सपने को पूरा करने के लिए न केवल बल-प्रयोग के द्वारा पड़ौसी राज्यों को अपने वश में कर लिया बल्कि षड़यंत्र रचकर उनकी भूमि को भी हड़प लिया। एक दिन, उसने युङनिङ के विषय में सुना जहां "उत्तरी" लोग* और नाशी जाति के लोग एक साथ रहते थे। वहां हरे भरे पर्वत, निर्मल नदियां, उपजाऊ भूमि और भेड़ों-मवेशियों के झुण्ड के झुण्ड थे। लोभवश मूथ्येन ने इस स्थान को अपने सीधे शासन में रखना चाहा। किन्तु उसे मालूम था कि उस जगह तक जाने का मार्ग बहुत लम्बा है और उसके पास सैनिकों का अभाव था। अतएव अंततः उसने निर्णय किया कि बल-प्रयोग की अपेक्षा वह उसे चालबाजी से जीतेगा। तदनुसार उसने एक दूत को पत्र देकर "उत्तरी" राजा से भेंट करने को भेजा। अपने पत्र में "उत्तरी" राजा के प्रति अपना अभिवादन जता कर उसने यह प्रस्ताव रखा कि दोनों राज्यों के दीर्घकालीन मैत्रीपूर्ण सहजीवन के लिए दोनों राजघरानों के बीच विवाह-संबंध स्थापित किया जाय। साथ ही उसने "उत्तरी" राजा को अपने पचासवें जन्मदिन के अवसर पर लीच्याङ में विवाह-समझौते पर हस्ता-

---

* फूमी जाति के लोग।

क्षर करने आने के लिए आमंत्रित भी किया। "उत्तरी" राजा ने दूत का उत्साहपूर्ण स्वागत-सत्कार किया, और मूथ्येन राजा के जन्मदिन के अवसर पर वह अपने राजकुमार को साथ लेकर लीच्याङ में बधाई देने गया।

मूथ्येन राजा की एक खूबसूरत, बुद्धिमान और नेकदिल राजकुमारी थी। लोग उसे नाग-कुमारी कहते थे। कई सालों से वह यह देखकर अकेले शृंगारकक्ष में बैठी आहें भरती रही थी कि उसका पिता प्रत्येक वर्ष सैनिकों को भर्ती कर युद्ध छेड़ता और प्रजा को दुखित करता रहता था। पिता के जन्मदिन पर वह खिड़की से बधाई देने आ रहे मेहमानों को देख रही थी कि अचानक उसे "उत्तरी" पोशाक पहने एक युवक नजर आया। यह युवक बहुत ही सुन्दर, ईमानदार, मिलनसार और भद्र मालूम पड़ता था, इसलिए उसके हृदय में उसके प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न हो गई। बाद में उसने अपनी सेविका के माध्यम से जान लिया कि वह युवक युङनिङ का "उत्तरी" राजकुमार ही था। वह उसे फिर से देखने के लिए उत्सुक थी, किन्तु उस दिन के बाद से वह फिर उसे दिखाई नहीं दिया। जब उसने सेविका से सुना कि "उत्तरी" राजा और राजकुमार शीघ्र ही वापस चले जाएंगे, तब वह अत्यन्त व्याकुल हो उठी। उस रात को वह बगीचे में पूर्णिमा का आनन्द उठाने जाने का बहाना बना कर चोरी-छिपे "उत्तरी" राजकुमार के आवास में चली आई। "उत्तरी" राजकुमार ने इस सुन्दर नाशी कुमारी को देखते ही हड़बड़ा कर उसे प्रणाम किया। उसे प्रसन्नता भी हुई और डर भी लगा। उसे प्रसन्नता इस बात की थी कि निस्संदेह, राजमहल में हस्ताक्षरित विवाह-समझौते के अनुसार उसकी दुल्हन बनने वाली राजकुमारी यही पर्वतीय अप्सरा थी। साथ ही उसे यह भय भी हो रहा था कि यदि मूथ्येन राजा को पता चल गया कि उसने रात में राजकुमारी से भेंट की है, तो सारा काम बिगड़ जाएगा। किन्तु, जब उसने राजकुमारी को मृदु और शर्मीली, साहसी और समझदार देखा तो वह आश्वस्त हो गया। उन्होंने आपस में दिल खोलकर बातें कीं और खुल्लमखुल्ला परस्पर स्नेहप्रीति प्रगट की। उसी रात में उन्होंने अपना-अपना हृदय एक दूसरे को दे दिया।

"उत्तरी" राजकुमार के चले जाने के बाद नाग-कुमारी की माता ने अपनी बेटी को बताया कि अब वे दोनों राजपरिवार परस्पर रिश्तेदार बन गए हैं और "उत्तरी" राजकुमार नाग-कुमारी का पति हो जाएगा। यह सुन कर नाग-कुमारी बेहद खुश हो गई, क्योंकि उसे यह आशा नहीं थी कि उसके पिता उसके हृदय की बात भांप कर एक अच्छा काम कर देंगे। इसलिए विवाह के समय वह जोर से नहीं रोई, केवल आंसू की कुछ बूंदें बहा कर अपने को सालों तक पालने वाले जन्मस्थान के प्रति उसने अपना

प्यार प्रकट कर दिया। युङनिङ में पहुंचने के बाद उसने "उत्तरी" प्रजा के साथ इतना दयालुतापूर्ण व्यवहार किया कि ऊंचे तथा निचले वर्गों एवं राजमहल के अन्दर और बाहर के लोग उसे स्नेह तथा गहरा आदर-सम्मान देने लगे। वह और "उत्तरी" राजकुमार एक दूसरे से प्रेम करते थे और दोनों सुख-चैन से अपना जीवन बिता रहे थे।

कुछ समय पश्चात "उत्तरी" राजा का देहान्त हो गया और "उत्तरी" राजकुमार राजगद्दी पर बैठ गया। इसी समय मूथ्येन राजा ने श्वसुर होने के नाते अपने दामाद को आदेश दिया कि वह उसके अधीन हो जाय और युङनिङ को उसके शासन में ले आए।

किन्तु, मूथ्येन राजा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि युवा "उत्तरी" राजा ने उसकी मांगों को मानने से साफ इनकार कर दिया। यह देखकर कि अब युङनिङ को हड़प लेना असंभव हो गया था और इस सौदे के लिए उसे अपनी बेटी को भी खो

देना पड़ा था, वह क्रोध से ग्रागबबूला हो गया ग्रौर युङनिङ पर हमला करने के लिए ग्रपनी सेना भेजने का विचार करने लगा। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने ग्रपना इरादा बदल दिया ग्रौर छल-कपट का प्रयोग करने का निर्णय ले लिया। उसने ग्रपनी बेटी को एक झूठा सदेश भिजवाया कि वह बीमार पड़ गया है ग्रौर बेटी से घर लौटने की ग्राशा करता है। नाग-कुमारी ने मैके पहुंच कर ग्रपने पिता को स्वस्थ देखा। उसने युङ-निङ वापस लौटने की मांग की, लेकिन पिता ने उसे जाने नहीं दिया।

एक रात जब नाग-कुमारी ग्रांगन में टहल रही थी, उसने पास के एक कमरे में दीपक जलता ग्रौर पिता को किसी से बातचीत करते देखा। वह दबे पांव कमरे के निकट ग्राई ग्रौर ग्रस्पष्ट स्वरों में सुना कि पिता कह रहे थे : "... 'उत्तरी' राजा के घर में पहुंचने के बाद तुम उससे कहो कि मेरी बीमारी गम्भीर है, ग्रौर राजकुमारी भी कई रातों तक मेरी सेवा-सुश्रूषा करने के कारण बीमार पड़ गई है। उससे कहो कि वह जल्दी से जल्दी यहां ग्रा जाए ग्रौर राजकुमारी को वापस ले जाए। ...जब वह यहां ग्राएगा, मैं उसकी हत्या करवा दूंगा। इस तरह युङनिङ मेरे शासन में ग्रा जाएगा। हाहा, हाहा! ..." यह बातें सुनकर नाग-कुमारी चौंक पड़ी। वह समझ गई कि उसके पिता ने उसके प्रति स्नेह ग्रौर दोनों राज्यों की प्रजाग्रों के मैत्रीपूर्ण सहजीवन के लिए "उत्तरी" राजकुमार के साथ उसका विवाह नहीं कराया था, बल्कि उसने युङनिङ पर प्रभुत्व जमाना चाहा था। क्रोधित होकर वह तुरंत ही ग्रपने शृंगारकक्ष में दौड़ ग्राई ग्रौर ग्रत्यन्त चिंताकुल हो उठी। उसने सोचा कि "मेरा प्रियतम शीघ्र ही जाल में फंस कर मारा जाएगा। पर मैं एक कैदी की तरह यहां बन्द कर दी गई हूं ग्रौर यहां से भाग निकलने का कोई उपाय भी नहीं है। मैं क्या करूं, कैसे करूं!" वह तकिए पर सिर रख कर बिलख-बिलख कर रोने लगी।

ग्रचानक उसे कोई मुलायम ग्रौर गरम चीज उसके पैर रगड़ती प्रतीत हुई। उसने सिर उठाकर देखा कि एक बड़ा पीला कुत्ता, जिसे वह युङनिङ से ले ग्राई थी, स्नेहपूर्वक उसके पैर चाट रहा था। कुत्ते को देखकर उसकी ग्रांखों में चमक ग्रौर चेहरे पर मुस्कान ग्रा गई। उसने सोचा, "मुझे तुरन्त ही एक चिट्ठी लिख कर उसे कुत्ते के गले में बांधकर युङनिङ भिजवा देना चाहिए।"

रात गहरी हो गई थी। नाग-कुमारी ने दीपक जलाया, मेज पर कागज फैलाया ग्रौर स्याही तैयार की। सौभाग्य से उसने बचपन में ही कुछ लिखना-पढ़ना सीख लिया था, इसलिए उसने लिखना शुरू किया। दीपक का तेल समाप्त हो जाने पर उसने फिर उसमें सरसों का सुनहरा तेल भरा। जब तक मुर्गे ने पहली बांग दी तब तक उसने

अपनी चिट्ठी पूरी कर ली। फिर उसने कैंची से कपड़े का एक टुकड़ा काट कर उसमें चिट्ठी को लपेट दिया और उसे मजबूती से कुत्ते के गले में पड़े चमड़े के पट्टे के भीतरी भाग में सी दिया। जब उसने कुत्ते को अपने पास बुला उसके सिर पर हाथ फेरा और उसकी पीठ को थपथपाया, तब तक दिन निकल आया था। उसने कुत्ते से कहा, "घर जाओ, चिट्ठी ले कर जल्दी से घर जाओ!" कुत्ते ने उसकी ओर थोड़ी देर तक एकटक देखा, फिर वह चुपचाप सिर हिला कर कमरे से भाग निकला।

मूथ्येन राजा का दूत ही सबसे पहले "उत्तरी" राजा के महल में पहुंचा। निष्कपट "उत्तरी" राजा यह सुन कर चिंताकुल हो उठा कि उसके श्वसुर और उसकी प्यारी पत्नी, दोनों ही बीमार हैं। दूत को बिदा देने के बाद उसने फौरन ही कुछ सामान बंधवाया, घोड़ा मंगवाया और लीच्याङ के लिए रवाना हो गया।

वह और उसके परिचारक अभी घर से बाहर निकले ही थे कि बड़ा पीला कुत्ता तीर की तरह तेजी से पहाड़ी पगडंडी पर दौड़ता आता दिखाई पड़ा। वह हांफता हुआ उसकी ओर लपक आया और आगे के पंजे से अपने पट्टे को खरोंचने लगा। "उत्तरी" राजा तुरंत ही उसका संकेत समझ गया। उसने शीघ्रतापूर्वक कुत्ते का पट्टा खोला और कपड़े में लपेटा गुप्त पत्र निकाल लिया। वह बेसब्री से चिट्ठी खोल कर पढ़ने लगा। अब उसे पता चला कि जिस श्वसुर का वह आदर और विश्वास करता रहा था, वास्तव में वह एक नृशंस तानाशाह था! उसने दोनों राजपरिवारों के बीच विवाह-समझौता बनाने का दांवपेंच खेल कर युङनिङ को हड़पने और उसकी प्रजा को दास बनाने का षड़यंत्र किया था। यह युवा "उत्तरी" राजा के लिए एक असहनीय अपमान था! उसने तुरंत ही अपनी सेनाओं को एकत्रित किया और उन्हें तीर-कमानों और तलवारों से सज्जित कर दिया। फिर वे जोर-शोर से लीच्याङ की ओर चल पड़े।

किन्तु, मूथ्येन राजा का दूत ज्यादा दूर नहीं गया था। वह आधे रास्ते में बैठा पूछताछ करता रहा था कि "उत्तरी" राजा कब रवाना होगा। वह यह सुनकर आश्चर्य चकित हो गया कि "उत्तरी" राजा अपनी सेना का नेतृत्व कर मूथ्येन राजा के लीच्याङ के लिए प्रस्थान कर रहा है।

वह दिन-रात यात्रा कर राजमहल में लौट आया और उसने यह सूचना मूथ्येन राजा को दे दी। यह जानकर कि उसकी गुप्त योजना खुल गई थी, मूथ्येन राजा का कोप भड़क उठा। उसने फौरन ही युद्ध-परिषद बुलाई और फैसला किया कि सेनाओं का जमाव किया जाय और उन्हें महत्वपूर्ण दर्रे में घात लगा कर बैठा दिया जाय, ताकि "उत्तरी" राजा की सेना का सफाया किया जा सके।

निष्कपट "उत्तरी" राजा वास्तव में न्यायसंगत रोष से उत्तेजित हो रहा था। उसे स्वप्न में भी विचार नहीं था कि रास्ते में उसे घात लगाए बैठी सेना मिलेगी। बर्फीले पर्वत की तलहटी के महत्वपूर्ण दर्रे में प्रवेश करते ही उसकी सेना मूथ्येन राजा की सेना द्वारा घेर ली गई। शत्रु की सेना के तीर, वर्षा की बूंदों की तरह उसकी ओर आए और तलवारें बर्फ के टुकड़ों की तरह उस पर मार करने लगीं। "उत्तरी" राजा ने अपनी सेना का नेतृत्व कर भालों का जवाब भालों से और तलवारों का जवाब तलवारों से दे कर संग्राम किया। वे बहादुरी से लड़े, किन्तु संख्या में कम होने के कारण वे दुश्मनों की घेराबन्दी को तोड़ नहीं सके। सारे "उत्तरी" सैनिक वीरतापूर्वक खेत रहे। "उत्तरी" राजा भी तीरों और तलवारों से घायल हुआ और मरते दम तक लड़ता रहा। इस भयानक लड़ाई से नदियों का पानी रक्तरंजित हो गया।

"उत्तरी" सेना का निदर्यता से दमन करने के बाद मूथ्येन राजा ने "उत्तरी" राजा के शरीर से अपनी बेटी की गुप्त चिट्ठी तलाश ली। वह क्रोध से दांत पीसने लगा। महल लौटने के बाद वह रोष में भरा पुत्री के कमरे में प्रविष्ट होकर चिल्लाया, "तुम मेरी बेटी हो, मूथ्येन राजघराने की राजकुमारी हो! लेकिन तुमने अपनी पितृभक्ति

को भुला दिया ! तुम्हें राजमहल के रहस्यों को गुप्त रूप से सुनने ग्रौर उन्हें खोलने का साहस कैसे हुग्रा ! तुम पितृभक्तिहीन नीच लड़की हो !"

नाग-कुमारी का चेहरा पीला पड़ गया। उसने प्रत्युत्तर दिया, "ग्राप ही मुझसे कहा करते थे कि 'स्त्री को ग्रपने पति की बात सुननी चाहिए चाहे उसका पति धनी हो या गरीब, ऊंच हो या नीच।' मेरी 'उत्तरी' राजा से शादी हो गई है, स्वभावत: मैं उसके परिवार की हो चुकी हूं। मुझे उसके हितों का ध्यान रखना चाहिए। नाशी होने के नाते मुझे दोनों जातियों की प्रजा की शांति ग्रौर चैन का भी ध्यान रखना चाहिए। लेकिन, ग्राप स्वयं को देखें, ग्राप ऊपर से तो एक ग्रच्छे ग्रादमी बने रहे, पर ग्रापके दिल में जहर भरा हुग्रा है। ग्राप मेरे पति की हत्या करना चाहते हैं। क्या ग्रपनी बेटी के साथ इस तरह का बर्ताव किया जाता है ? ग्राप मेरे पिता कहलाने योग्य नहीं हैं ? ग्राप हृदयहीन, चरित्रहीन ग्रौर निर्लज्ज हैं !"

बेटी की ग्रप्रत्याशित कड़ी निंदा से मूथ्येन राजा ग्रवाक् रह गया। काफी देर के बाद उसने जीभ खोली, "तुम्हारे पति ने मेरे खिलाफ बगावत की, इसलिए मैंने उसकी हत्या करा दी। इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है ?" पति की हत्या किए जाने का भयंकर समाचार सुन कर नाग-कुमारी को लगा मानो किसी ने उसके हृदय में छुरा भोंक दिया हो। वह फूट-फूट कर रोने लगी, "हाय, मेरे प्रियतम, मेरे दयनीय पति ! . . . मैं ग्रापसे मिलने ग्रा रही हूं ! . . ." क्रोध से भरा मूथ्येन राजा कमरे से बाहर निकलते हुए बोला, "तुम मरना चाहती हो ? हुं:, पर यह इतना ग्रासान नहीं होगा !"

विश्वासघाती बेटी को सजा देने के लिए उसने ग्रपने नौकरों को ग्रादेश दिया कि बर्फीले पहाड़ की तलहटी में जेड ड्रैगन झील के केन्द्र में स्थित वसंत-मण्डप को बन्दीगृह बना दिया जाए। नाग-कुमारी को उसमें बन्द कर दिया जाए ग्रौर उसे खाना ग्रौर पानी न दिया जाए। उसकी ग्राज्ञा के ग्रनुसार सिपाहियों ने भी फटी खपरैलों ग्रौर टूटे पोर्सलीन के कटोरों के छोटे-छोटे टुकड़े को मण्डप के फर्श पर बिछा दिया ग्रौर इस तरह नाग-कुमारी को इन नुकीले टुकड़ों पर नंगे पैर चलना पड़ा। बेचारी नाग-कुमारी ने मण्डप से पति की हत्या की जाने की जगह की ग्रोर देखा। जब उसे उस जगह में शव ही शव ग्रौर कंकड़ एवं रेत लहू से सने दिखाई दिए, उसका सिर चकरा गया ग्रौर दिल फट गया। वह हृदय-विदारक विलाप करने लगी, "मेरे प्रियतम, जागो ! ग्रापकी नाशी पत्नी ग्रापको पुकार रही है। जागो, मेरे प्रियतम जागो ! . . ." वह रोती-चिल्लाती नुकीले टुकड़ों पर सुन्न पांवों चल रही थी। नुकीले टुकड़ों से उसके नंगे पैर कट गए ग्रौर मण्डप का फर्श लहूलुहान हो गया। उसके ग्रांसू रो-रोकर सूख गए, होंठ फट

गए, पेट पिचक गया और लहू बहकर समाप्त हो गया। सुन्दर, बुद्धिमान और नेकदिल नाग-कुमारी अन्त में जमीन पर गिरकर मर गई।

जेड ड्रैगन झील के किनारों पर रहने वाले नाशी ग्रामीण यह देखकर बहुत शोकाकुल और क्रुद्ध हो गए कि उनके "उत्तरी" भाइयों का पाशविक कत्लेआम किया गया और सुन्दर राजकुमारी कष्ट पाकर मर गई। वे प्रजा पर अत्याचार करने वाले मूथ्येन राजा से बेहद घृणा करने लगे। एक शुभ दिन उन्होंने "उत्तरी" भाइयों के शवों को दफना दिया और राजमहल के रक्षकों की रोकटोक की परवाह न करके उन्होंने मण्डप में आग लगाकर नाग-कुमारी का भव्य दाहकर्म कर दिया। नाग-कुमारी की स्मृति और स्तुति में स्थानीय संगीतज्ञों ने उस गीत के रागों के आधार पर एक दुखांत और मर्म-स्पर्शी गीत रचा जिसे य्वान राजवंश की सेना ने दक्षिण चीन की ओर अभियान करने में लीच्याङ से गुजरते समय स्थानीय लोगों को प्रदान किया था।* गीत के "चिट्ठी" नामक भाग में यह याद किया गया है कि नाग-कुमारी ने किस प्रकार "उत्तरी" राजा को पत्र लिखा ; "राजकुमारी का रुदन" में इस बात का वर्णन है कि नाग-कुमारी अपने पति की मृत्यु के कारण कितनी दुःखी थी ; "कदम रखना" में नाग-कुमारी के उस दुखांत दृश्य का वर्णन किया गया है जब वह नुकीले टुकड़ों पर सुन्न पड़े पांवों से चलती थी ; और गीत के अंतिम भाग में नाग-कुमारी के दाह-संस्कार में सम्मिलित होने वाले नाशी लोगों के महान शोक की अभिव्यक्ति की गई है।

अगले वर्ष के वसंत में ग्रामीण लोग जेड ड्रैगन झील के तट पर नाग-कुमारी को श्रद्धांजलि अर्पित करने गए। उन्होंने देखा कि झील के केन्द्र में मण्डप के खंडहर पर एक जंगली सेव का पेड़ उग आया था। उसके पन्नों जैसे हरे पत्तों से भरी टहनियां स्वच्छ और हरे पानी पर इस तरह झुकी हुई थीं, मानों वे अपने असीम दुःख और व्यथा की शिकायत कर रही हों। वृद्ध लोगों ने कहा कि यह पेड़ नाग-कुमारी का अवतार है, और यह भी कि नाग-कुमारी निष्ठुर मूथ्येन राजा की भर्त्सना कर रही है। लोगों ने सुन्दर और दयालु नाग-कुमारी की स्मृति के लिए इस जंगली सेव के पेड़ को "नाग-कुमारी पेड़" का नाम दिया।

---

* ऐतिहासिक विवरण से ज्ञात हुआ कि होपलाए खान ने ताली क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने के लिए अपनी सेना का नेतृत्व कर दक्षिण चीन की ओर माच करते समय लीच्याङ में सुनहरी बालू वाली नदी पार की थी। किंवदंती है कि इस सेना के वहां से जाते समय होपलाए खान ने अपना आधा ब्रास बैंड और संगीतलिपियां नाशी जाति के मुखिया माए ल्याङ को उपहार में दी थीं। बाद में इन्हीं संगीत-लिपियों के आधार पर नाशी जाति का प्राचीन संगीत रचा गया।

गोटा-कुमारी

(म्याओ जाति)

बहुत काल पहले एक गांव में एक सुन्दर लड़की रहती थी जो वस्त्रों के किनारों की सजावट वाला गोटा बुनने में अत्यन्त निपुण थी। उसके बुने गोटे के फूल, पक्षी और जानवर चकाचौंध कर देने वाले रंगों के होते थे तथा ऐसे लगते थे मानो वे जीवित ही हों। इसलिए लोग उसे "गोटा-कुमारी" कहते थे।

जिस किसी को एक बार भी उसका बना गोटा मिल जाता, वह उसे फौरन ही अपनी कमीज अथवा मणिबंध पर टांक लिया करता था और प्रसन्नतापूर्वक दूसरों से कहता था, "देखो, मेरे पास गोटा-कुमारी द्वारा बुना हुआ गोटा है !" इस तरह गोटा-कुमारी का यश दूर-दूर तक फैलने लग गया।

दूसरे गांवों की लड़कियों ने आकर उससे प्रार्थना की कि वह उन्हें गोटा बुनना सिखा दे और उसने उन्हें सहर्ष सिखाया भी। किन्तु, उनमें से हर एक चाहे जितने कठिन परिश्रम से गोटा बुने वह उसके बुने गोटे से अच्छा नहीं होता था। गोटा-कुमारी उनसे कहती, "धैर्य से सीखो, तुम भी निश्चय ही सीख लोगी !"

गोटा-कुमारी का यश दूर-दूर तक फैल गया और अंत में बादशाह के कानों तक भी आ पहुंचा। बादशाह ने क्रुद्ध हो कर अपने मंत्रियों को फटकारा, "तुमने पहले मुझे क्यों नहीं बताया कि हमारे देश में एक इतनी सुन्दर और चतुर युवती रहती है ?" उसने तुरंत ही एक मंत्री को आदेश दिया कि वह घुड़सवारों के दल का नेतृत्व करते हुए पहाड़ों में बसे उसके गांव जाकर गोटा-कुमारी को ले आए।

किन्तु, गोटा-कुमारी ने जाने से इनकार कर दिया। उसने कहा, "मैं इन लड़कियों को सुंदर-सुन्दर पुष्पाकृतियां बुनना सिखा रही हू, मैं नहीं जा सकती !"

मंत्री ने कहा, "बादशाह ने तुम्हें जाने का आदेश दिया है। तुम्हें उससे इनकार करने का साहस कैसे हो रहा है?"

दूसरी लड़कियों ने गोटा-कुमारी के चारों ओर एक मजबूत घेरा डाल दिया ताकि उन दुष्टों को उसे छीन ले जाने से रोका जा सके। मंत्री ने अपने अनुचरों को आदेश दिया कि वे उसे एक छोटी पालकी में बलपूर्वक ठूंस दें। गोटा-कुमारी ने पालकी के अंदर से रोते हुए लड़कियों से कहा, "चाहे मेरी हत्या कर दी जाए, मैं किसी भी तरह तुम लोगों को गोटा बुनना सिखाने का उपाय खोज लूंगी!"

मंत्री और उसके अनुचर शोरगुल और चीख-पुकार करते हुए पालकी ढो कर ले गए।

पालकी प्रासाद में आ पहुंची, किन्तु गोटा-कुमारी ने पालकी से उतरने से इनकार कर दिया। बादशाह की आज्ञा पाकर सेविकाओं ने उसे पालकी से बलात घसीट निकाला।

बादशाह ने कहा, "जबकि तुम यहां आ ही गई हो, यह मत सोच लेना कि यहां से कभी वापस भी जा सकोगी।"

गोटा-कुमारी अपने रमणीक पहाड़ी गांव और सभी बहनों की याद करती रहती थी। वह बादशाह से बेहद घृणा करती थी। बादशाह ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की, तो उसने इतनी जोर से काट खाया कि उसके हाथ से खून बह निकला।

लज्जित और क्रोधित बादशाह ने उसे एक कालकोठरी में बन्द करा दिया।

अगले दिन, बादशाह कालकोठरी के दरवाजे पर आया और गोटा-कुमारी से बोला, "मेरे साथ रहने से तुम्हें अनन्त सुख का उपभोग करने को मिलता रहेगा, और तुम्हें मन चाहे भोजन और वस्त्र सदा मिलते रहेंगे। तुम मूर्खता मत करो!"

किन्तु, गोटा-कुमारी ने ऊंची आवाज में जवाब दिया, "मैं अपने गांव तथा वहां की बहनों के पास लौट जाना चाहती हूं। मैं यहां नहीं रहना चाहती!"

यह बात सुन कर एक मंत्री ने बादशाह को सलाह दी कि उसे मारा डाला जाय।

बादशाह ने क्रोध भरी दृष्टि से उसे देखकर कहा, "इतनी चेष्टाओं के बाद जब हम उसे यहां लाने में सफल हो सके हैं तब तुम उसकी हत्या करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं सुझा सकते? तुम मेरे लिए कदापि उपयोगी नहीं हो? रक्षको, इसका सिर काट दो!"

रक्षकों ने उस मंत्री को बाहर घसीट कर उसका वध कर डाला।

अन्य उपस्थित मंत्री इतने भयभीत हो गए कि वे वायु के झोंके में कांपती पत्ती की

भांति थरथराने लगे।

अंत में एक दूसरे मंत्री ने बादशाह के कान में कुछ फुसफुसाया। बादशाह ने प्रसन्न हो कर स्वीकृति में सिर हिलाया। उसने मुख पर जबरन मुस्कान लाकर गोटा-कुमारी से कहा, "सुना है कि तुम बहुत सुन्दर गोटा बुन सकती हो। यदि तुम सात दिन में मेरे लिए एक जीवित मुर्गा बुनने में सफल हो जाओ तो मैं तुम्हें घर वापस लौट जाने दूंगा। नहीं तो, तुम्हें हमेशा मेरे साथ ही रहना पड़ेगा।"

गोटा-कुमारी कालकोठरी में आंसू बहाते दिन-रात काम करती रही। सातवें दिन उसने सचमुच एक मुर्गा बुनना समाप्त कर लिया। उसने अपनी एक उंगली काट कर मुर्गे की कलगी पर खून टपकाया और अपनी आंखें मिचकाकर मोती जैसी आंसू की एक बूंद मुर्गे की चोंच में टपका दी। मुर्गा फौरन पंख फड़फड़ा कर उठ खड़ा हुआ।

जब बादशाह कालकोठरी में आया तो वह यह देखकर स्तंभित रह गया कि वहां एक जीवित मुर्गा उछल-कूद रहा था। उसने कहा, "यह तो प्रासाद का मुर्गा है, तुम्हारा बुना मुर्गा नहीं है। अगले सात दिनों मैं तुम्हें मेरे लिए एक जीवित चकोर बुनना है। यदि तुम उसे बुनने में सफल न हुई तो मैं तुम्हें वापस घर नहीं लौटने दूंगा।"

अचानक मुर्गा उछलकर बादशाह के सिर पर जा चढ़ा और अपनी गर्दन के पर खड़े कर बांग देता कहने लगा, "अभागी गोटा-कुमारी! घृणित बादशाह!" मंत्री हड़बड़ा कर मुर्गे को खदेड़ने दौड़ आया। मुर्गे ने अपने पंजों से बादशाह के माथे पर खरोंचें मारीं, और फिर वह उड़ कर बगीचे में ओझल हो गया। बादशाह के चेहरे पर खून टपकने लगा। लज्जित और क्रोधित होकर बादशाह वहां से चला गया।

गोटा-कुमारी कालकोठरी में आंसू बहाकर दिन-रात काम करती रही। सातवें दिन उसने आखिर एक चकोर बुन ही लिया। उसने अपनी उंगली काट कर उसके खून से चकोर के परों को लाल बनाया, और फिर उसने अपनी आंखें मिचका कर आंसू की मोती जैसी एक बूंद को चकोर की चोंच में टपका दिया। चकोर फौरन पंख फड़-फड़ाकर उठ खड़ा हुआ।

बादशाह फिर एक बार कालकोठरी में आया। वहां एक जीवित चकोर को देख कर वह चौंक पड़ा। उसने कहा, "तुमने गलत सुना था। मैंने तुम्हें एक ड्रैगन बुनने को कहा था, न कि चकोर। मैं फिर तुम्हें सात दिन में एक ड्रैगन बुनने का मौका देता हूं। यदि तुम उसे बुनने में असफल हो गईं, तो तुम्हें सदा-सर्वदा मेरे साथ ही रहना पड़ेगा!"

अचानक चकोर उड़कर बादशाह के कंधे पर उतरा और चहचहाया, "अभागी

गोटा-कुमारी ! घृणित बादशाह !" सारे मंत्री हड़बड़ा कर चकोर को भगाने दौड़ आए। चकोर ने अपने पंजे बढ़ाकर बादशाह की गर्दन पर खरोंचें लगाईं, और फिर वह उड़ कर राजप्रासाद की दीवारों के ऊपर उड़ता हुआ आंखों से ओझल हो गया।

बादशाह की गर्दन लहूलुहान हो गई। वह लज्जित और क्रोधित हो कर चला गया।

गोटा-कुमारी फिर एक बार आंसू बहा कर दिन-रात काम करती गई। सातवें दिन उसने एक ड्रैगन बुन लिया। उसने अपनी उंगली काट कर उसके खून से ड्रैगन को लाल बनाया और आंखें मिचका कर आंसू की मोती जैसी एक बूंद को ड्रैगन के मुंह में टपका दिया। ड्रैगन फौरन ही सरसरा कर जीवित हो उठा।

गोटा-कुमारी ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा, "नन्हे लाल ड्रैगन ! यद्यपि तुम जीवित हुए हो, फिर भी संभवतया बादशाह अपनी बात से मुकर जाएगा और कहेगा कि उसने एक मछली चाही थी। मुझे महसूस हो रहा है कि मैं कभी अपने गांव वापस नहीं जा पाऊंगी !"

बादशाह कालकोठरी में आ गया। छोटे लाल ड्रैगन को देखकर वह स्तंभित रह गया। उसने कहा, "यह तो ड्रैगन नहीं, एक सांप है !"

ड्रैगन उसके इन शब्दों से क्रोधित हो उठा। उसने सिर उठा कर अपना बड़ा मुंह खोल कर, आग का बड़ा गोला उगल कर बादशाह और मंत्रियों को भस्म कर दिया। आग का गोला कालकोठरी से बाहर लुढ़क निकला और उसने पूरे राजप्रासाद को राख कर दिया।

गोटा-कुमारी लाल ड्रैगन पर सवार हो कर आकाश में उड़ गई। आकाश में वह फिर से बड़ी मेहनत से गोटा बुनने में लग गई। हम आकाश में जिस बहुरंगी इन्द्रधनुष को देखा करते हैं वह गोटा-कुमारी ने ही बुना है।

कुबड़ा दादू और केला बच्चा

(म्याओ जाति)

कुबड़े दादू ने एक घुमावदार सरिता के तट पर दर्जनों केले के पेड़ लगाए और हर पेड़ पर केलों के बड़े-बड़े गुच्छे लगे। वह नित्य अपनी झुकी पीठ पर केले लाद कर बाजार में बेचने जाता था। इसलिए वह अच्छा खासा जीवन बिताता था। उसे न तो खाने का अभाव था और न कपड़ों की कमी।

उसकी कोई संतान नहीं थी। वह अकेले ही जी रहा था। जब भी वह दूसरों के बच्चों को देखता, वह उनके सिरों पर अवश्य ही हाथ फेरता अथवा उनका आलिंगन करता था अपनी आंखों में आंसू भरकर आह भरता, "काश मेरा भी एक बच्चा होता!"

किन्तु, जब भी वह सरिता के किनारे पर बैठ कर पेड़ों पर लगे केलों के बड़े गुच्छों को ओर टकटकी बांध कर देखता, तो वह यह सोच कर अपने को सांत्वना दे लेता, "अरे, ये सब मेरे बच्चे ही तो हैं!"

उस साल अचानक प्रचण्ड हिमपात हुआ और उसने सारे पेड़ों को तहस-नहस कर दिया। फिर उत्तर से आई आंधी ने केलों को जमीन पर गिरा दिया। इस हानि से कुबड़े दादू को बहुत कष्ट हुआ। अगले वर्ष वसंत में केवल एक पेड़ की जड़ से एक नया अंकुर निकला। बूढ़े ने सूर्य के प्रखर ताप की परवाह न कर बड़ी मेहनत से उसे पानी और खाद से पाट दिया। यह नया पेड़ जल्दी ही उग आया। केवल तीन महीने बाद ही उस पर एक केला लग गया। यह एकमात्र केला देख कर उसे कुछ ताज्जुब हुआ। किन्तु उसने स्वयं को यह सोच कर उत्साहित कर लिया कि कुछ न होने से तो एक केला ही अच्छा है।

यह केला बड़ा, और बड़ा होता गया। वह एक बाल्टी जितना मोटा और इतना भारी हो गया कि उसने पेड़ को झुका दिया। एक दिन, एक सुन्दर मोर वहां उड़ आया। वह केले पर एक चोंच मार कर उड़ गया। फटाक से केले की छाल में एक बड़ी दरार पड़ गई। फिर उस दरार से एक मांसल, नन्हा सा बच्चा कूद कर जमीन पर उतर आया। वह दौड़ते हुए बूढ़े के पास आया और उसकी टांगों से लिपट कर "बापू, बापू" पुकारने लगा।

कुबड़े दादू ने कमर झुका कर उसे अपनी गोद में उठा लिया और उसके कोमल गुलाबी गालों को बार बार चूमा। उसने उसे "केला बच्चा" नाम दिया।

एक-एक कर वर्ष बीतते गए और "केला बच्चा" बढ़ कर बड़ा होता गया। बाप-

बेटे दोनों ने सरिता के तट पर बहुत से केले के पेड़ रोपे। उन पेड़ों पर केलों के बड़े-बड़े गुच्छे लगे। किन्तु, इसके साथ-साथ कुबड़े दादू की पीठ ग्रौर ग्रधिक कुबड़ी होती गई। उसे काम करना बहुत कठिन होने लगा।

"केला बच्चा" यह देख कर बहुत दुखी था कि उसके पिता की पीठ इतनी कुबड़ी है। एक दिन, उसने कहा, "बापू, ग्रापकी पीठ का उपचार करने के लिए मैं दवा ढूंढ़ने जाऊंगा।" यह कह कर वह बिना विलंब किए रवाना हो गया।

रास्ते भर उसने हरेक राहगीर से पूछताछ की, "क्या ग्राप जानते हैं कि कूबड़ किस दवा से ठीक किया जा सकता है?" पर हर एक ने सिर हिला कर कह दिया, "मैं नहीं जानता!"

एक दिन वह एक हरे भरे पहाड़ के सामने ग्राया ग्रौर उसने देखा कि रंगबिरंगे कपड़े पहने एक महिला सरिता के किनारे पर बैठी ग्रपने लम्बे बालों को संवार रही थी। वह उसके नजदीक गया ग्रौर पूछा, "फूफी, ग्राप जानती हैं कि कौन सी ग्रौषधि कूबड़ की चिकित्सा कर सकती है?"

उस महिला ने जवाब दिया :

"ग्रति गहन पूर्व पर्वत की गुफा में,
चमकता है एक प्रस्तरभृत मोती,
गटक ले जो भी उसे
पीठ उसकी ठीक होगी, पुनः उत्साहित बनेगा।"

"केला बच्चा" उस महिला के कहे ग्रनुसार पूर्वी पर्वत पर ग्रा गया। उसने गहरी चट्टानी गुफा में घुसकर पत्थर में छिपे मोती का पता लगाया ग्रौर उसे पत्थर से ग्रलग कर लिया। उसे ले कर वह घर के लिए रवाना हो गया। रास्ते में वह एक पहाड़ी पर पहुचा जहां उसने एक बच्चे गड़ेरिये को जमीन पर लेटकर रोते देखा। बच्चे की एक बांह टूट गई थी ग्रौर उसका सारा शरीर लहू से सना हुग्रा था। "केला बच्चा" ने ग्रागे बढ़कर उससे पूछा कि वह क्यों रो रहा था। बच्चे ने उत्तर दिया, "दो सांड़ एक दूसरे से लड़ रहे थे, मैंने उन्हें ग्रलग करने की कोशिश की, तो उनमें से एक ने ग्रपने सींगों से मेरी बांह तोड़ दी।"

"केला बच्चा" ने मन में सोचा, "यदि यह मोती कूबड़ ठीक कर सकता है, तो संभवतः टूटी बांह को भी जोड़ देगा।" उसने तुरंत ही मोती को उस बच्चे के मुंह में रख दिया। मोती निगलने के साथ ही वह बच्चा ग्रचानक उठ खड़ा हुग्रा। उसका खून बहना बन्द हो गया ग्रौर बांह भी जुड़ गई।

उस बच्चे के चंगा होने के बाद "केला बच्चा" उस महिला से मिलने पहाड़ में वापस लौटा। उसने एक बार फिर देखा कि वह महिला सरिता में अपने लम्बे बाल धो रही थी। उसने अपनी आपबीती उसे सुनाई और उससे प्रार्थना की कि वह उसे बताए कि उसे कूबड़ ठीक करने की औषधि कहां मिल सकती है।

उस महिला ने उत्तर दिया :

"पश्चिमी पर्वत की उच्चतम चोटी पर,
उगता है एक लाल चमकीला कुकुरमुत्ता,
निगल ले उसको यदि कोई तो
पीठ और कमर उसकी सीधी हो जाएगी।"

उस महिला के कहे अनुसार "केला बच्चा" सीधी-खड़ी पश्चिमी पहाड़ की चोटी पर जा चढ़ा और उसने एक नुकीली चट्टान पर एक चमकदार लाल कुकुरमुत्ता उगा हुआ देखा। उसने उसे फौरन तोड़ लिया। उसे ले कर वह पहाड़ से उतर आया और अपने घर की ओर चला। एक जंगल के किनारे पर आ कर उसे एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा जमीन पर लेटकर कराहता हुआ दिखाई दिया। उसे गौर से देखने में मालूम हुआ कि बूढ़े की एक टांग एक बड़े पेड़ के गिरने से दबकर टूट गई थी।

उसने घुटने टेक कर बूढ़े से बात करना चाहा, लेकिन बूढ़ा केवल अपनी आंखों को घुमाते हुए कुछ भी नहीं बोल पाया। उसने जल्दी से लाल कुकुरमुत्ते को उसके मुंह में रख दिया। कुकुरमुत्ता खा कर बूढ़ा सहसा उठ खड़ा हुआ। वह अपनी दाढ़ी सहलाते हुए हंसने लग गया तथा तेजी से अपने काम पर चल पड़ा।

बूढ़े से बिदा हो कर "केला बच्चा" वापिस पहाड़ में उस महिला से मिलने गया।

उसे वह महिला पहले की ही तरह सरिता के किनारे बैठी अपने लम्बे बालों को संवारती दिखाई दी। उसने फिर एक बार अपने अनुभव की कहानी उसे सुनाई और उससे अनुरोध किया कि वह उसे बताए कि अब कूबड़ की चिकित्सा करने की औषधि कहां मिल सकेगी।

उस महिला ने जवाब दिया :

"दक्षिण पहाड़ की तलहटी में गहरे सरोवर में,
चमकता रहता है स्वर्णिम कच्छप-पत्थर,
निगल ले उसे यदि कोई तो,
हो जाए पीठ सीधी, जीवन भी सुखमय हो जाएगा।"

उस महिला ने आगे कहा, "छोटे भाई, दुनिया में केवल तीन औषधियां ही कूबड़

की चिकित्सा कर सकती हैं। भविष्य में तुम मुझसे मिलने मत आना। मैं यहां से चली जाऊंगी।" यह कहकर वह एक लम्बी छलांग लगा कर घने जंगल में जा घुसी और तुरन्त आंखों से ओझल हो गई।

"केला बच्चा" दक्षिण पहाड़ की तलहटी में आ गया। उसने अपने कपड़े उतार कर तालाब में गोता लगाया और सुनहरे कच्छप-पत्थर को टटोल लिया। उसे ले कर वह अपने घर के लिए रवाना हो गया। काफी देर चलने के बाद वह अभी एक कंकरीले पुल पर चढ़ा ही था कि अचानक उसे पुल के नीचे से सिसकने की आवाज सुनाई दी। उसने नीचे की ओर देखा कि सूखी नदी के पेटे में एक महिला लेटी थी और एक शिशु उसकी छाती से चिपट कर स्तनपान कर रहा था।

उस महिला ने रोते हुए कहा, "मैं बच्चे को गोद में लेकर पुल पर चल रही थी। मेरी असावधानता से मैं फिसल कर पुल के नीचे गिर पड़ी। मेरी कमर टूट गई है और मैं चलने में असमर्थ हो गई हूं!"

"केला बच्चा" ने सोचा, "यदि मैं यह औषधि उसे दे देता हूं, तो मेरे बापू कभी भी चगे नहीं हो पाएंगे। किन्तु यदि मैं नहीं देता, तो उसके और शिशु के प्राण नहीं बचेंगे।" अतएव वह पुल के नीचे उतर आया और औषधि को उस महिला के मुंह में रख दिया। सहसा वह महिला शिशु को बांहों में ले कर उठ खड़ी हुई। उसने पास बैठे छोटे मोर की ओर इशारा करते हुए "केला बच्चा" से कहा, "छोटे भाई, तुम बहुत दयालु हो। यह छोटा मोर तुम्हें भेंट देना चाहती हूं।"

"केला बच्चा" ने कहा, "धन्यवाद भाभी, किन्तु मुझे यह नहीं चाहिए।" किन्तु इसी बीच वह महिला शिशु को बांहों में कस कर एक छलांग में पुल पर जा चढ़ी थी और पलक मारते ही ओझल हो गई थी।

"केला बच्चा" छोटे मोर को ले कर घर लौट गया। घर पहुंच कर उसने अपने अनुभवों की सारी कहानी पिता को कह सुनाई। पिता ने कहा, "तुम अच्छे बच्चे हो, तुमने अच्छा किया।"

"केला बच्चा" ने छोटे मोर के सुंदर परों पर हाथ फेरते हुए कहा, "नन्हे मयूर, तुम यहां निश्चिंततापूर्वक हमारे साथ रहो! बाद में जब कभी मैं फिर उस महिला से मिलूंगा, मैं तुम्हें तुम्हारे घर में पहुंचा दूंगा।"

छोटे मोर ने अपनी सुन्दर पूंछ फैलाई और मधुर स्वर में गाना शुरू किया।

एक दिन कुबड़े बूढ़े की पीठ में दर्द उठा। उसने कपड़े उतार कर एक हाथ से अपनी पीठ की मालिश की। अचानक छोटा मयूर उड़कर उसके कंधे पर जा बैठा और उसकी

पीठ पर कई चोंचें मारीं। बूढ़ा तुरन्त जमीन पर गिर गया।

यह देखकर "केला बच्चा" को बहुत गुस्सा आया। वह बांस का डंडा उठा कर मयूर को मारने दौड़ आया। मयूर अपने पंख फड़फड़ाकर आकाश की ओर उछला तथा सरसरा कर अपने पर उतार कर एक सुंदर युवती के रूप में बदल गया।

"केला बच्चा" स्तंभित रह गया।

युवती नदी से एक चुल्लू भर पानी ले आई। जब उसने उस पानी को कुबड़े बूढ़े के मुंह में उडेला तो बूढ़ा तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ। अब उसकी पीठ सीधी हो गई थी और वह पहले से अधिक जवान प्रतीत हो रहा था।

तब से सरिता के तट पर बूढ़े का तीन व्यक्तियों वाला परिवार खुशी से जीवन बिताने लगा।

आयशा

(कजाख जाति)

पहले समय में एक चरागाह में आयशा नामक लड़की रहती थी। उसके पिता बूढ़े हो गए थे। वे बहुत गरीब थे। उनके घर की एकमात्र सम्पत्ति एक दूध न दे सकने वाली पुरानी गाय ही थी।

एक दिन, उसके पिता जलावन से भरी गाड़ी हांकते हुए बाजार में बेचने गए ताकि घर के लिए कुछ बाजरा खरीद सकें। रास्ते में बूढ़े को एक तुंदियल सौदागर मिला। सौदागर ने जलावन का निरीक्षण किया और फिर उसे भी सिर से पैरों तक देखा।

सौदागर ने पूछा, "अरे, बूढ़े, क्या तुम इसे बेचोगे ?"

"जी हां, अवश्य।"

"कितने रुपए लोगे ?"

"पांच रुपए नकद।"

"सब के ?"

"जी, सब के।" नेकदिल बूढ़े ने धूर्त सौदागर का छल न समझते हुए मुस्करा कर जवाब दिया।

सौदागर तुरत मुड़ कर पास खड़े अन्य सौदागरों से चिल्लाया, "इसने जो कहा वह आप लोगों ने सुना है न ? वह पांच रुपए में सबका सब मुझे बेचने को सहमत हो गया है।"

सौदागरों ने हां कह कर सिर हिलाये, तो तुंदियल सौदागर ने बूढ़े से गाड़ी को हांक कर अपने आंगन में ले जाने को कहा। बूढ़ा रस्सी सुलझा कर जलावन उतारने ही वाला था कि तुंदियल सौदागर ने अपने जेब से पांच रुपए निकाल कर बूढ़े को थमाते

हुए कहा, "अब तुम जा सकते हो, थोड़ी देर बाद मैं इसे एक दूसरे आदमी से उतरवा लूंगा।"

सौदागर का मतलब न समझ बूढ़ा उसकी ओर आंखें फाड़ कर देखता रह गया। सौदागर ने आत्मसंतोष में हंस कर कहा, "क्या तुमने नहीं कहा था कि तुम सबका सब मुझे बेचोगे? सबमें तो जलावन, गाड़ी, रस्सी, कुल्हाड़ी और यह बेकार पुरानी गाय भी शामिल हैं।"

बूढ़े ने गुस्से से काफी देर तक एक भी शब्द नहीं कहा। अंत में उसने जोर से जमीन पर थूका, "थू:! मैं नहीं बेचता!" कह कर वह गाय की लगाम खींच कर चलने को तैयार हुआ।

अब तुंदियल सौदागर का तेवर बदल गया। उसने गाय की लगाम पकड़ कर कहा, "क्या कहा? नहीं बेचते? सौदा तो एक बार दाढ़ी सहलाते ही तय हो जाता है। अब तुम सौदा कैसे तोड़ सकते हो? सौभाग्यवश, मेरे पास बहुत से गवाह हैं। अच्छा, हम काजी (इस्लामी धार्मिक न्यायाधीश) से मिलें और उससे हमारे बीच न्याय कराएं।"

बूढ़े ने सोचा कि वह एक गरीब आदमी है। सत्य उसके पक्ष में हो तब भी काजी उसका समर्थन नहीं करेगा। इसके अलावा ये गवाह उसके विरोधी हैं। अतएव उसे गुस्सा पी कर पांच रुपए जेब में रख कर घर लौटना पड़ा। घर पहुंचकर उसने अपनी आपबीती बेटी को सुनाई। आयशा ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "आप दुःखी न हों। कल आप पड़ौसी से एक बैल उधार ले लें। हम घर में मौजूदा जलावन को बैल पर लाद कर सौदागर की तरफ जाएंगे। यदि वह आपसे पूछे कि आप यह जलावन बेचना चाहते हैं या नहीं, तो आप उसे कह दें कि यह जलावन मेरा है और उसे मुझसे पूछने को कहें।"

अगले दिन, बूढ़ा बेटी के कहे अनुसार जलावन से लदा बैल हांकते हुए सौदागर के पास आया। बूढ़े को आता देख कर सौदागर को कल हुए उस संतोषजनक सौदे की याद हो आई। उसने गर्वीली मुस्कराहट से पूछा, "ए, बूढ़े! यह जलावन बेचना चाहते हो?"

"बैल इस लड़की का है। आप उससे पूछिए।"

तुंदियल सौदागर इस कम उम्र लड़की को तुच्छ समझता था। उसने रूखे स्वर में पूछा, "क्या तू इसे बेचना चाहती है?"

"हां।"

"कितने रुपए लेगी ?"

"पांच रुपए।"

"सब के ?"

"हां, सब के।"

तुंदियल सौदागर चट पास खड़े "गवाहों" की ओर चिल्लाया, "आप लोगों ने सुना है न कि सब का दाम पांच रुपए है !"

"गवाहों" के सिर हिलाने के बाद तुंदियल सौदागर बूढ़े से बैल को अपने आंगन में हांकने को कह ही रहा था कि आयशा ने उसकी बात काटकर कहा, "क्या आप मुझे अपने हाथ से पांच रुपए देंगे ?"

"बेशक, अपने हाथ से दूंगा !"

यह सुनकर आयशा ने भी पास खड़े तमाशा देखने वालों की ओर ऊची आवाज में में कहा, "आप लोगों ने इसका कहा सुना है न ? इसने कहा है कि वह अपने हाथ से मुझे रुपए देगा।"

दूसरों की बात तो दरकिनार, उस धूर्त सौदागर तक की समझ में नहीं आया कि यह लड़की क्या करेगी। उन्होंने देखना चाहा कि लड़की किस तरह यह उलझन सुलझाएगी। उन्होंने जवाब दिया, "हां, हमने सुना है !"

सभी लोग बैल के पीछे चल कर तुंदियल सौदागर के आंगन में प्रविष्ट हुए। तुंदियल सौदागर अपने जेब से पांच रुपए निकाल कर आयशा को थमा ही रहा था कि आयशा ने झटपट उसकी कलाई पकड़ी और उसे काटने के लिए कुल्हाड़ी उठाई। इससे तुंदियल सौदागर के प्राण सूख गए। वह चीखने-चिल्लाने लग गया, "ओह, तू. . . यह क्या कर रही है ?"

"क्या आपने नहीं कहा था कि आप अपने हाथ से मुझे रुपए देंगे ? सौदा तो एक बार दाढ़ी सहलाते ही तय हो जाता है। हमने सौदा किया है। मेरे सारे जलावन के बदले में आपका एक गंदा हाथ मुझे मिलेगा। यह तो मेरे लिए एक नुकसानदेह सौदा है !"

तुंदियल सौदागर ने सोचा कि चूंकि यह घटना अभी ही घटित हुई है और सभी गवाह वहां उपस्थित हैं, तो काजी के पास जाने पर भी वह इतने लोगों का मुकाबला करने में असफल हो जाएगा। उसे मजबूरन एक हजार रुपए के बदले में अपने हाथ का सौदा करना पड़ा।

कहावत है : "चोर न सिर्फ भेड़ की चोरी करने में असफल हुआ बल्कि उसकी टांगें

भी भेड़िया फसाने वाले फन्दे में जकड़ गई ।" व्यर्थ में एक हजार रुपए गंवा कर सौदागर को बहुत गुस्सा आया । वह दिन भर सोचता रहा कि किस तरह आयशा से बदला ले । अंत में उसने एक विचक्षण उपाय सोच निकाला । वह आयशा के पास आया और उससे कहा, "हम दोनों काजी के यहां जाकर झूठे किस्से कहें । हम दोनों में से जो भी दूसरे के कहे को झूठा समझे वह दूसरे को एक हजार रुपए देकर अपनी हार माने । अगर वह दूसरे के कहे को सच्चा समझता है, तो उसे अपनी बात को साबित करना होगा ।"

आयशा ने सहमति प्रगट कर दी और तय हुआ कि दोनों अगले दिन एक साथ काजी के पास जाएंगे । यह खबर सुन कर सारे गांववासी दूसरे दिन उनके काजी के पास जाने से पहले ही काजी के यहां इकट्ठे हो गए । थोड़ी देर के बाद आयशा और तंदियल सौदागर भी वहां आ पहुंचे । उन्होंने अपने समझौते की बात काजी और उपस्थित लोगों को

सुनाई। सौदागर ने पहले झूठ बोलना शुरू किया।

"इस साल मैंने पांच किलोग्राम गेहूं बोया। बोने से पहले मैंने गेहूं में मिश्रित हुए दूसरे बीजों को छांट कर फेंक दिया, इसलिए शुद्ध गेहूं के पौधे उगे। उसकी कटाई के समय खेत में अन्य कोई घास आदि भी दिखाई नहीं पड़ी। लेकिन, जब मैंने गेहूं के गट्ठर बांधे, प्रत्येक गट्ठर में से एक-एक मेमना निकल आता नजर आया। गट्ठरों को खलिहान में ढो लाने के बाद गेहूं के ओसाये जाने के समय भी हरेक दाने में से एक-एक मेमना दौड़ निकला। जब ओसाए गेहूं को चक्की में लाकर पीसा गया, तो दो पाटों के बीच से सारे मेमने में-में करते निकल आए।"

जब तुंदियल सौदागर यह कह रहा था, समस्त सुनने वालों ने लगातार सिर हिलाकर प्रकट किया कि वह झूठ बोल रहा है। लेकिन जब काजी ने आयशा से पूछा कि सौदागर की बातें सच्ची हैं या नहीं, उसने जवाब दिया, "उसका प्रत्येक शब्द सच है! चूंकि गेहू के बीजों का सूक्ष्मतापूर्वक चुनाव किया गया है, इसलिए उसके पौधे स्वभावतया शुद्ध हैं। उसके गट्ठर देखने में मांसल मेमनों जैसे ही होते हैं, और ओसाए गेहूं के दाने अनगिनत मेमने जैसे ही दिखाई देते हैं। निस्सदेह, गेहूं इस तरह आटा बन गया है मानो मेमने में-में कर रहे हों।" सभी श्रोताओं को उसकी बात तर्कसगत लगी और सौदागर तथा काजी भी उसका प्रतिवाद नहीं कर सके।

अब आयशा की बारी आई। उसने तुंदियल सौदागर को एक नजर देख कर कहा, "मेरा चाचा काफिलों का मार्गदर्शक है। एक दिन, वह रेगिस्तान में छः सौ ऊटों वाले काफिले का मार्गदर्शन कर रहा था कि डाकुओं का एक गिरोह उसके सामने आ धमका। इन डाकुओं ने काफिले का तमाम माल लूट लिया और कुछ निर्दोष पथिकों की हत्या भी कर दी। कल मेरे चाचा ने मुझे बताया कि निर्दोष लोगों की हत्या करने वाले उन डाकुओं के सरगना तुम्हीं हो। अब बोलो कि मेरी बातें सच हैं या नहीं?"

आयशा का अंतिम वाक्य पूरा होने से पहले ही लोगों की भीड़ गरजने लग गई। तुंदियल सौदागर डर के मारे बेहोश हो गया। काफी देर बाद वह होश में आया। दर्शक क्रोध से उसकी ओर चिल्लाए, "जल्दी जवाब दो, ओ निष्ठुर डाकू!" काजी ने भी उससे प्रश्न किया, "अरे, सौदागर! बताओ कि उसकी बातें सच्ची हैं या नहीं?" सौदागर जानता था कि अगर वह उसकी बातों को सच्चा कहेगा, तो उसे न सिर्फ छः सौ ऊंटों का हर्जाना अदा करना पड़ेगा बल्कि हत्या का दण्ड भी भुगतना पड़ जाएगा। लेकिन, अगर वह उसकी बातों को झूठा कहेगा, तो वह एक बार फिर एक हजार रुपए गंवा देगा। वह मुसीबत में फस गया! यह देख कर कि वह प्रश्न का उत्तर नहीं देना

चाहता दर्शकों ने उस पर और ज्यादा दबाव डाला। ऐसी लाचार स्थिति में उसने दबी-मरी आवाज में कहा, "उस . . . उसकी बातें . . . झूठी हैं !"

इस तरह आयशा ने फिर एक बार लोभी सौदागर पर विजय पाई।

सुनहरी लूशङ बांसुरी

(याश्रो जाति)

पहले समय में एक माता और बेटी दोनों एक गहन पर्वत के बीच रहती थीं। बेटी को लाल कपड़े पहनना पसंद था, इसलिए उसे नन्हीं स्कार्लेट कहा जाता था।

एक दिन जब माता और बेटी खेत में काम कर रही थीं, अचानक तेज हवा का एक झोंका आया और एक दुष्ट ड्रैगन आकाश में प्रकट हुआ। ड्रैगन ने अपने पंजे बढ़ाकर नन्हीं स्कार्लेट को पकड़ लिया और उसे लेकर पश्चिम की ओर उड़ गया। माता ने बेटी की चिल्लाने की अस्पष्ट आवाज सुनी :

"केवल मेरा छोटा भाई बचा सकेगा मुझको,
मत भूलो, प्यारी मां ! इसको मत भूलो !"

शोकार्त बूढ़ी माता ने अपने आंसू पोंछकर आकाश की ओर ताकते हुए कहा, "हे भगवान ! मेरे तो केवल एक ही बेटी है, उसका कोई छोटा भाई नहीं है !" वह आह भर कर लड़खड़ाती हुई घर की ओर लौट गई। लगभग आधा फासला तय करने के बाद उसके सफेद बाल मार्ग के किनारे पर उगे एक लाल बेइबेरी पेड़ की डालियों में फंस गए। डालियों से बाल छुड़ाकर उसने एक टहनी पर एक गुलाबी लाल बेइबेरी उगा देखा और उसे तोड़कर अपने मुंह में रख लिया।

घर में लौटने के कुछ ही समय बाद उसे एक गुलाबी गाल वाला बच्चा पैदा हुआ। उसने बच्चे का नाम "बेइबेरी बच्चा" रखा।

यह बच्चा बड़ी तेजी से बड़ा हो गया। कुछ ही दिनों में वह एक पन्द्रह वर्षीय युवक जैसा हो गया।

उसकी माता उसे बड़ी बहन को बचाने के लिए भेजना तो बहुत चाहती थी, किन्तु

उसे भय था कि कहीं उसका बेटा खतरे में न पड़ जाय । अतएव उसके पास गुप्त रूप से आंसू बहाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था ।

एक दिन, एक कौआ उड़ आया और मकान की ओरी पर बैठा गाने लगा :

"बेचारी बड़ी बहन ! आह, बहुत ही अभागी बहन !
रोती रहती दिन भर ड्रैगन की गुफा में वह ;
पीठ पर घाव रहते भी वह चट्टान खोदती रही
बेचारी बड़ी बहन ! आह, बहुत ही अभागी बहन ! "

यह शिकायत सुनकर "बेइबेरी बच्चे" ने अपनी माता से पूछा, "मांजी, क्या मेरी कोई बड़ी बहन भी है ?"

माता ने आंसू बहाते उत्तर दिया, "बेटा, तुम्हारी एक बड़ी बहन है । उसे लाल कपड़े पहनना पसंद है, इसलिए उसे सभी नन्हीं स्कार्लेट कहते हैं । दुष्ट ड्रैगन उसे हम से छीन कर ले गया है । उस दुष्ट ड्रैगन ने बहुत से लोगों की हत्या कर डाली है ।"

"बेइबेरी बच्चे" ने एक बड़ी लाठी उठाकर कहा, "मैं उस दुष्ट ड्रैगन का वध कर दूंगा, मैं अपनी बड़ी बहन और जनगण को उससे मुक्त करूंगा ! "

माता दरवाजे के सहारे खड़ी आंखों में आंसू भर कर बेटे को जाते देखती रही ।

"बेइबेरी बच्चा" बहुत समय तक चलते रहने के बाद एक पहाड़ी पगडंडी पर जा रहा था कि उसे एक नुकीली और चिकनी बड़ी सी चट्टान रास्ते के बीच पड़ी दिखाई दी । उस चट्टान को केवल चढ़ कर ही पार किया जा सकता था । परन्तु चट्टान का ऊपरी हिस्सा बहुत चिकना था । तनिक सी भी असावधानी से फिसलकर गिरने का खतरा था ।

"बेइबेरी बच्चे" ने कहा, "यह कैसा मार्ग-अवरोधक है ! मुझे इसे हटा ही देना चाहिए, अन्यथा बहुत से लोग इससे फिसलकर गिरते रहेंगे ।" उसने अपनी बड़ी लाठी को चट्टान के नीचे धंसा कर जोर से ऊपर उठाने की चेष्टा की । कड़ाके की आवाज के साथ लाठी दो भागों में टूट गई । इसके बाद उसने दोनों हाथों से चट्टान पकड़कर जोर से उसे आगे ढकेल दिया । चट्टान लुढ़ककर घाटी में गिर गई ।

चट्टान के नीचे बन गए गढ़े में एक चमकदार सुनहरी लूशङ बांसुरी पड़ी दिखाई दी । "बेइबेरी बच्चे" ने उसे उठाकर मुंह लगाकर बजाया, तो उसमें से स्पष्ट और मधुर स्वर निकलने लग गए ।

अचानक रास्ते के सभी केंचुए, मेंढक और छिपकलियां नाचने लग गए । "बेइबेरी बच्चा" जितनी तीव्र गति से बांसुरी बजाता वे उतनी ही तेजी से नाचते । किन्तु ज्यों

हीं वह बांसुरी बजाना रोक देता, त्यों ही उनका नाचना भी रुक जाता था। "बेइबेरी बच्चे" ने सोचा, "ग्राहा, मुझे उस दुष्ट ड्रैगन को ग्रपने वश में कर लेने का उपाय सूझ गया!"

हाथ में बांसुरी लिए वह ग्रागे बढ़ गया। एक विशाल चट्टान से लदे पहाड़ पर ग्राकर उसने देखा कि एक हिंस्र ड्रैगन गुहा के मुंह में मानवी ग्रस्थियों के ढेर के पास लेटा हुग्रा है ग्रौर एक लाल कपड़े पहनी लड़की ग्रांसू बहाती हुई छेनी से गुहा खोद रही है। दुष्ट ड्रैगन ग्रपनी पूछ से लड़की की पीठ पर प्रहार करते हुए कर्कश स्वर में कह रहा था :

"हा-हा-हा-हा, युवती लड़की
यदि न करना चाहती मुझसे विवाह,
खोदती ही रह गुहा को नित्यप्रति तू!
जब तलक पहुंचे नहीं तू गुहा के उस छोर,
जिन्दगी तेरी करूंगा मैं हराम!"

"बेइबेरी बच्चा" पहचान गया कि लाल वस्त्र पहने लड़की उसकी बड़ी बहन ही है। उसने चिल्लाकर ड्रैगन से कहा :

"ग्ररे ग्रो तू दुष्ट ड्रैगन,
कष्ट देता ग्रग्रजा को तू मेरी?
जब तलक बजती रहेगी बांसुरी यह,
प्राण तेरे भी रहेंगे कष्ट पाते।"

उसने बांसुरी बजाना शुरू कर दिया। दुष्ट ड्रैगन स्वयं पर नियंत्रण खोकर नाचने लग गया। नन्हीं स्कार्लेट छेनी पटक कर यह दृश्य देखने के लिए गुहा से बाहर निकल ग्राई।

"बेइबेरी बच्चा" निरंतर बासुरी में फूंक मारता रहा ग्रौर दुष्ट ड्रैगन कभी ग्रपने शरीर को तोड़ता-मरोड़ता, कभी कुण्डली मारता-खोलता नाचता रहा। बांसुरी जितनी तेज बजती, ड्रैगन भी उतना ही तेज नाचता।

नन्हीं स्कार्लेट ग्रपने भाई से बात करने ग्रागे बढ़ ग्राई। "बेइबेरी बच्चे" ने हाथ के इशारे से उसे बताया कि वह बांसुरी बजाना बन्द नहीं कर सकता, ग्रन्यथा हिंस्र ड्रैगन उन पर झपट कर उन्हें खा लेगा।

"बेइबेरी बच्चा" जल्दी-जल्दी बांसुरी बजाता गया ग्रौर ड्रैगन भी तेजी से ग्रपने बदन को मरोड़ता-घुमाता गया। वह इतनी तेजी से घूम रहा था कि उसकी ग्रांखों

मे चिनगारियां छूटने लगीं। उसके नथुनों में सांस भर गई और वह जोर-जोर से हांफने लग गया। उसने चिरौरी की :

> "ओह, मेरे नन्हें भाई,
> बंद कर दो बांसुरी, अब और मुझको मत सताओ !
> आपकी इस बहन को अब लौट जाने दे रहा घर,
> बख्श दो तुम प्राण मेरे !"

लेकिन, "बेइबेरी बच्चे" ने बांसुरी बजाना बन्द नहीं किया। वह बांसुरी बजाते-बजाते एक बड़े तालाब की ओर चला गया, और ड्रैगन भी अपने लम्बे बदन को मरोड़ते-मिकोड़ते उसके पीछे-पीछे चला आया। छपाके की आवाज के साथ ड्रैगन तालाब में गिर गया। पानी में गिरने के बाद भी वह उसी तरह नाचता रहा जिससे तालाब में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं। अब तक वह बहुत थक गया था। उसकी आंखों से आग की चिनगारियां छूट रही थीं, और वह जोर-जोर से हांफ रहा था। उसने भर्राई आवाज

ने "बेइबेरी बच्चे" से फिर चिरौरी की :

"ओह, मेरे नन्हें भाई,
छोड़ दो मुझको, अरे अब छोड़ दो !
है प्रतिज्ञा, अब रहूंगा मैं सरोवर मध्य गहरे,
अब न जीवन भर करूंगा दुष्टता के कार्य ।"

"बेइबेरी बच्चे" ने कहा :

"दुष्ट ड्रैगन, सुनो मेरी बात !
रहोगे अब से सदा गहरे सरोवर मध्य,
और अब दुष्कर्म आजीवन न करने पाओगे ! "

ड्रैगन ने स्वीकार में सिर हिलाया । ज्यों ही बांसुरी बजाना बन्द हुआ, वह तालाब के तल में डूब गया।

"बेइबेरी बच्चा" बड़ी बहन का हाथ पकड़ कर मुस्कराता हुआ घर के लिए रवाना हो गया।

किन्तु, वे थोड़ी दूरी ही गए थे कि तालाब में छपछपाहट सुनाई दी । उन्होंने पीछे मुड़कर देखा कि दुष्ट ड्रैगन पानी से सिर ऊपर उठाए, मुंह फाड़े, पंजे नचाते हुए उनकी ओर लपका चला आ रहा है ।

नन्हीं स्कार्लेट ने कहा :

"खोदना कुएं को उसकी पूरी गहराई तक,
घास को उखाड़ना जड़ से जरूरी है,
जब तक दुष्ट ड्रैगन की हत्या नहीं की जाती,
लोगों को कष्ट देना जारी वह रखेगा ! "

"बेइबेरी बच्चा" तेजी से तालाब के किनारे लौट आया। उसने फिर से बांसुरी बजाना शुरू कर दिया । ड्रैगन पुनः तालाब में गिर कर अपने लम्बे बदन को मरोड़ने-घुमाने लग गया।

"बेइबेरी बच्चे" ने तालाब के किनारे बैठे सात दिन और सात रात लूशङ बांसुरी बजाई। तब कहीं दुष्ट ड्रैगन का दम निकला। उसका शव पानी की सतह पर तैर आया।

भाई-बहन दोनों बड़ी खुशी से ड्रैगन के शव को घसीटते हुए घर लौट गए । अपने दोनों बच्चों को सही-सलामत घर लौटते देखकर माता की खुशी का अन्त नहीं था।

उन्होंने ड्रैगन की खाल का छप्पर और उसकी हड्डियों को शहतीर और खम्भे

बनाकर मकान खड़ा किया तथा उसके सींगों का हल बनाया।

ड्रैगन के सींगों वाला हल बिना बैलों द्वारा खींचे ही अच्छी तरह से काम देता था। उन्होंने अनेक खेत जोते और बड़ी मात्रा में फसलें उगाईं। अब वे सुख-चैन से अपना जीवन बिताने लगे।

श्वेता और इनलिङ

(ह्वेइ जाति)

बहुत पहले कानछाएलिङ नाम का एक बड़ा पहाड़ था उसकी तलहटी में नदी का एक मोड़ था। यह एक बहुत रमणीक स्थान था जहां की भूमि उपजाऊ थी और बारहों महीने ताजा फूल खिलते रहते थे।

इस स्थान में तीस परिवारों के गरीब शरणार्थी रहते थे जो विभिन्न स्थानों से वहां आए थे। वे सभी एक ही परिवार के सदस्यों की भांति सुख में सुख और दु:ख में दु:ख भोगते थे और एक प्राण होकर अपने परिश्रमी हाथों से खेती और शिकार करते हुए जीवनयापन करते थे।

उनमें श्वेता नामक एक युवक था। वह बचपन में ही अपने माता-पिता के साथ यहां आया था। बाद में दुर्भाग्यवश पिता और माता एक के बाद एक चल बसे और वह अनाथ हो गया। गांव के लोगों ने उसकी अपने बेटों जैसी ही देखभाल की और पाला-पोसा। उसी गांव में ली नाम की एक विधवा थी। उसकी इकलौती बेटी थी जिसका नाम इनलिङ था। मां-बेटी दोनों श्वेता के साथ अधिक अच्छा बर्ताव किया करती थीं। श्वेता भी गांव के लोगों को अपने संबंधी तथा विधवा ली को अपनी मां और इनलिङ को अपनी सगी बहन मानता था।

श्वेता बचपन से ही मेहनती और साहसी था। सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में ही वह हट्टा-कट्टा और बलशाली दीखने लग गया था। उसने तरह तरह के सामरिक कौशल सीख लिए थे। विशेषकर वह तीरंदाजी में अत्यन्त निपुण हो गया था। उसका छोड़ा तीर निशाने पर अवश्य ही जा लगता था। पर्वत पर जो भी जंगली जानवर उसे मिलते, उनमें से एक भी उसके साथ से बचकर निकल नहीं पाता था। साथ ही, वह

खेतीबारी में भी दक्ष था। उसकी बोई फसल अच्छी तरह से उगती थी। एक दिन, वह पर्वत पर शिकार करने गया। वहां उसे एक सफेद बालों वाला बूढ़ा मिला। उस बूढ़े ने उसे एक जादुई धनुष और तीन स्वर्ण तीर दिए। तब से जो भी हिंस्र बाघ, चीता या सियार मिलता वे सभी उसके जादुई धनुष और स्वर्ण तीरों से अपनी जान गंवा बैठते।

इनलिङ चौदह-पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही अत्यन्त बुद्धिमान और सुन्दर दिखने लग गई थी। वह कसीदा और बुनाई में निपुण थी। उसके काढ़े फूल और पक्षी जीवित मालूम होते थे। लोग उसके बुने कपड़े खरीदने के लिए होड़ लगाते थे। इसके अतिरिक्त वह गाने में भी बहुत कुशल थी। उसकी आवाज इतनी सुरीली और मनमोहक थी कि छोटे पक्षी और छोटे जंतु भी उसे सुनने के लिए दूर से उड़-दौड़ आते थे। एक दिन, वह पर्वत पर जलावन काटने गई जहां उसे एक दयालु दादी मिली। उस दादी ने उसे एक जादुई बांसुरी दी। वह बांसुरी इतनी अच्छी तरह से बजाती थी कि हर थका-मांदा आदमी उसकी बांसुरी की आवाज सुनकर ही अपनी तमाम थकान भूल जाता था।

श्वेता और इनलिङ उत्साहपूर्वक दूसरों की मदद किया करते थे। वे अपने शिकार और जलावन गांववासियों को बांट देते थे। जिस किसी के जीवन में कोई भी कठिनाई आती, वे उसकी सहायता करते थे। वे बड़ी प्रसन्नतापूर्वक गांववासियों के साथ रहा करते थे।

उस साल, गांव के कुछ लोगों को एक ऐसा रोग हो गया जिससे रोगियों का पेट धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। इस रोग का इलाज बहुत कठिन था, इसलिए रोग शीघ्र ही सारे गांव में संक्रामक होने लगा, और अधिक से अधिक लोग रोगग्रस्त हो गए। रोगी पीड़ा से कराहते रहते थे। यह स्थिति देखकर श्वेता और इनलिङ बहुत दु:खी हो गए। उन्होंने पक्का इरादा कर लिया कि वे किसी बलिदान की परवाह न कर अपने गांववासियों को मुसीबत से मुक्त करेंगे। इस गांव में एक पढ़े-लिखे सज्जन, मा साहब, रहते थे, जो चिकित्सा शास्त्र के बारे में थोड़ा बहुत जानते थे। इसलिए श्वेता और इनलिङ ने उनसे पूछा कि यह क्या रोग है, और इस रोग का कैसे इलाज किया जाय। मा साहब ने जवाब दिया :

"यह एक बड़े पेट वाला रोग कहा जाता है। इसका इलाज करना बहुत कठिन है। किन्तु सुना जाता है कि एक ऐसा नुसखा मौजूद है जिससे इस रोग का इलाज किया जा सकता है। फिर भी इस नुसखे में दो चीजें ऐसी हैं जिन्हें खोज पाना बहुत कठिन

है। ये दो चीजे हैं माल्येनश्येन नामक जड़ी-बूटी और चीते का पित्तकोष। यदि ये दो चीजें मिल सकें तो इस रोग का आसानी से इलाज किया जा सकेगा। यह आवश्यक है कि ये दो चीजें तीन महीनों के अंदर ही खोज ली जाएं, अन्यथा रोगियों के प्राण नहीं बचेंगे।"

मा साहब की बातें सुनकर श्वेता और इनलिङ ने परस्पर विचार-विमर्श कर निर्णय लिया कि वे ये दो चीजें खोजने अलग-अलग जाएंगे। फिर उन्होंने मा साहब से पूछा कि ये दोनों चीजें कहां से मिल सकेंगी। मा साहब ने स्मरणशक्ति पर बल दे कर कहा :

"मैंने वृद्धों से सुना है कि वानशि पर्वत की श्येनक् गुफा में चीते पाए जाते हैं। वे हर साल केवल एक बार अपनी गुफा से बाहर निकलते हैं और आम तौर पर कड़ाके की गर्मी अर्थात जुलाई-अगस्त में निकलते हैं। बाद में एक राक्षस इस गुफा में रहने लगा, तब से किसी आदमी ने उस गुफा तक जाने का साहस नहीं किया। माल्येनश्येन यहां से बहुत दूर वानह्वा पर्वत पर पायी जाती है। किन्तु, यदि आप वानह्वा पर्वत जाएंगे तो आपको वानन्याओ गुफा से गुजरना पड़ेगा। उस गुफा में अनेक विचित्र हिंसक पक्षी रहते हैं। साधारण लोग उस गुफा से नहीं गुजर सकते।"

मा साहब की बातें सुनकर श्वेता और इनलिङ न सिर्फ इन कठिनाइयों से नहीं डरे बल्कि उन्होंने औषधि खोजने के अपने इरादे को और भी अधिक पक्का कर लिया।

वे औषधि खोजने के लिए अपने साथ अलग-अलग चार युवकों और चार युवतियों को ले गए।

श्वेता चार युवकों को लेकर दिन-रात वानशि पर्वत की ओर चलता गया। रास्ते में उन्हें छः बड़े पर्वतों और छः गहरी घाटियों को पार करना था। श्वेता के साथ जाने वाले चार युवक यह देखकर कि पर्वत बहुत दुर्गम हैं और घाटियां बहुत गहरी हैं, डर के मारे एक के बाद एक वापस चले गए। अंत में सिर्फ श्वेता अकेला ही बड़ी कठिनाई से छहों बड़े पर्वतों और छहों गहरी घाटियों को पार कर वानशि पर्वत जा पहुंचा। उस पर्वत पर उसने देखा कि घाटी में नाना प्रकार के अदृष्टपूर्व फूल, घास और पेड़ उगे हैं। पेड़ों पर नाना प्रकार के अदृष्टपूर्व सुन्दर पक्षी बैठे हैं और नाना प्रकार के छोटे जंतु चंचलतापूर्वक उछल-कूद कर रहे हैं। किन्तु श्वेता को इस सुन्दर दृश्य का आनन्द उठाने की फुरसत नहीं थी। वह वानशि पर्वत के सामने की एक गुफा में छिपे चीते के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। जब भी उसे भूख लगती, वह कुछ जंगली जानवरों का शिकार कर पेट भर लेता और जब उसे प्यास लगती, चश्मे का पानी

पीकर अपनी प्यास बुझा लेता। इस तरह अनेक समय तक प्रतीक्षा करते हुए भी उसने चीते की छाया तक नहीं देखी। एक दिन, उसे अचानक नजर आया कि पेड़ों पर बैठे पक्षी एक के बाद एक घबराहट से चींचीं करते हुए उड़ गए और जमीन पर छोटे जंतु भी एक के बाद एक भाग खड़े हुए। क्षण भर में सारे वानशि पर्वत पर सन्नाटा छा गया। उसने अपने शिकारी के अनुभव से महसूस किया कि कोई हिंसक जानवर वहां आ पहुचा था। उसने गुफा की ओर तीर-कमान और शिकारी नेजा साधा और सूक्ष्मता-पूर्वक बाहर के हालचाल पर ध्यान रखा। थोड़ी देर बाद एक लाल प्रकाश श्येनकू गुफा से निकल आया जिससे सारी घाटी आलोकित हो गई। लाल प्रकाश के साथ एक हिंस्र चीता गुफा से बाहर निकला। यह देखकर श्वेता बहुत खुश हुआ। उसने फौरन अपना जादुई धनुष उठाया और लगातार दो तीर चलाकर चीते की आंखों को फोड़ डाला। चीता पीड़ा से दहाड़ता हुआ उछलने लगा। यह मौका पाकर श्वेता उसकी ओर लपक गया और अपना शिकारी नेजा उठाकर उसे मार डाला। फिर उसने चीते की खाल उधेड़ी और उसका पित्तकोष बाहर निकाल लिया। इसके बाद उसने विजयपूर्वक घर लौटने का रास्ता पकड़ा।

इनलिङ श्वेता से अलग होने के बाद चार युवतियों को लेकर माल्येनश्येन खोजने के लिए रवाना हो गई थी। वे अनवरत आगे बढ़ती गईं। पता नहीं कितने दिन चलने के बाद वे वानह्वा पर्वत के सामने वानन्याओ गुफा तक आ पहुंचीं। चारों युवतियों ने गुफा के अन्दर देखा और पाया कि गुफा बहुत अंधेरी और गहरी थी। अन्दर से भिन्न-भिन्न सनसनीखेज हुंकार आ रहे थे। गुफा के मुंह पर पहरा देते कुछ हिंसक और विशाल-काय पक्षी उनकी ओर घूर कर देख रहे थे। यह देखकर चारों युवतियां भयभीत हो उठीं। बाद में वे भी एक-एक कर अपने घर वापस चली गईं। यद्यपि इनलिङ कुछ व्याकुल हुई, लेकिन यह सोच कर कि गांव के लोग मौत के खतरे में पड़े हैं, उसने अपना साहस बटोर लिया। उसने जादुई बांसुरी बजाना शुरू किया। बांसुरी की मधुर आवाज सुनकर विचित्र पक्षी धीरे-धीरे सो गए। मौका पाकर वह फुर्ती से वानन्याओ गुफा पार कर एक दूसरी पर्वतीय घाटी में आ पहुंची। इस समय उसे भूख लगी। वह कुछ खाने की चीजें खोजने ही वाली थी कि निकटवर्ती छोटी पहाड़ी पर एक छोटी झोंपड़ी के सामने उसे एक सफेद बालों वाला बूढ़ा बैठा दिखाई दिया। उसने आगे बढ़कर बूढ़े का अभिवादन किया और उससे वानह्वा पर्वत जाने का रास्ता पूछा। बिना कुछ कहे बूढ़ा उठकर झोंपड़ी में प्रविष्ट हुआ और थोड़ी देर बाद एक कटोरा सूप और एक बड़ी रोटी लाकर उसे इनलिङ को दे दी। जब इनलिङ खा-पी चुकी तब बूढ़े ने उसे

वानह्वा पर्वत जाने का रास्ता दिखा दिया। इसके फौरन बाद बूढ़ा और झोंपड़ी एक साथ गायब हो गए। खा-पी कर इनलिङ में शक्ति आ गई। वह बूढ़े द्वारा दिखाए गए रास्ते पर वानह्वा पर्वत की ओर चली। तीन दिन और रात के बाद आखिरकार वह वानह्वा पर्वत पर आ पहुंची। उसने देखा कि सचमुच वह एक सुन्दर पर्वत था जहां बहुत से अदृष्टपूर्व फूल और घास उग रहे थे। लेकिन उसका मन यह सब देखने में नहीं लगा। वह लगातार माल्येनश्येन खोजने की बात ही सोचती रही। थोड़ी देर खोजने के बाद उसे अचानक पर्वत की कमर पर कुछ माल्येनश्येन उगे हुए नजर आए। वह बेहद खुश हुई। शीघ्रतापूर्वक पर्वत की कमर की ओर चढ़ गई। वहां पहुंचकर उसने पाया कि वास्तव में माल्येनश्येन एक ऐसी युवती के फूल के टोकरे में लगे हुए थे जो अपने बालों पर दो लाल फूल लगा कर लाल स्कर्ट पहने हुई थी। इनलिङ को देखते ही युवती ने मुस्करा कर पूछा कि वह वहां किस काम से आई थी। उसने उसको अपने आने का कारण बताया। उस युवती ने उसे हाथ में जादुई बांसुरी लिए देख कर उससे अनुरोध किया कि वह उसके लिए एक बार बांसुरी बजाए। उसने युवती की मांग पूरी की। लेकिन बजाते ही कल्पनातीत बात यह हुई कि अपने बालों पर नीले फूल लगाए और काले स्कर्ट पहने तीस युवतियां, दो चोटी किए, बालों पर दो लाल फूल लगाए और नीले कमरबंद पहने चालीस बच्चे और वैसी ही चालीस बच्चियां उसके सामने आ धमकीं। उन्होंने चारों तरफ से घेर कर उससे अनुरोध किया कि वह उनके लिए भी एक बार बांसुरी बजाए। उसने थोड़ी देर सोचने के बाद बांसुरी उठा कर बजाना शुरू किया और उसके माध्यम से उन्हें अपने गांव के लोगों की दुखद आपबीती सुनाई। बांसुरी की शोकार्त्त ध्वनि ने उन्हें सहानुभूति के आंसू बहाने पर बाध्य कर दिया। उन्होंने तुरन्त ही एक टोकरे में माल्येनश्येन और अन्य जड़ी-बूटियां भर कर इनलिङ को दे दीं। फिर पहली युवती इनलिङ को एक कगार पर ले आई और एक दिशा की ओर इशारा कर उससे कहा कि वह उधर देखे। इनलिङ ने उसकी बताई दिशा की ओर देखा। उसने पाया कि गांव में रोगियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी और बहुत से रोगी मरणासन्न अवस्था में थे। रोने की आवाज सारे गांव में गूंज रही थी, और गांववासी यह आशा लगाए हुए थे कि वह माल्येनश्येन लेकर जल्दी से जल्दी गांव लौट आएगी। यह देखकर वह बहुत दु:खी और बेचैन हो उठी। उसकी इच्छा हुई कि वह पंख लगाकर एक ही सांस में उड़कर गांव लौट जाए। इस समय उस युवती ने उसके मन की थाह ले ली। उसने उससे आंखें बन्द करने को कहा और अपने मुंह से उसकी ओर फूंक मारी जिससे इनलिङ अपने गांव में उड़ कर पहुच गई।

इस तरह मेहनती और साहसी श्वेता और इनलिङ दोनों ने कठिनाइयों से न डर कर तीन महीनों के अंदर ही चीते का पित्तकोष और माल्येनश्येन खोज लिए, मरणासन्न गांववासियों को मौत के मुंह से बचा लिया और गांव को मुसीबत से छुड़ा लिया। सभी गांववासी उन दोनों के आभारी थे। उन्होंने उन दोनों को पति-पत्नी बना देने के लिए एक शानदार विवाह समारोह का आयोजन किया। तब से यहां के लोग फिर से सुखमय जीवन बिताने लग गए।

दास और नाग-कुमारी

—चीन की लोककथाएं

(भाग 8)

इस पुस्तक में चीन की आठ जातियों की 14 श्रेष्ठ लोककथाओं का संकलन किया गया है। इन कथाओं में हान जाति की "शतपक्षी पलंग", उइगुर जाति की "इल्ली के रूप में सांप", नाशी जाति की "जादुई कटोरा", याओ जाति की "सुनहरी लूशङ बांसुरी" और मंगोल जाति की "पाएरिन पहलवान" आदि हैं। ये कथाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पुस्तक में अनेक सुन्दर चित्र भी दिए गए हैं।

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

ISBN 7–119–01127–8

10–H–1719p